A Daily News Magazine
भोपाल
शुक्रवार, 20 मार्च, 2026

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 23, अंक 196, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

प्रसंगवश

सियासी जंग के आगाज में लोकतांत्रिक मूल्य फिर दांव पर

ललित गर्ग

भारत जैसे विशाल लोकतांत्रिक देश में चुनाव केवल सत्ता परिवर्तन की प्रक्रिया नहीं होते, बल्कि वे लोकतंत्र की परिपक्वता, जनविश्वास और राजनीतिक संस्कृति की परीक्षा भी होते हैं। जब किसी राज्य या क्षेत्र में चुनाव की घोषणा होती है तो स्वाभाविक रूप से राजनीतिक गतिविधियां तेज हो जाती हैं, आरोप-प्रत्यारोप का दौर चलता है और दल अपने-अपने एजेंडे को लेकर जनता के बीच पहुंचते हैं। किंतु इस पूरी प्रक्रिया के केंद्र में एक संस्था की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है-भारत का चुनाव आयोग। यही संस्था सुनिश्चित करती है कि चुनाव स्वतंत्र, निष्पक्ष और हिंसा-मुक्त वातावरण में संपन्न हों। इस बार असम, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और केरल जैसे चार बड़े राज्यों तथा केंद्रशासित प्रदेश पुडुचेरी में विधानसभा चुनावों की घोषणा के साथ ही देश की राजनीतिक सरगर्मियां तेज हो गई हैं। इन पांचों स्थानों की कुल 824 विधानसभा सीटों पर मतदान होना है और देश के 17.4 करोड मतदाताओं के मन एवं मानसिकता की जानकारी भी मिलेगी। पिछली बार की तुलना में इस बार मतदान कम चरणों में संपन्न कराया जा रहा है, जो प्रशासनिक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण परिवर्तन माना जा सकता है। असम, केरल और पुडुचेरी में जहां 9 अप्रैल को मतदान प्रस्तावित है, वहीं तमिलनाडु की सभी 234 सीटों पर 23 अप्रैल को मतदान होना है। दूसरी ओर पश्चिम बंगाल में चुनाव दो चरणों में आयोजित किए जा रहे हैं- पहले चरण में 23 अप्रैल को 152 सीटों पर और दूसरे चरण में 29 अप्रैल को 142 सीटों पर मतदान होगा। इन चुनावों की ओर पूरे देश की निगाहें लगी हुई हैं, क्योंकि इनके परिणाम केवल इन राज्यों की राजनीति ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय राजनीतिक परिदृश्य को भी प्रभावित कर सकते हैं।

इन चुनावों का महत्व केवल राजनीतिक सत्ता परिवर्तन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह देश के लोकतांत्रिक स्वास्थ्य की भी परीक्षा है। विशेष रूप से पश्चिम बंगाल में लंबे समय से राजनीतिक संघर्ष और टकराव की स्थिति देखने को मिलती रही है। वहां सत्तारूढ़ दल तृणमूल कांग्रेस और मुख्य विपक्षी दल भारतीय जनता पार्टी के बीच तीखी राजनीतिक प्रतिस्पर्धा है। इस प्रतिस्पर्धा के कारण कई बार चुनावी हिंसा और राजनीतिक तनाव की घटनाएं भी सामने आती रही हैं। इसलिए यह चुनाव केवल सत्ता की लड़ाई नहीं बल्कि यह भी एक कसौटी है कि क्या लोकतांत्रिक प्रक्रिया हिंसा और भय से मुक्त रहकर संपन्न हो सकती है। लोकतंत्र का मूल आधार यह है कि प्रत्येक मतदाता बिना किसी दबाव, भय या प्रलोभन के अपने मताधिकार का प्रयोग कर सके। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में इस आदर्श को बनाए रखना आसान नहीं है। चुनाव आयोग के सामने सबसे बड़ी चुनौती यही होती है कि चुनाव प्रक्रिया पूरी तरह निष्पक्ष और पारदर्शी बनी रहे। इसके लिए आयोग को सुरक्षा बलों की तैनाती, मतदान केंद्रों की व्यवस्था, इलेक्ट्रॉनिक मतदान मशीनों की सुरक्षा और मतदाता सूची की शुद्धता जैसे अनेक पहलुओं पर लगातार निगरानी रखनी पड़ती है। इसके अतिरिक्त राजनीतिक दलों और उनके कार्यकर्ताओं के आचरण पर भी नजर रखना जरूरी होता है ताकि चुनाव आचार संहिता का उल्लंघन न हो।

इन चुनावों के संदर्भ में पश्चिम बंगाल विशेष चर्चा का विषय बना हुआ है। लंबे समय से वहां राजनीतिक हिंसा और टकराव की घटनाएं सामने आती रही हैं। कई विश्लेषकों का मानना है कि इस बार वहां सत्ता परिवर्तन की संभावना के कारण राजनीतिक संघर्ष और तीखा हो सकता है। सत्तारूढ़ नेतृत्व का प्रतिनिधित्व करने वाली ममता बनर्जी की सरकार के सामने सत्ता बनाए रखने की चुनौती है, वहीं विपक्ष अपनी पकड़ मजबूत करने की कोशिश कर रहा है। इस परिस्थिति में चुनाव आयोग की जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है कि वह मतदान प्रक्रिया को निष्पक्ष और शांतिपूर्ण बनाए रखे। दूसरी ओर केरल और तमिलनाडु की राजनीति भी अपने विशिष्ट स्वरूप के कारण चर्चा में रहती है। केरल में आमतौर पर सत्ता दो प्रमुख राजनीतिक मोर्चों के बीच बदलती रही है, जबकि तमिलनाडु की राजनीति क्षेत्रीय दलों के प्रभाव के लिए जानी जाती है। इन राज्यों में चुनावी प्रतिस्पर्धा तीव्र होती है, किंतु अपेक्षाकृत शांतिपूर्ण वातावरण में मतदान की परंपरा भी देखने को मिलती है। असम की स्थिति भी अलग है, जहां पूर्वोत्तर भारत की राजनीति के संदर्भ में चुनाव के परिणाम महत्वपूर्ण माने जाते हैं। यदि वहां सत्तारूढ़ दल फिर से सत्ता में लौटता है तो यह क्षेत्रीय राजनीति के लिए एक महत्वपूर्ण संकेत माना जाएगा।

हालांकि इन सभी चुनावों के संदर्भ में एक प्रश्न लगातार उठता है कि क्या राजनीतिक दल लोकतंत्र की मर्यादाओं का पालन करने के लिए पर्याप्त गंभीर हैं। चुनावी राजनीति में प्रतिस्पर्धा स्वाभाविक है, किंतु जब यह प्रतिस्पर्धा हिंसा, घृणा और असहिष्णुता में बदल जाती है तो लोकतंत्र की मूल भावना को चोट पहुंचती है। दुर्भाग्य से कई बार राजनीतिक दल चुनाव जीतने की होड़ में लोकतांत्रिक शालीनता को नजरअंदाज कर देते हैं। आरोप-प्रत्यारोप, व्यक्तिगत हमले और हिंसक घटनाएं इस प्रवृत्ति के उदाहरण हैं। इस स्थिति में यह केवल चुनाव आयोग की जिम्मेदारी नहीं रह जाती कि वह चुनाव को निष्पक्ष बनाए। राजनीतिक दलों और उनके नेताओं की भी उतनी ही जिम्मेदारी है कि वे लोकतंत्र की गरिमा को बनाए रखें। यदि दल स्वयं ही आचार संहिता का सम्मान करें और अपने कार्यकर्ताओं को संयमित आचरण के लिए प्रेरित करें तो चुनावी प्रक्रिया कहीं अधिक स्वस्थ और सकारात्मक बन सकती है। लोकतंत्र की सफलता केवल संस्थाओं पर निर्भर नहीं करती, बल्कि राजनीतिक संस्कृति और सामाजिक चेतना पर भी निर्भर करती है।

इसके साथ ही मतदाताओं की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। लोकतंत्र में अंतिम निर्णय जनता के हाथ में होता है। यदि मतदाता जागरूक और सजग हों तो वे ऐसे नेताओं और दलों को प्रोत्साहित करेंगे जो लोकतांत्रिक मूल्यों का सम्मान करते हैं। मतदाताओं को यह समझना होगा कि उनका वोट केवल एक राजनीतिक विकल्प नहीं बल्कि लोकतांत्रिक व्यवस्था की दिशा तय करने वाला निर्णय भी है। इन पांच क्षेत्रों में होने वाले चुनाव इसलिए भी महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे यह संदेश देंगे कि भारत का लोकतंत्र किस दिशा मं आगे बढ़ रहा है। यदि ये चुनाव शांतिपूर्ण, निष्पक्ष और पारदर्शी तरीके से संपन्न होते हैं तो यह न केवल देश के लिए बल्कि दुनिया के लिए भी एक सकारात्मक उदाहरण होगा। प्रश्न यह है कि क्या हम इन चुनावों के माध्यम से एक ऐसा आदर्श प्रस्तुत कर पाएंगे, जिसमें लोकतंत्र केवल मतपेटियों तक सीमित न रहकर शालीनता, सहिष्णुता और जनविश्वास की भावना को भी मजबूत करे। यही वह कसौटी है जिस पर इन चुनावों की सफलता या असफलता का वास्तविक मूल्यांकन किया जाएगा।

(प्रभासाक्षी डॉट कॉम पर प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने रामलला के दर्शन किए

- राम जन्मभूमि पर कदम रखना सौभाग्य की बात
- तमिलनाडु से लाए श्रीराम यंत्र का पूजन कर स्थापना की, मंदिर परिसर देखा

अयोध्या (एजेंसी)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू नवरात्रि के पहले दिन अयोध्या के राम मंदिर पहुंची हैं। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने रामलला के दर्शन किए और आरती उतारी। दूसरे फ्लोर पर बने राम दरबार में श्रीराम यंत्र की स्थापना की। उन्होंने राम मंदिर परिसर को भी देखा।

सीएम योगी ने राष्ट्रपति को मंदिर निर्माण से जुड़े कार्यों की जानकारी दी। राष्ट्रपति करीब साढ़े 10 बजे दिल्ली से अयोध्या एयरपोर्ट पहुंचीं। यहां राज्यपाल आनंदीबेन पटेल और सीएम ने उनका स्वागत किया।

रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा के बाद राष्ट्रपति का यह दूसरा अयोध्या दौरा है। राष्ट्रपति ने राम मंदिर परिसर को देखा। सीएम योगी ने उन्हें मंदिर निर्माण के बारे में जानकारी दी। राम यंत्र को कांचीपुरम (तमिलनाडु) स्थित मठ में तैयार किया गया। राष्ट्रपति ने कहा- अयोध्या में प्रभु श्रीराम ने जन्म लिया था। इस पवित्र भूमि पर कदम रखना मेरे लिए सौभाग्य की बात है।

राज्यपाल बोलीं-

अयोध्या आस्था, संस्कार और विरासत की भूमि– राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने कहा कि अयोध्या आस्था, संस्कार और विरासत की भूमि है। आज का दिन देशवासियों के लिए हमेशा यादगार रहेगा। नवरात्रि के पहले दिन राम मंदिर में श्रीराम यंत्र की स्थापना हो रही है। इस पावन कार्यक्रम का हिस्सा बनना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। उन्होंने कहा कि आज अयोध्या वैश्विक चेतना का केंद्र बन चुकी है।

सीएम योगी बोले-

देश में आज राम राज्य– योगी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा– देश में आज राम राज्य है। दुनिया के तमाम देशों में आज उथल–पुथल मची हुई है। युद्ध चल रहा है। जबकि भारत में शांति है। हम यहां शान्तिपूर्वक श्रीराम यंत्र की स्थापना कर रहे हैं। ये नया और बदलता हुआ भारत है। उन्होंने कहा– लोग पहले कहते थे ये दिगभ्रमित भारत है, लेकिन ऐसा नहीं है। भारत आज दुनिया के तमाम देशों को दिशा दिखाने का काम कर रहा है। आज लोग नया साल मनाने के लिए बाहर कम मंदिरों में अधिक जाते हैं। राम मंदिर निर्माण में जिन राम भक्तों ने अपनी आहुति दी है।

द्वितीय ब्रह्मचारिणी

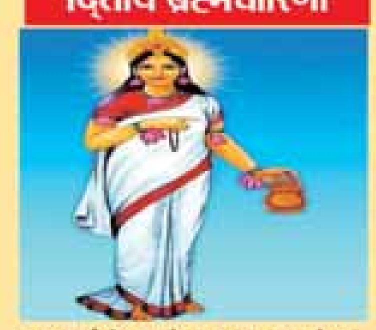

नव दुर्गा के दूसरे रूप का नाम है मां ब्रह्मचारिणी। ब्रह्मचारिणी का अर्थ है वह जो असीम, अनन्त में विद्यमान, गतिमान है। एक ऊर्जा जो न तो जड़ न ही निष्क्रिय है, किन्तु वह जो अनन्त में विचरण करती है। यह बात समझना अति महत्वपूर्ण है – एक गतिमान होना, दूसरा विद्यमान होना।

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

शरद की सुबह

अगर तुम
कुछ कह रहे हो
तो तुम्हारी आंखें बोलना चाहिए

अगर तुम
कुछ सुन रहे हो
तो तुम्हारा दिल धड़कना चाहिए

अगर तुम
कुछ कर रहे हो
तो तुम्हारा पूरा जिस्म
थिरकना चाहिए

अगर तुम
तुम ही हो
तो
तुमको वैसा ही होना चाहिए
जैसे तुम हो।

– राग तेलंग

शेयर बाजार में मचा हाहाकार

22 महीने की सबसे बड़ी गिरावट, सेंसेक्स 2497 अंक गिरकर 74,207 पर आया

मुंबई (एजेंसी)। शेयर बाजार में गुरुवार 19 मार्च को 22 महीने की सबसे बड़ी गिरावट रही। सेंसेक्स 2497 अंक (3.26 प्रतिशत) गिरकर 74,207 पर बंद हुआ। वहीं निफ्टी में भी 776 अंक (3.26 प्रतिशत) की गिरावट रही, यह 23,002 से नीचे आ गया है। इससे पहले 4 जून 2024 को सेंसेक्स 5.74 प्रतिशत गिरा था।बैंकिंग-ऑटो शेयर्स में गुरुवार को सबसे ज्यादा गिरावट देखी गई थी जियोपॉलिटिकल तनाव और जंग जैसी स्थिति में महंगाई बढ़ने का खतरा रहता है। इससे कंपनियों का मुनाफा कम हो सकता है। ऐसे में निवेशक उनके शेयर बेचना शुरू कर देते हैं और इसे सुरक्षित जगह निवेश करते हैं। इससे बाजार में गिरावट आती है।* अमेरिका-इजराइल और ईरान युद्ध से सप्लाई चेन बिगड़ गई है।

सृष्टि के आरंभ की अमृत बेला का पर्व है नव संवत्सर

विक्रमादित्य ने सुशासन के प्रतिमान स्थापित किए, 2 हजार साल बाद भी उनके आदर्श प्रासंगिक : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि आज गुड़ी पड़वा है। संपूर्ण सृष्टि में गुड़ जैसी मिठास फैल गई है। ऐसा इसलिए, क्योंकि हमारी भारतीय संस्कृति में आज से नव संवत्सर एवं नववर्ष का प्रारंभ हो गया है। उन्होंने कहा कि नव संवत्सर सृष्टि के आरंभ दिवस की अमृत बेला को हर्षोल्लास के साथ मनाया जाने वाला पर्व है। आज से एक नए संवत् और भारतीय नववर्ष का प्रारंभ हो गया है। हमारे यहां संवत् सृष्टि के साथ, प्रकृति के सानिध्य में और शासक के पुरुषार्थ से प्रारंभ होता है। सम्राट विक्रमादित्य ने शकों को परास्त किया। तत्कालीन समाज के अराजक तत्वों और आतताईयों का दमन किया। उन्होंने अपनी संपूर्ण प्रजा को कर्जमुक्त बनाया। सच्चे अर्थों में सामाजिक सद्भाव की नींव रखी। वे लोकतंत्र के महानायक थे। उनके पुरुषार्थ से ही प्रारंभ किया गया विक्रम संवत् आज 2083 वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी

सरकार ने सम्राट विक्रमादित्य के ओजस्वी शासन उनके शौर्य, साहस, पराक्रम एवं न्याय के प्रतिमानों को आत्मसात करते हुए उनके आदर्शों पर चलने का प्रयास किया। हम समाज के हर वर्ग के चहुंमुखी विकास के लिए प्रयासरत हैं। हमने वीर विक्रमादित्य शोधपीठ सहित वैदिक घड़ी की भी स्थापना की है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव गुरुवार को रवीन्द्र भवन में आयोजित विक्रमोत्सव-2026 के अंतर्गत कोटि सूर्य उपासना कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने प्रदेश के सभी नागरिकों को सृष्टि के आरंभ दिवस, गुड़ी पड़वा, चेटी चंड, नववर्ष विक्रम संवत् 2083 के आरंभ, घट स्थापना, नवरात्रि आरंभ, ज्योर्तिविज्ञान दिवस, नवरेह सहित आज देशभर में मनाये जा रहे सभी पर्वों की बधाई और मंगलकामनाएं दीं। मुख्यमंत्री ने दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

इस दौरान मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने ब्रम्ह ध्वज की स्थापना कर कहा कि यह ध्वज हमें सदैव एकजुट रहकर देश-प्रदेश की सेवा करने की प्रेरणा देता है। विक्रमोत्सव-2026 के आयोजन में निहित भावों और इसकी रूपरेखा पर प्रकाश डालते हुए मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सम्राट विक्रमादित्य ने अपनी शासन व्यवस्था से राज व्यवस्था को लोकतांत्रिक व्यवस्था में बदलने का सूत्रपात्र किया। उनका नेतृत्व और राज-काज शैली ऐसी थी, जिसमें बाद के शासकों को जनकल्याणकारी शासन व्यवस्था के लिए प्रेरित किया। आज यदि दो हजार साल बाद भी सम्राट विक्रमादित्य को याद कर रहे हैं, तो इसके पीछे यह भाव परिलक्षित होता है कि भारत राष्ट्र की सरकार और राज्य सरकारें, वीर विक्रमादित्य की शासन व्यवस्था को अंगीकृत करना चाहती हैं।

सिर्फ शॉर्ट सर्किट ही नहीं इस हादसे के और भी कई कारण सामने आए

इंदौर अग्निकांडः 15 गैस सिलेंडर, डिजिटल लॉक, घर में रखा केमिकल और जंगले

इंदौर। ग्रेटर ब्रजेश्वरी एनएक्स इलाके में बुधवार तड़के हुए भीषण अग्निकांड में 8 लोगों की मौत हो गई। इस घटना के बाद जब एसडीआरएफ और फायर ब्रिगेड घर के अंदर पहुंची, तो वहां का मंजर बेहद भयावह था। जांच के दौरान घर के अलग-अलग कमरों में करीब 15 कमर्शियल गैस सिलेंडर मिले, जिनमें से 3 में ब्लास्ट हुआ था।

पुलिस इस बात की जांच कर रही है कि एक साथ इतने कमर्शियल सिलेंडर घर में कैसे पहुंचे, जबकि फिलहाल सरकार ने इनकी बिक्री पर रोक लगा रखी है। इसके अलावा घर में ज्वलनशील पदार्थ होने की भी जानकारी मिली। जिस घर में आग लगी उसमें आग भड़कने के कई कारण मौजूद होने की जानकारी सामने आई।

ईवी चार्जिंग से शॉर्ट सर्किट

इलेक्ट्रिक कार की चार्जिंग इस घटना की सबसे बड़ी वजह समझा जा रहा है। शुरुआती जांच में सामने आया कि देर रात चार्जिंग पॉइंट से शॉर्ट सर्किट हुआ, जिसने कार के इलेक्ट्रिकल सिस्टम को जला दिया।

ईवी बैटरियों में आग लगने पर उसे काबू करना बेहद मुश्किल होता है। इसी दौरान बैटरी में ब्लास्ट हुआ और आग ने विकराल रूप ले लिया। तार से आग का स्पार्क बिजली के खंभे तक पहुंचा और आग भड़क गई। कार घर के मुख्य दरवाजे के पास खड़ी थी, जिससे लपटें सीधे दीवारों और ऊपरी मंजिलों तक पहुंच गईं। कुछ ही मिनटों में पूरा मकान जल गया।

गैस सिलेंडर में ब्लास्ट

जब शॉर्ट सर्किट की आग की तीव्रता बढ़ी तो वहां और घर की रसोई में रखे गैस सिलेंडर आग की चपेट में आ गए। सिलेंडरों में मौजूद गैस फैलने लगी और दबाव बढ़ते ही एक के बाद एक सिलेंडर फटने लगे। दर्जन भर से ज्यादा सिलेंडर में से तीन सिलेंडर फटे। धमाके इतने जोरदार थे कि आसपास के इलाके में दहशत फैल गई और पड़ोस के मकान का एक हिस्सा तक टूट गया। सिलेंडर फटने के साथ एसी और फ्रिज के कंप्रेसर भी फटे, जिससे आग और भड़क उठी। इस वजह से बचाव का काम मुश्किल हो गया और अंदर फंसे लोगों के पास बाहर निकलने का कोई मौका नहीं मिला। अब ये अलग सवाल है कि इतने कमर्शियल सिलेंडर एक घर में कैसे जमा थे!

गैस के केमिकल से आग भड़की

पहले शॉर्ट सर्किट फिर गैस सिलेंडर फटने से भड़की आग के बाद घर में मौजूद पॉलिमर और अन्य ज्वलनशील पदार्थों ने इस आग को बड़ा हादसा बना दिया। बताया गया कि घर में कुछ ऐसे केमिकल या ज्वलनशील पदार्थ भी मौजूद थे, जिनसे आग को और तेजी से फैलने में मदद मिली। जब गैस हवा में फैलती है और उसे आग मिलती है, तो वह विस्फोटक स्थिति पैदा कर देती है। कुछ देर में आग तीनों मंजिलों तक फैल गई। घर में मौजूद सामान जलने लगा और धुएं ने पूरे घर को भर दिया, जिससे दम घुटने की स्थिति भी पैदा हो गई।

चारों तरफ जाली का जंजाल

परिवार के पास बचने का मौका होते हुए भी वे बाहर नहीं आ सके। घर में इलेक्ट्रॉनिक लॉक ने बिजली सप्लाई बंद होते ही काम करना बंद कर गए। इसके अलावा, घर में चारों तरफ लगी लोहे की जालियां भी बाहर निकलने में अड़चन बन गईं। फायर ब्रिगेड को घर में अंदर पाइप ले जाने में भी इसलिए मुश्किल आई कि जाली बेहद बारीक थी। छत से निकलकर आसपास की छतों पर कूदने के रास्ते भी बंद थे। आग, धुएं और लगातार हो रहे धमाकों के बीच परिवार अंदर ही फंस गया। बचाव दल को दरवाजे और ग्रिल काटकर अंदर पहुंचना पड़ा, लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी। हादसे के वक्त पूरा परिवार नींद में था। आग लगने के बाद जान बचाने के लिए सभी लोग छत की ओर भागे, लेकिन दरवाजा अंदर से लॉक था।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 20 °c
न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शुक्रवार, 20 मार्च 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

चैत्र नवरात्र उत्सव शुरु- देवी मंदिरों में उमड़ पड़ी भीड़

● पीएम मोदी ने हिंदू नव वर्ष पर 9 तरह से शुभकामनाएं पोस्ट कीं

नईदिल्ली/मुंबई (एजेंसी)। देशभर में नवरात्रि का उत्सव मनाया जा रहा है। जम्मू-कश्मीर के कटरा में बारिश के बीच भक्त दर्शन करने पहुंचे। वहीं यूपी में भी बड़े मंदिरों में भीड़ नजर आ रही थी। उधर देश के कई राज्य समेत महाराष्ट्र में भी गुड़ी पड़वा उत्सव धूमधाम से मनाया गया। नागपुर में सीएम देवेंद्र फडणवीस भी हिंदू नव वर्ष के कार्यक्रम में शामिल हुए। उधर पीएम ने देशवासियों को नवरात्रि और नव वर्ष पर 9 अलग-अलग तरह से पोस्ट कर बधाई दी।

वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट में इजराइल दुनिया का 8वां सबसे खुशहाल देश

पाकिस्तान की रैंकिंग भारत से ऊपर

यूएन (एजेंसी)। संयुक्त राष्ट्र ने बुधवार को वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट 2026 जारी की है। इसमें लगातार 9वीं बार फिनलैंड को दुनिया का सबसे खुशहाल देश बताया गया है। 147 देशों की सूची में पाकिस्तान 104वें नंबर पर है। वहीं भारत 116वें

स्थान पर है। 2025 में भारत की रैंकिंग 118वीं थी। वहीं ढाई साल से जंग में फंसा इजराइल दुनिया का 8वां सबसे खुशहाल देश बताया गया है। लिस्ट में सबसे नीचे संघर्ष वाले देश हैं। अफगानिस्तान फिर से सबसे कम खुशहाल देश रहा, उसके ऊपर सिएरा लियोन और मलावी हैं। इस बार भी कोई भी अंग्रेजी बोलने वाला देश टॉप 10 में नहीं है। अमेरिका 23वें, कनाडा 25वें और ब्रिटेन 29वें स्थान पर हैं।

वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट के टॉप 10 देश

● फिनलैंड ● आइसलैंड ● डेनमार्क ● कोस्टा रिका ● स्वीडन ● नॉर्वे ● नीदरलैंड ● इजराइल ● लक्जमबर्ग ● स्विट्जरलैंड

अमेरिकी विदेश-रक्षा मंत्री के घर के ऊपर संदिग्ध ड्रोन दिखे

● सिक्योरिटी को लेकर इमरजेंसी मीटिंग बुलाई गई

वॉशिंगटन (एजेंसी)। वॉशिंगटन में अमेरिकी सेना के एक अहम बेस के ऊपर संदिग्ध ड्रोन देखे गए हैं। वॉशिंगटन पोस्ट के मुताबिक विदेश मंत्री मार्को रुबियो और रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ सैन्य बेस फोर्ट लेसली

मैकनेयर के अंदर रह रहे हैं। पिछले 10 दिनों में एक रात के दौरान फोर्ट लेसली मैकनेयर के ऊपर कई ड्रोन देखे गए, जिसके बाद सुरक्षा बढ़ा दी गई और व्हाइट हाउस में इस मुद्दे पर इमरजेंसी बैठक भी हुई।

ओडिशा में गोल्ड के बाद मिला डायमंड का भंडार

● माझी सरकार ने किया खोज का दावा ● कालाहांडी में माणिक, देवगढ़ में तांबा, सोना भी मिला

भुवनेश्वर (एजेंसी)। ओडिशा की समृद्ध खनिज संपदा को उजागर करने वाली एक महत्वपूर्ण जानकारी सामने आई है। राज्य सरकार ने बताया है कि नुआपड़ा जिले में हीरा युक्त पत्थरों की खोज हुई है। यह जानकारी गुरुवार को राज्य विधानसभा में खनन मंत्री बिभूति भूषण जेना ने दी। मंत्री ने बताया कि खजाने से भरी ओडिशा की धरती के नीचे हीरे मौजूद हैं और नुआपड़ा जिले के कलामिदादर क्षेत्र में हीरा युक्त पत्थरों की पहचान की गई है। मंत्री के अनुसार, इस क्षेत्र में खनन कार्य संभव है या नहीं, यह तय करने के लिए तकनीकी, आर्थिक और अन्य व्यवहार्यता से जुड़े विस्तृत अध्ययन किए जा रहे हैं।

कीमती रत्न मिलने के संकेत- इसके अलावा कालाहांडी जिले से भी कीमती रत्न मिलने के संकेत मिले हैं। जूनागढ़ ब्लॉक के हिंजिलीबहाल-जिलिंगिबार क्षेत्र में माणिक (रूबी) के अंश पाए जाने की जानकारी मिली है, जिससे यहां उच्च मूल्य वाले खनिज संसाधनों की मौजूदगी का संकेत मिलता है। इसी तरह देवगढ़ जिले के रीमल क्षेत्र में कई प्रकार के खनिज संसाधन पाए गए हैं, जिनमें तांबा युक्त पत्थर, ग्रेफाइट, निकेल और सोने के भंडार शामिल हैं।इन खोजों से यह संकेत मिलता है कि ओडिशा में विविध खनिज संपदा मौजूद है, जो राज्य में औद्योगिक और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा दे सकती है। इसके अलावा मयूरभंज और केंदुझर जिलों में भी सोना युक्त पत्थरों की पहचान होने की जानकारी दी गई है, जिससे ओडिशा के खनिज समृद्ध राज्य होने की पुष्टि और मजबूत होती है। राज्य सरकार इन सभी खोजों का विस्तृत अध्ययन कर रही है, ताकि इनके व्यावसायिक उपयोग की संभावना का आकलन किया जा सके। यदि ये संसाधन व्यावहारिक रूप से उपयोगी पाए जाते हैं, तो ओडिशा में खनन, निवेश और रोजगार के नए अवसर खुल सकते हैं।

नोरा-संजय के विवादित गाने पर महिला आयोग का एक्शन

● कहा- दोनों 24 मार्च तक पेश हों, नहीं तो कानूनी कार्रवाई हो सकती है

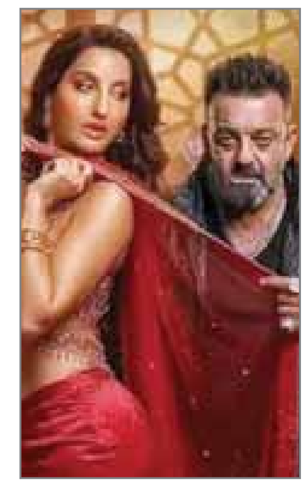

मुंबई (एजेंसी)। राष्ट्रीय महिला आयोग ने विवादित गाने 'सरके चुनर तेरी सरके' को लेकर एक्ट्रेस नोरा फतेही और एक्टर संजय दत्त को नोटिस भेजा है। साथ ही गाने के गीतकार रकीब आलम, वेंकट के. नारायण (प्रोड्यूसर, केवीएन ग्रुप) और किरण कुमार (डायरेक्टर) समेत अन्य संबंधित लोगों को भी नोटिस जारी किया गया है। सभी को 24 मार्च को आयोग के सामने पेश होने के लिए कहा गया है। एनसीडब्ल्यू ने चेतावनी दी है कि तय तारीख पर उपस्थित न होने पर कानूनी कार्रवाई की जा सकती है।

देश के कई हिस्सों में मौसम ने अचानक करवट ली

● राजस्थान में लगातार दूसरे दिन ओले गिरे, हरियाणा में बारिश से सड़कें डूबीं

उत्तराखंड के केदारनाथ, गंगोत्री धाम में बर्फबारी

जयपुर/लखनऊ/शिमला/देहरादून/भोपाल (एजेंसी)। देश के कई हिस्सों में मौसम ने अचानक करवट ली है। राजस्थान के सीकर में लगातार दूसरे दिन तेज बरसात के साथ ओले गिरे हैं। आंधी-बारिश के कारण हुए हादसे में जैसलमेर में दो भाइयों की मौत हो गई।

मध्य प्रदेश में भोपाल, इंदौर-ग्वालियर समेत 33 जिलों में आंधी-बारिश और 3 जिलों में ओले गिरने का अलर्ट है। मौसम विभाग ने अगले 3 दिन प्रदेश के अलग-अलग हिस्सों में 30 से 50 किलोमीटर प्रति घंटे तक की रफ्तार से आंधी चलने का अनुमान जताया है।

उधर हरियाणा के रेवाड़ी में रात में हुई तेज बारिश के साथ ओले गिरे। सड़कों पर पानी भर गया। आंधी के चलते सड़कों पर लगे होर्डिंग भी उखड़ गए।

उत्तराखंड के उत्तरकाशी, चमोली, रुद्रप्रयाग और पिथौरागढ़ के ऊंचाई वाले इलाकों में बर्फबारी हुई।

नगालैंड में तूफान-बारिश से तबाही, 46 परिवार प्रभावित- नगालैंड में तेज तूफान और बारिश से 46 परिवार प्रभावित हुए हैं। चुमौकेडिमा और पेरेन जिलों में कई घरों और बिजली के खंभों को नुकसान पहुंचा है।

अगले दो दिन मौसम ऐसा ही रहेगा

20-21 मार्च- मौसम विभाग ने दिल्ली में यलो अलर्ट जारी करते हुए हल्की बारिश और तेज हवाएं चलने का अनुमान जताया है। राजस्थान में ओले गिरने का अलर्ट है। हिमाचल प्रदेश में ऑरेंज अलर्ट जारी कर भारी बर्फबारी की चेतावनी दी गई है। तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश में आंधी का अलर्ट है। नॉर्थ-ईस्ट में भी तेज बारिश की आशंका है।

सीएम नीतीश की समृद्धि यात्रा

● कार्यक्रम में आलू-प्याज की लूट, कर्मचारी नींबू लेकर भागे; लिखा था, सीएम के जाते ही टूट पड़े लोग

मुंगेर/लखीसराय (एजेंसी)। नीतीश कुमार समृद्धि यात्रा के चौथे चरण में गुरुवार को मुंगेर और लखीसराय पहुंचे। मुंगेर में उनकी यात्रा खत्म होते ही आलू, प्याज, नींबू, बैंगन समेत अन्य सब्जियों की लूट शुरू हो गई।नीतीश के स्वागत में सब्जियों से समृद्धि यात्रा लिखा गया था। जैसे ही नीतीश कुमार सभा खत्म करके निकले, लोग सब्जियों पर टूट पड़े। बकायदा झोले में वो सब्जियां भरकर ले गए। अधिकारी लोगों को समझाते रहे, लेकिन किसी ने नहीं सुनी। कोई नींबू तो कोई प्याज और आलू झोले में भरता दिखा।

ईरान ने सऊदी में ऑयल रिफाइनरी पर किया हमला

● यूएई-कतर के तेल-गैस प्लांट पर भी ड्रोन अटैक, ईरान सब्र का इम्तिहान न ले

तेल अवीव/तेहरान (एजेंसी)। अमेरिका-इजराइल और ईरान जंग का गुरुवार को 20वां दिन था। सऊदी अरब के यनबू पोर्ट पर स्थित सैमरेफ ऑयल रिफाइनरी पर हवाई हमला हुआ है। होर्मुज स्ट्रेट बंद होने की वजह से अब ज्यादातर तेल यनबू पोर्ट से भेजा जा रहा है। इसके अलावा यूएई और कतर के तेल-गैस प्लांट पर भी ड्रोन हमले हुए हैं। ईरान ने हाल ही में सऊदी अरब, यूएई और कतर के तेल ठिकानों को खाली करने की वॉर्निंग दी थी। सऊदी ने आज ईरान को कड़ी चेतावनी दी है। सऊदी के विदेश मंत्री फैसल बिन फरहान अल सऊद ने कहा किहमारे सब्र का इम्तिहान न लें।

इजरायल ने ईरान के साउथ पार्स गैस फील्ड पर हमला किया, वैश्विक तेल-गैस बाजार में मचेगा हाहाकार

पश्चिम एशिया में तेजी से बिगड़ते हालात के बीच गुरुवार देर रात इजरायल द्वारा ईरान के साउथ पार्स गैस फील्ड पर किया गया हमला केवल एक सैन्य कार्रवाई नहीं, बल्कि वैश्विक ऊर्जा भू-राजनीति में बड़ा झटका माना जा रहा है। दुनिया के सबसे बड़े प्राकृतिक गैस भंडार साउथ पार्स पर हमले के बाद जहां ईरान की ऊर्जा क्षमता प्रभावित हुई है, वहीं इसका सीधा असर वैश्विक तेल-गैस बाजार और भारत जैसी आयात-निर्भर अर्थव्यवस्थाओं पर भी पड़ना तय है।

00

पश्चिम एशिया में बिगड़े हालात को लेकर पीएम मोदी ने फ्रांस के राष्ट्रपति मैक्रों से की चर्चा

नई दिल्ली (एजेंसी)। पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों से फोन पर बातचीत की है। इस बातचीत को लेकर पीएम मोदी ने खुद अपने एक्स हैंडल पर इसकी जानकारी दी है। पीएम मोदी ने इससे पहले मलेशिया के प्रधानमंत्री से भी बात की। इस दौरान भी उन्होंने पश्चिम एशिया में संकट पर चर्चा की। पीएम मोदी ने लिखा मैंने अपने प्रिय मित्र, राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों से पश्चिम एशिया की स्थिति और तनाव कम करने की तत्काल आवश्यकता के साथ-साथ संवाद और कूटनीति की ओर लौटने के बारे में बात की। हम इस क्षेत्र और उससे परे शांति और स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए अपने घनिष्ठ समन्वय को जारी रखने के लिए तत्पर हैं।

पीएम मोदी ने मलेशिया के प्रधानमंत्री से भी की बात- इससे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मलेशिया के प्रधानमंत्री अनवर इब्राहिम से बात की। उन्होंने इसकी जानकारी भी अपने एक्स हैंडल पर दी। पीएम मोदी ने लिखा मैंने अपने मित्र, मलेशिया के प्रधानमंत्री अनवर इब्राहिम से बात की और आगामी ईद-उल-फितर के अवसर पर उन्हें और मलेशिया की जनता को हार्दिक शुभकामनाएं दीं।

बीजेपी ने पश्चिम बंगाल में जारी की दूसरी लिस्ट

● 111 कैंडिडेट का ऐलान, रुपा गांगुली-सुवेंदु के भाई को टिकट

असम में पहली लिस्ट जारी, सीएम हिमंता 7वीं बार जालुकबारी से लड़ेंगे

कोलकाता (एजेंसी)। बीजेपी ने पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनावों के लिए कैंडिडेट की दूसरी लिस्ट जारी की है। पार्टी ने इसमें कुल 111 कैंडिडेट घोषित किए हैं। बीजेपी ने नोआपाड़ा से चुनाव लड़ेंगे पूर्व सांसद अर्जुन सिंह और सोनारपुर दक्षिण से पूर्व राज्यसभा सांसद रूपा गांगुली को उम्मीदवार बनाया है। बीजेपी ने राज्य विधनसभा में नेता विपक्ष सुवेंदु अधिकारी के छोटे भाई को भी टिकट दिया है। बीजेपी ने हिंगलगज से रेखा पात्रा उम्मीदवार बनाया है। इतना ही नहीं चोपड़ा से शंकर अधिकारी और टॉलीगंज से पापिया अधिकारी को कैंडिडेट बनाया है। बंगाल में दो

चरणों में चुनाव होंगे। चुनाव आयोग ने वोटिंग के लिए 23 और 29 अप्रैल की तारीखें निश्चित की हैं। बंगाल के नतीजे 4 मई को आएंगे।

असम में सीएम हिमंता बिस्व सरमा सहित 88 नामों की घोषणा

इसके पहले सुबह असम विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा ने अपने कैंडिडेट्स की पहली लिस्ट जारी की। इसमें सीएम हिमंता बिस्व सरमा सहित 88 नाम हैं। हिमंता अपनी परंपरागत सीट जालुकबारी से चुनाव लड़ेंगे।

● **पूर्व केंद्रीय मंत्री को भी टिकट-** बीजेपी ने मठभंगा से पूर्व केंद्रीय मंत्री निशिथ प्रमाणिक और एंटाली से प्रियंका टिबरेवाल को मैदान में उतारा गया है। प्रियंका टिबरेवाल 2021 में कोलकाता के भबानीपुर उपचुनाव में ममता बनर्जी के खिलाफ उम्मीदवार थीं। बीजेपी ने दार्जीलिंग से नोमन राय को मैदान में उतारा है। खरग्राम से मिताली मल, भरतपुर सीट से अनामिका घोष को उम्मीदवार बनाया है। अभी यहां से टीएमसी से निष्कासित हुमायूं कबीर विधायक हैं। सुवेंदु अधिकारी के छोटे भाई दिब्येंदु अधिकारी को बीजेपी ने एगरा से लड़ाया है। पार्टी ने मुरारई से रिंकी घोष को उतारा है।

रांची नगर-निगम- जेएमएम-कांग्रेस को झटका

● भाजपा समर्थित नीरज कुमार बने डिप्टी मेयर, मेयर रोशनी ने शपथ ली

रांची (एजेंसी)। रांची नगर निगम में डिप्टी मेयर पद के चुनाव में भाजपा समर्थित वार्ड 31 के पार्षद नीरज कुमार ने जीत हासिल कर ली है। उन्हें कुल 38 वोट मिले, जबकि दूसरे उम्मीदवार वार्ड 44 के पार्षद परमजीत सिंह को मात्र 15 वोटों से संतोष करना पड़ा। इससे पहले मेयर रोशनी खलखो और वार्ड पार्षदों को शपथ दिलाई गई। इस जीत के साथ पहली बार पार्षद का चुनाव जीतने के बाद नीरज कुमार सीधे डिप्टी मेयर पद तक पहुंच गए, जो उनके लिए बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है। चुनाव परिणाम घोषित होते ही समर्थकों में खुशी की लहर दौड़ गई और नीरज कुमार को बधाई देने वालों का तांता लग गया। वहीं दूसरे खेमे में निराशा देखी गई। चुनाव प्रक्रिया शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुई और सभी पार्षदों ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। बीजेपी समर्थित नीरज कुमार के डिप्टी मेयर बनने से कांग्रेस-जेएमएम समर्थकों को तगड़ा झटका लगा है। चुनाव परिणाम से बीजेपी समर्थकों में खुशी है।

शशि थरूर के बाद कांग्रेस के स्टैंड को एक और झटका

पश्चिम एशिया पर मनीष तिवारी भी मोदी सरकार के साथ

नई दिल्ली (एजेंसी)। पश्चिम एशिया में जारी संकट को लेकर केंद्र के रुख पर मोदी सरकार को कांग्रेस के दो बड़े नेताओं का समर्थन मिला है। कांग्रेस सांसद शशि थरूर के बाद पार्टी के एक और सांसद और पूर्व केंद्रीय मंत्री मनीष तिवारी ने भी ईरान और अमेरिका-इजरायल युद्ध में मोदी सरकार स्टैंड को सही बताया है। बता दें कि कांग्रेस पार्टी का शीर्ष नेतृत्व ईरान पर अमेरिका और इजरायल के हमले के शुरू से केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार के स्टैंड पर आपत्ति जता रहा है। खासकर जिस तरह ईरान के सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई की इस हमले में मौत हुई और भारत की ओर से जल्दबाजी में कुछ नहीं कहा गया, तो कांग्रेस ने इसपर भी घोर आपत्ति जताई।

बर्फ से ढके चारों धाम, दिल्ली में बूंदाबांदी

● राजस्थान में लगातार दूसरे दिन ओले गिरे, हरियाणा में बारिश से सड़कें डूबीं

जयपुर/लखनऊ/शिमला/देहरादून/भोपाल (एजेंसी)। देश के कई हिस्सों में मौसम ने अचानक करवट ली है। राजस्थान के सीकर में लगातार दूसरे दिन तेज बरसात के साथ ओले गिरे हैं। आंधी-बारिश के कारण हुए हादसे में जैसलमेर में दो भाइयों की मौत हो गई।

मध्य प्रदेश में भोपाल, इंदौर-ग्वालियर समेत 33 जिलों में आंधी-बारिश और 3 जिलों में ओले गिरने का अलर्ट है। मौसम विभाग ने अगले 3 दिन प्रदेश के अलग-अलग हिस्सों में 30 से 50 किलोमीटर प्रतिघंटे तक की रफ्तार से आंधी चलने का अनुमान जताया है। उधर हरियाणा के रेवाड़ी में रात में हुई तेज बारिश के साथ ओले गिरे। सड़कों पर पानी भर गया। आंधी के चलते सड़कों पर लगे होर्डिंग भी उखड़ गए। बारिश के कारण दिन के तापमान में गिरावट देखने को मिल रही है। आने वाले दिनों में दिन के तापमान में 2 से 3 डिग्री की गिरावट देखने को मिलेगी।

मुख्यमंत्री इंटरएक्टिव सेशन में उद्योगपतियों से करेंगे संवाद

टेक्सटाइल, ईवी-ऑटोमोबाइल, फूड प्रोसेसिंग और पर्यटन सेक्टर के निवेशक होंगे शामिल

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव मध्यप्रदेश को देश के सबसे भरोसेमंद और उभरते निवेश गंतव्य के रूप में स्थापित करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय स्तर पर निवेश आकर्षण की सक्रिय मुहिम चला रहे हैं। इसी कड़ी में वे विभिन्न राज्यों में रोड-

● **जयपुर के आईटीसी राजपूताना में 'इंटरेक्टिव सेशन ऑन इन्वेस्टमेंट अपॉर्च्यूनिटीज इन मध्यप्रदेश'**

शो और उद्योगपतियों के साथ वन-टू-वन संवाद के माध्यम से मध्यप्रदेश की औद्योगिक संभावनाओं को निवेशकों के सामने रख रहे हैं। भीलवाड़ा में टेक्सटाइल सेक्टर पर केंद्रित सफल संवाद के बाद अब मुख्यमंत्री डॉ. यादव 21 मार्च 2026 को जयपुर के आईटीसी राजपूताना में 'इंटरेक्टिव सेशन ऑन इन्वेस्टमेंट अपॉर्च्यूनिटीज इन मध्यप्रदेश' में उद्योग जगत से सीधा संवाद करेंगे, जहां वे मध्यप्रदेश में निवेश के अवसरों, नई औद्योगिक नीतियों और बेहतर अधोसंरचना की जानकारी देते हुए निवेशकों को राज्य में उद्योग स्थापित करने के लिए आमंत्रित करेंगे।

भारत की तेज़ी से उभरती अर्थव्यवस्था के इस दौर में, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में अपनी निर्णायक उपस्थिति दर्ज करा रहा है, तब मध्यप्रदेश की मोहन सरकार ने औद्योगिक विस्तार और संतुलित क्षेत्रीय विकास को लेकर एक स्पष्ट, आत्मविश्वासपूर्ण और परिणामोन्मुख रणनीति के साथ आगे बढ़ना शुरू कर दिया है। राष्ट्रीय ही नहीं, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय निवेश परिदृश्य में भी मध्यप्रदेश अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराते हुए स्वयं को एक उभरते हुए निवेश गंतव्य के रूप में स्थापित कर रहा है।

जयपुर में आयोजित सत्र विभिन्न प्रमुख क्षेत्रों—कृषि, फूड प्रोसेसिंग, डेयरी, टेक्सटाइल एवं गारमेंट्स, ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रिक व्हीकल, नवीकरणीय ऊर्जा, माइनिंग एवं मिनरल्स तथा पर्यटन से जुड़े उद्योगपतियों और औद्योगिक संगठनों के प्रतिनिधियों की सहभागिता का साक्षी बनेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के साथ प्रत्यक्ष संवाद तथा चयनित निवेशकों के साथ वन-टू-वन बैठकें प्रमुख आकर्षण रहेंगी, जिनमें सेक्टर-विशिष्ट अवसरों, परियोजना स्तर के सहयोग और समयबद्ध निवेश क्रियान्वयन पर विस्तृत चर्चा की जाएगी। कार्यक्रम का उद्देश्य जयपुर एवं राजस्थान के आसपास के क्षेत्रों के उद्योगपतियों और निवेशकों को मध्यप्रदेश में उपलब्ध औद्योगिक अवसरों, उन्नत अधोसंरचना, नवीन औद्योगिक नीतियों तथा आकर्षक प्रोत्साहन योजनाओं की प्रत्यक्ष एवं तथ्यात्मक जानकारी प्रदान करते हुए उन्हें राज्य में निवेश के लिए प्रोत्साहित करना है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव का स्पष्ट संदेश है कि मध्यप्रदेश अब संभावनाओं तक सीमित राज्य नहीं रहा, बल्कि नीतिगत स्पष्टता, त्वरित निर्णय क्षमता और मजबूत औद्योगिक आधार के साथ निवेश को धरातल पर उतारने वाला अग्रणी राज्य बन चुका है। उनका मानना है कि निवेश केवल पूंजी का प्रवाह नहीं, बल्कि रोजगार सृजन, कौशल विकास, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और समग्र क्षेत्रीय विकास का माध्यम है।

मोहन सरकार की प्राथमिकताओं में भी निरंतरता और स्पष्टता दिखाई देती है। विगत वर्ष को 'औद्योगिक एवं निवेश प्रोत्साहन वर्ष' के रूप में समर्पित करते हुए मध्यप्रदेश ने निवेश आकर्षण और औद्योगिक आधार को सुदृढ़ करने पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया। वहीं वर्ष 2026 को 'कृषि वर्ष' के रूप में चिन्हित करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. यादव अब कृषि, एग्री-बिजनेस, फूड प्रोसेसिंग और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को औद्योगिक विकास के साथ समेकित करने की दिशा में आगे बढ़ रहे है। यह संतुलित दृष्टिकोण राज्य को समग्र और समावेशी विकास की ओर अग्रसर कर रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने 26 फरवरी 2026 को राजस्थान के भीलवाड़ा में टेक्सटाइल सेक्टर पर केंद्रित एक सफल इंटरएक्टिव सत्र में मध्यप्रदेश के धार जिले में देश के पहले पीएम मित्र पार्क में निवेश के लिए आमंत्रित किया। उसी श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए जयपुर में यह दूसरा प्रमुख आयोजन हो रहा है, जिसके माध्यम से मध्यप्रदेश अपने औद्योगिक सामर्थ्य और निवेश संभावनाओं को व्यापक स्तर पर प्रस्तुत कर रहा है। राज्य द्वारा अल्प समय में 18 नई औद्योगिक नीतियों का क्रियान्वयन तथा दो 'जन विश्वास अधिनियमों' को लागू कर प्रक्रियाओं को सरल, पारदर्शी और उद्योग-अनुकूल बनाया जाना इस परिवर्तनशील और निवेशोन्मुखी दृष्टिकोण का स्पष्ट प्रमाण है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की रीजनल बैलेंस अप्रोच के अंतर्गत औद्योगिक विकास को पूरे प्रदेश में संतुलित रूप से विस्तार दिया जा रहा है।

इंजीनियर को बेंगलुरु पुलिस ने अवैध हथियार सहित गिरफ्तार किया

पांच आग्नेयास्त्र और 50 से अधिक राउंड गोला-बारूद बरामद, आरोपी को लेकर रवाना हुई टीम

भोपाल (नप्र)। बेंगलुरु पुलिस की केंद्रीय अपराध शाखा (सीसीबी) ने बुधवार को मध्य प्रदेश के भोपाल से एक इंजीनियर को गिरफ्तार किया। आरोपी अवैध फायर ऑर्म्स तस्करी गिरोह से जुड़ा है। उससे 5 आग्नेयास्त्र और 50 से अधिक राउंड गोला-बारूद बरामद किया गया है। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।

पुलिस ने गिरफ्तार आरोपी की पहचान सैयद इरफान हैदर रिजवी (34) के रूप में की है, जो भोपाल का रहने वाला एक सिविल इंजीनियर है। पिछले महीने भोपाल से बेंगलुरु जा रहे एक व्यक्ति को रोका गया और उसके पास से एक पिस्तौल और पांच जिंदा कारतूस बरामद हुए। इसके बाद हुई जांच में दो आरोपियों भोपाल के 19 वर्षीय जावेद आलम और बेंगलुरु के सिद्धापुरा के 26 वर्षीय सैयद मसूद को गिरफ्तार किया गया।

दो आरोपियों की पहले पर हुई थी गिरफ्तारी

उनकी पूछताछ के आधार पर पुलिस इरफान तक पहुंची, जो कथित तौर पर हथियारों की आपूर्ति कर रहा था। सीसीबी की एक टीम ने भोपाल की स्थानीय पुलिस के साथ मिलकर उसका पता लगाया और उसे उसके घर से गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने बताया कि इरफान के पास से तीन देसी पिस्तौल, एक पुष्ट रिवॉल्वर और जिंदा कारतूस बरामद किए गए हैं। इससे पहले, अन्य दो आरोपियों से एक पिस्तौल और लगभग 50 जिंदा कारतूस जब्त किए जा चुके थे।

पुलिस आयुक्त संजय कुमार ने कहा कि दो आरोपियों की पहले हुई गिरफ्तारी के आधार पर, बेंगलुरु पुलिस भोपाल आई और भोपाल पुलिस के सहयोग से तीसरे आरोपी को गिरफ्तार किया।

हथियारों के स्रोत का पता लगाने में जुटी पुलिस

उन्होंने आगे कहा कि अब जांच का ध्यान हथियारों के स्रोत का पता लगाने पर केंद्रित है। उन्होंने कहा, हम इन पिस्तौलों के निर्माण स्थल की पहचान करने और इस आपूर्ति श्रृंखला के पीछे के व्यापक नेटवर्क का पता लगाने के लिए विभिन्न स्थानों पर टीमें भेज रहे हैं। पुलिस को संदेह है कि इरफान मुख्य स्रोत नहीं हो सकता है और इसमें हथियारों के अवैध निर्माण का एक बड़ा नेटवर्क शामिल हो सकता है।

बोहरा समाज ने सादगी से अदा की ईद की नमाज

अमन-शांति की मांगी दुआ, शहर की प्रमुख मस्जिदों और मरकजों में जुटे लोग

भोपाल (नप्र)। भोपाल शहर में बोहरा समाज ने ईद का पर्व सादगी और धार्मिक आस्था के साथ मनाया। सुबह से ही अलग-अलग मस्जिदों और मरकजों में नमाज अदा करने के लिए लोगों की भीड़ जुटी। नमाज के दौरान देश और दुनिया

में अमन-शांति और खुशहाली की दुआ की गई।

नमाज नूर महल मरकज, अलीगंज मस्जिद, करोंद स्थित बुरहानी मस्जिद, सोफिया कॉलेज परिसर की बद्री मस्जिद, कोहफिजा मरकज, कब्रस्तान स्थित अहमदी मस्जिद और मालीपुरा की हुसैनी मस्जिद में अदा की गई। सभी स्थानों पर समाजजनों ने अनुशासन और सादगी के साथ धार्मिक परंपराओं का पालन किया। मीडिया इंचार्ज इब्राहिम अली दाऊद ने बताया कि अलीगंज मस्जिद में जनाब इब्दे मदियान की मौजूदगी में नमाज अदा की गई। इस दौरान जूजर भाईसाहब जाकवी और मुफद्दल भाईसाहब की देखरेख में भी शहर के अन्य इलाकों में लोगों ने नमाज अदा की।

नमाज के बाद लोगों ने एक-दूसरे को ईद की मुबारकबाद दी और समाज में भाईचारे को मजबूत करने का संदेश दिया। पूरे आयोजन में सादगी पर विशेष जोर रहा और समाजजनों ने आपसी सौहार्द्र के साथ त्योहार मनाया।

उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने पशुपतिनाथ मंदिर परिसर से जल गंगा जल संवर्धन अभियान का किया शुभारंभ

मंदिर परिसर में प्याऊ का लोकार्पण, जल संरक्षण के लिए जनभागीदारी पर दिया जोर

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा ने आज भगवान पशुपतिनाथ मंदिर परिसर से जल गंगा जल संवर्धन अभियान का विधिवत शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने जल संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए मंदिर परिसर में आमजन की सुविधा के लिए निर्मित प्याऊ का लोकार्पण भी किया। कार्यक्रम में नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती रमादेवी बंशीलाल गुर्जर, अन्य जनप्रतिनिधि, प्रशासनिक अधिकारी, विभिन्न विभागों के अधिकारी-कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में आमजन, पत्रकार उपस्थित रहे।

उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने कहा कि जल ही जीवन का आधार है और वर्तमान समय में जल संरक्षण अत्यंत आवश्यक हो गया है। जल गंगा जल संवर्धन अभियान के माध्यम से जिले में जल स्रोतों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए व्यापक स्तर पर कार्य किए जाएंगे। यह

अभियान 30 जून 2026 तक संचालित होगा। उन्होंने बताया कि अभियान के अंतर्गत तालाबों, नदियों, कुओं, बावड़ियों सहित अन्य पारंपरिक जल संरचनाओं का जीर्णोद्धार किया जाएगा। साथ ही इन जल स्रोतों की नियमित साफ-सफाई, गहरीकरण एवं मरम्मत के कार्य भी सुनिश्चित किए जाएंगे, जिससे वर्षा जल का अधिकतम संचयन हो सके।

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि यह अभियान केवल शासन का नहीं, बल्कि जन-जन का अभियान है। इसमें आम नागरिकों, जनप्रतिनिधियों, सामाजिक संगठनों एवं शासकीय विभागों की सक्रिय सहभागिता आवश्यक है। उन्होंने सभी से अपील की कि जल संरक्षण के इस पुनीत कार्य में बढ़-चढ़कर भाग लें और आने वाली पीढ़ियों के लिए जल संसाधनों को सुरक्षित रखें।

इस अवसर पर उन्होंने मंदिर परिसर में शुरू की गई प्याऊ व्यवस्था की सराहना की और कहा कि इससे श्रद्धालुओं एवं आमजन को गर्मी के मौसम में शुद्ध पेयजल उपलब्ध होगा, जो एक सराहनीय पहल है।

थ्रेसर में फंसा किसान, सिर पिसकर गायब हुआ

हाथ कटे, हड्डियां चकनाचूर हुईं, सिर्फ धड़ मिला ; गेहूं निकालते वक्त मशीन ने खींचा अंदर

रायसेन (नप्र)। मध्यप्रदेश के रायसेन जिले में गुरुवार दोपहर एक किसान की थ्रेसर मशीन में फंसकर मौत हो गई। हादसा इतना भयावह था कि किसान की गर्दन धड़ से अलग हो गई। सिर पिसकर गायब हो गया। सिर्फ धड़ ही बचा। मामला बाड़ी थाना क्षेत्र का है।

जानकारी के मुताबिक, मृतक की पहचान नर्मदा कहार (42) पुत्र छुट्टन कहार के रूप में हुई है, जो बाड़ी के वार्ड नंबर 01 के निवासी थे। हादसे में उनके हाथ भी कट गए। शरीर के अलग-अलग हिस्सों में कटे के निशान हैं। मशीन के अंदर खून के छींटे मिले हैं।

मशीन के पास खड़े होकर डाल रहे थे कटी फसल– स्थानीय लोगों के अनुसार, गुरुवार दोपहर करीब 2 बजे का समय था। गेहूं की फसल की कटाई पूरी हो चुकी थी। नर्मदा कहार खुद थ्रेसर मशीन के पास खड़े होकर कटी हुई फसल उसमें डाल रहे थे। आधी से ज्यादा फसल मशीन में डाली जा चुकी थी।

इसी दौरान अचानक उनका संतुलन बिगड़ गया। वे थ्रेसर मशीन की चपेट में आ गए। मशीन की तेज रफ्तार के कारण उन्हें संभलने का मौका नहीं मिला। देखते ही देखते उनका शरीर मशीन के भीतर खिंचता चला गया। मौके पर मौजूद अन्य किसान कुछ समझ पाते उससे पहले ही हादसा हो चुका था।

मौके पर लोगों की भीड़ जुटी– घटना के बाद खेत में अफरा-तफरी मच गई। आसपास काम कर रहे किसान और मजदूर घबरा गए। किसी ने तुरंत मशीन बंद की, तो किसी ने गांव में सूचना दी। कुछ ही देर में मौके पर लोगों की भीड़ जुट गई।

बाड़ी एसडीओपी नीलम चौधरी ने बताया कि सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। ग्रामीणों की मदद से शव को मशीन से बाहर निकाला गया। थ्रेसर मशीन किसान की ही थी। पुलिस ने शव को बाड़ी अस्पताल में पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

भोपाल में 31 फीट की गुड़ी बनी आकर्षण

108 कलशों से सूर्य को दिया अर्घ्य ; गायत्री शक्तिपीठ में 9 दिवसीय अनुष्ठान शुरू

भोपाल (नप्र) भारतीय नववर्ष विक्रम संवत् 2083 और चैत्र नवरात्रि के प्रथम दिवस गुरुवार सुबह राजधानी के मंदिरों में पूजा-अर्चना का दौर शुरू हुआ। सुबह-सुबह श्रद्धालुओं की भारी भीड़ मंदिरों में उमड़ी, जहां मां शैलपुत्री की विधि-विधान से आराधना की गई। भक्तों ने घट स्थापना कर जवारे बोए और अखंड ज्योति प्रज्वलित कर नववर्ष का स्वागत किया।

भेल में 31 फीट गुड़ी बनी आकर्षण का केंद्र– शहर में एक ओर पारंपरिक धार्मिक अनुष्ठानों की धूम रही, वहीं भेल क्षेत्र में मराठी समाज ने भव्य आयोजन कर इतिहास रचने का दावा किया। मराठी सांस्कृतिक मंडल, पिपलानी द्वारा श्री गणेश मंदिर परिसर में 31 फीट ऊंची गुड़ी स्थापित की गई, जिसे प्रदेश की सबसे ऊंची गुड़ी बताया जा रहा है। शंखनाद और सूर्य अर्घ्य के साथ गुड़ी की स्थापना की गई, जो पूरे क्षेत्र में आकर्षण का केंद्र रही।

जयघोष और प्रभात फेरी से गूंजा माहौल– सुबह नववर्ष के पहले सूर्योदय पर सैकड़ों लोगों ने एकत्र होकर सूर्य को अर्घ्य अर्पित किया। 'जय भवानी, जय शिवाजी' के जयघोष और नववर्ष की शुभकामनाओं से माहौल गुंजायमान रहा। इसके बाद ढोल-नगाड़ों के साथ भव्य प्रभात फेरी निकाली गई, जिसमें मराठी समाज के लोग पारंपरिक वेशभूषा में शामिल हुए। भेल की सड़कों पर महाराष्ट्र की संस्कृति की झलक देखने को मिली।

गायत्री शक्तिपीठ में 108 साधकों ने किया सूर्य अर्घ्य– वहीं दूसरी ओर गायत्री शक्तिपीठ, भोपाल द्वारा उपवन स्वास्थ्य पार्क में

आयोजित कार्यक्रम में 108 साधकों ने सामूहिक रूप से सूर्य देव को अर्घ्य अर्पित कर नववर्ष का स्वागत किया। शंख, घंटियों और वैदिक मंत्रोच्चार के बीच पूरे वातावरण में आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार हुआ।

9 दिवसीय अनुष्ठान के साथ आध्यात्मिक साधना शुरू– सूर्य अर्घ्यदान के बाद 9 दिवसीय गायत्री महामंत्र अनुष्ठान का विधिवत शुभारंभ किया गया। साधकों ने जप और यज्ञ के माध्यम से विश्व कल्याण, पर्यावरण शुद्धि और मानव मंगल की कामना की। आयोजन के दौरान सैकड़ों श्रद्धालु उपस्थित रहे और पूरे समय भक्ति एवं अनुशासन का माहौल बना रहा। मराठी सांस्कृतिक मंडल, पिपलानी द्वारा श्री गणेश मंदिर के प्रांगण में 31 फीट ऊँची गुड़ी स्थापित की गई।

नवरात्रि भर जारी रहेंगे धार्मिक कार्यक्रम– आयोजकों के अनुसार यह 9 दिवसीय अनुष्ठान पूरे चैत्र नवरात्रि तक जारी रहेगा, जिसमें प्रतिदिन जप, तप और यज्ञ के माध्यम से आध्यात्मिक साधना की जाएगी। गायत्री परिवार ने आमजन से इस आयोजन में सहभागी बनने की अपील भी की है। भारतीय नववर्ष विक्रम संवत 2083 और चैत्र नवरात्रि के प्रथम दिवस गुरुवार सुबह शहर के मंदिरों में पूजा-अर्चना का दौर शुरू हो गया। सुबह-सुबह श्रद्धालुओं की भारी भीड़ मंदिरों में उमड़ी, जहां मां शैलपुत्री की विधि-विधान से आराधना की गई। भक्तों ने घट स्थापना कर जवारे बोए और अखंड ज्योति प्रज्वलित कर नववर्ष का स्वागत किया। घट स्थापना के साथ ही मंदिरों और घरों में जवारे बोने तथा अखंड ज्योति प्रज्वलित करने की परंपरा निभाई जा रही है। आशिमा अनुपमा सिटी, जाटखेड़ी स्थित श्री शिव नारायण मंदिर में चैत्र नवरात्रि महोत्सव के तहत नव संवत्सर 2083 का स्वागत भक्ति और उल्लास के साथ किया जा रहा है। प्रातःकाल सूर्य दर्शन और शंखनाद के साथ नववर्ष का शुभारंभ हुआ।

बैरसिया में सुपरवाइजर के मुंह पर कालिख पोती

पाइप लाइन बिछाने पर देरी से नाराज पार्षद प्रतिनिधि ; कहा- 2 साल से परेशान हैं

भोपाल (नप्र)। भोपाल के बैरसिया में पानी की पाइप लाइन बिछाने में हुई देरी पर पार्षद प्रतिनिधि का गुस्सा फूट पड़ा। नाराज पार्षद प्रतिनिधि रवि करोसिया ने ठेकेदार के सुपरवाइजर के मुंह पर कालिख पोत दी। कहा कि जनता दो साल से परेशान हो रही है।

बैरसिया नगर पालिका में शहरी अमृत 2.0 जलप्रदाय योजना के तहत काम चल रहा है। यह शमशाबाद डेम से बैरसिया शहर तक पाइप लाइन बिछा हर घर तक पानी पहुंचाने के उद्देश्य से 13 सितंबर 2023 को शुरू की गई थी। इसे दो साल हो चुके हैं, लेकिन यह अधूरी है। करीब 22 करोड़ रुपए की इस योजना ने जहां लोगों को राहत देने का वादा किया था, वहीं अब यह नगरवासियों के लिए परेशानी और खतरे का कारण बन गई है। कारण प्रोजेक्ट के ठेकेदार द्वारा नगर के वार्डों की सड़कों और गलियों में जगह-जगह खुदाई कर पाइप लाइन डाली गई, लेकिन काम अधूरा छोड़ दिया गया।

इस नाराजगी के चलते मंगलवार को नगर पालिका में पार्षद प्रतिनिधि करोसिया सहित अन्य पार्षदों ने ठेकेदार के सुपरवाइजर के खिलाफ जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। आक्रोशित पार्षदों ने काम में लापरवाही को लेकर सुपरवाइजर के चेहरे पर कालिख पोतकर अपना विरोध जताया।

भोपाल में झुग्गियां हटाने पर हंगामा,अयोध्या बायपास पर जाम

राहगीरों के पीछे लट्ठ लेकर दौड़े प्रदर्शनकारी ; कई बसें भी जाम में फंसी

भोपाल (नप्र)। भोपाल के अयोध्या बायपास को 10 लेन में बदला जा रहा है। इस प्रोजेक्ट में कई दुकानें, मकान, धार्मिक स्थल और सरकारी भवन बाधा बन रहे हैं। जिन्हें हटाया जा रहा है। केसर बस्ती की करीब 90 झुग्गियां भी हटेगी। इसके विरोध में गुरुवार को बस्ती वाले सड़क पर उतर गए। करीब एक घंटे तक सड़क पर जाम लगाया। वहीं, राहगीरों के पीछे लट्ठ लेकर दौड़े।

मामला गुरुवार दोपहर का है। नाराज लोगों ने बीच सड़क पर पत्थर रख दिए। इस दौरान जिन राहगीरों ने निकलने की कोशिश की, उनके पीछे महिला-पुरुष लट्ठ लेकर दौड़े। एक दर्जन से ज्यादा महिलाएं हाथों में लट्ठ लेकर खड़ी रही। करीब एक घंटे तक हंगामा चला। इससे दोनों ओर वाहनों की लंबी लाइन लग गई और राहगीर परेशान होते रहे। जानकारी मिलने पर अयोध्या नगर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और मामले को संभाला।

विरोध प्रदर्शन कर रहे लोगों को समझाइश

देकर हटाया गया। थाना प्रभारी महेश लिल्हारे ने बताया कि झुग्गी के लोगों को नोटिस तामिल कराया गया है। लोगों को समझाइश देकर हटाया गया। गोविंदपुरा एसडीएम भुवन गुप्ता ने बताया कि अयोध्या बायपास प्रोजेक्ट के चलते उक्त झुग्गियां हटाई जाना है। इसके लिए दो बार नोटिस दिए जा चुके हैं। हालांकि, आज कार्रवाई के लिए अमला नहीं गया था। न ही कोई प्रक्रिया की गई।

सड़क जाम होने से ट्रैफिक रुका– सड़क जाम होने के कारण उस क्षेत्र में यातायात पूरी तरह प्रभावित हो गया और लंबा ट्रैफिक जाम लग गया। जिससे लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा। स्थिति उस समय और तनावपूर्ण हो गई, जब कुछ स्थानों पर लोगों के बीच झड़प और मारपीट की घटनाएं सामने आईं।

ये है प्रोजेक्ट

नेशनल हाईवे-146 पर आशाराम तिराहा से रत्नागिरी तिराहे तक 16 किलोमीटर लंबी 10 लेन सड़क का निर्माण किया जा रहा है। इसी दौरान आनंद नगर में एक फ्लाईओवर भी बनाया जाएगा। इसके लिए सड़क किनारे की 146 दुकानें हटाई जा चुकी हैं। साथ ही तीन धार्मिक स्थलों, एक वार्ड कार्यालय और एक पुलिस चौकी को शिफ्ट किया गया है। केसर बस्ती की झुग्गियां भी हटेगी। ताकि, काम जल्दी शुरू हो सके।

उचित मुआवजा और पुनर्वास की मांग

प्रशासन के दो बार नोटिस के बाद परिवार चिंतित हैं। उनका कहना है कि न तो उचित मुआवजा मिला है और न ही पुनर्वास की स्पष्ट व्यवस्था की गई है। प्रभावित परिवारों ने पहले पुनर्वास और मुआवजा सुनिश्चित करने की मांग की है।

संपादकीय

अब पूर्वोत्तर में चिंताजनक संकेत

नेशनल इंन्वेस्टीगेशन एजेंसी (एनआईए) द्वारा पूर्वोत्तर में अलगाववादी गतिविधियों में लिप्त 6 यूक्रेनी और 1 अमेरिकी नागरिक गिरफ्तारी बेहद चौंकाने और चिंतित करने वाली है। एनआईए ने अमेरिकी नागरिक मैथ्यू एरॉन वैन डाइक को 13 मार्च को जबकि छह यूक्रेनी नागरिकों को दिल्ली, लखनऊ और कोलकाता से पकड़ा है। अमेरिकी नागरिक मैथ्यू 2011 के लीबिया सिविल वॉर और सीरिया गृह युद्ध में सत्ता के खिलाफ लड़ाई में विदेशी फाइटर के रूप में शामिल था। उसने रूस-यूक्रेन युद्ध में यूक्रेनी युवाओं को भी ट्रेनिंग दी बताई जाती है। एनआईए ने बताया कि उसने 13 मार्च को 7 विदेशी नागरिकों को गिरफ्तार किया गया था। मैथ्यू के अलावा यूक्रेन के नागरिक हुर्बा पेट्रो, तारास स्लीव्याक, इवान सुकमानोव्स्की, मारियन स्टेफानकिव, मैक्सिम होनचारुक और विक्टर कामिंस्की को भी गिरफ्तार किया गया है। एजेंसी के मुताबिक ये लोग भारत खासकर नॉर्थ-ईस्ट में उग्रवाद का समर्थन कर रहे थे। साथ ही म्यांमार के सशस्त्र समूहों तक हथियार पहुंचाने, लड़ाकों को ड्रोन व हथियार चलाने की ट्रेनिंग दे रहे थे। इसके लिए यूरोप से मंगाए ड्रोन का इस्तेमाल करने की तैयारी थी। इन पर आतंकवादी साजिश (धारा 18) और बीएनएस तहत केस दर्ज किया है। इस बीच यूक्रेन ने भारत को विरोध पत्र भेजकर अपने नागरिकों की रिहाई की मांग की है। गौरतलब है कि अमेरिकी नागरिक मैथ्यू एरॉन वैनडाइक अमेरिका के मैरीलैंड के बाल्टीमोर का रहने वाला है। वह एक भाड़े का सिपाही, डॉक्यूमेंट्री फिल्ममेकर, सुरक्षा विश्लेषक और 'सन्स ऑफ लिबर्टी इंटरनेशनल (सोली)' नाम की संस्था का संस्थापक है। मैथ्यू ने वॉर कॉरेस्पोंडेंट और बिजनेसमैन के तौर पर भी काम किया है। वह पहली बार 2011 में लीबिया के गृह युद्ध के दौरान चर्चा में आया, जब वहां मुअम्मर गद्दाफी के शासन के खिलाफ विद्रोही बलों में शामिल हुआ। इसके बाद उसने इराक में आईसिस के खिलाफ लड़ाई लड़ी, सीरिया में बगावत में मदद की और 2022 में रूस-यूक्रेन युद्ध के दौरान यूक्रेन में लोगों को ट्रेनिंग दी। एनआईए का आरोप है कि वैन डाइक म्यांमार से जुड़ी संदिग्ध गतिविधियों में शामिल थे, जो भारत की सुरक्षा के लिए खतरा बन सकती थीं। हालांकि, इस केस में पूरी जानकारी अभी जांच के दायरे में है और एजेंसी आगे पड़ताल कर रही है। सभी आरोपियों को एनआईए विशेष अदालत ने सातों आरोपियों को 11 दिन की एनआईए हिरासत में भेज दिया है। रिमांड मांगते समय, एनआईए ने आरोप लगाया कि आरोपी AK-47 राइफलें रखने वाले अज्ञात आतंकवादियों के सीधे संपर्क में थे और उनकी आतंकवादी/अवैध गतिविधियों में मदद कर रहे थे। एनआईए के मुताबिक जातीय सशस्त्र समूहों से जुड़े ये आरोपी, कुछ प्रतिबंधित भारतीय उग्रवादी समूहों को हथियार और आतंकवादी साजो-सामान की आपूर्ति करके तथा उन्हें प्रशिक्षण देकर उनका समर्थन कर रहे हैं। हालांकि यूक्रेन सरकार का कहना है कि उसके नागरिकों की गिरफ्तारी की उसके भारत स्थित दूतावास को जानकारी नहीं दी गई, जो अंतरराष्ट्रीय प्रथा के खिलाफ है। यूक्रेन सरकार का यह भी कहना है कि अभी तक ऐसा कोई पक्का सबूत सामने नहीं आया है जिससे साबित हो कि ये लोग भारत या म्यांमार में गैर-कानूनी गतिविधियों में शामिल थे। यूक्रेन का विरोध अपनी जगह है, लेकिन अगर उसके नागरिक अगर भारत में अलगाववादी गतिविधियों में लिप्त हैं तो यह बेहद गंभीर बात है। पूर्वोत्तर में कुछ विदेशी तत्वों द्वारा अलग ईसाई राज्य बनाने की कोशिशों का खुलासा दो साल पहले बांग्लादेश की पूर्व पीएम शेख हसीना ने भी किया था। भारत के असम, त्रिपुरा और सिक्किम को छोड़कर बाकी राज्य ईसाई बहुल हैं। उन्हें भारत से अलग करने की यह खतरनाक अंतरराष्ट्रीय साजिश हो सकती है और इसके लिए म्यानमार का उपयोग किया जा रहा हो सकता है। भारत सरकार को ऐसे तत्वों से सख्ती से निपटना चाहिए।

महिलाओं के सहकारी नेतृत्व से बदलता भारत

नजरिया

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक एनएचआरसी (इण्डिया) में स्पेशल मॉनिटर व केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब में चेयर प्रोफेसर हैं।

अधिकार, न्याय व कार्रवाई थीम पर केन्द्रित इस वर्ष का अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस सुर्ख़ियों में रहा है क्योंकि संयुक्त राष्ट्र दस दिन तक विश्व की महिलाओं के साथ उत्साहपूर्ण वातावरण में खूब बातें कर रहा है. यूएन महासभा अध्यक्ष ऐनालेना बेयरबॉक का मानना है कि जब लड़कियाँ शिक्षा प्राप्त करती हैं तो अर्थव्यवस्था तेज़ी से बढ़ती है, जब महिलाएँ कार्यबल में शामिल होती हैं तो उत्पादकता बढ़ती है, और जब शांति वार्ताओं में महिलाएँ शामिल होती हैं तो शान्ति समझौते अधिक समय तक टिकाऊ साबित होते हैं. भारत में महिलाओं के शैक्षणिक बदलाव समय हो रहे हैं लेकिन जो कम पढ़ी लिखी महिलाएं हैं उन्होंने भी सहकारिता से जुड़कर भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने का कार्य किया है.

सहकार से समृद्धि की मिसाल पेश करतीं हमारे देश की महिलाओं का आत्मबल व आत्मविश्वास दोनों बहुत ही मजबूत है. राष्ट्रीय नई सहकारिता नीति एक विज़न, एक मिशन के साथ आगे बढ़ चुकी है. भारत सरकार ने सहकारिता मंत्रालय की स्थापना के साथ इतने उपक्रम को अपनाया है कि उससे भारतीय सहकारिता क्षेत्र से जुडी महिलाएं कभी पीछे मुड़कर नहीं देखेंगी. छः रणनीतिक मिशन जिसमें नींव का सशक्तीकरण करने का संकल्प है, इसके अंतर्गत सहकारी आंदोलन की नींव को और भी मजबूत करने की कोशिश है। जीवंतता को प्रोत्साहित करने का संकल्प है जिसके अंतर्गत जीवंत और आत्मनिर्भर पारिस्थितिकी तंत्र का सृजन होगा। तीसरा, सहकारी समितियों को भविष्य के लिए तैयार करने की कोशिश जिसमें सहकारी समितियों को पेशेवर और सतत आर्थिक इकाइयों में रूपांतरित किया जाएगा। चौथा समावेशिता को बढ़ावा देकर पहुँच का विस्तार प्रदान करने के लिए सहकार आधारित समावेशी विकास और सहकारी समितियों को जन आंदोलन के रूप में प्रोत्साहित करने पर बल है। साथ ही नए और उभरते क्षेत्रों में विस्तार हो इसके लिए ऐसी योजना है कि सहकारी समितियों के नए और उभरते क्षेत्रों में विस्तार को प्रोत्साहित किया जाए। और सबसे अहम् संकल्प यह है कि सहकारी विकास के लिए युवा पीढ़ी को तैयार को प्रोत्साहन मिले जिसका उद्देश्य है कि युवा पीढ़ी को प्रेरित कर उन्हें अनुभवजन्य सहकारी ज्ञान प्रदान करके भारत निर्माण में उन्हें जोड़ा जाए जो न केवल ग्रामीण सहकारी परिवेश से उनके जुड़ाव को विकसित करेगा बल्कि गाँव की संस्कृति से भागते युवाओं को पुनः गाँव से जोड़ने का कार्य करेगा.

स्त्री युवाशक्ति इसमें सबसे ज्यादा लाभान्वित होने वाली हैं, यह तो तय है. आधी युवा स्त्री आबादी से देश की आबादी की सहरिता क्षेत्र से कोशिश करने वाले देश के सहकारिता मंत्री अमित शाह ने समय-समय पर कई ऐसे रचनात्मक कार्य किया है जिसका उल्लेख अब पूरे विश्व में हो रहा है. एनडीडीबी से जुडी स्त्रियों की उद्यमों जैसे क्षेत्रों में महिलाओं के नेतृत्व वाली सहकारी समितियों के गठन और सशक्तीकरण को प्रोत्साहित कर अन्य मंत्रालयों के साथ मिलकर विभिन्न संस्थानों और योजनाओं के माध्यम से क्षमता निर्माण, प्रशिक्षण और वित्तीय सहायता की सुविधा प्रदान करने की कोशिश कर रही है. श्वेत क्रांति 2.0 ने तो मानों देश में एक नई आर्थिक समृद्धि की ओर बढ़ने को तत्पर है. ऐसा सरकारी आंकड़ों से पता चलता है कि डेयरी क्षेत्र को मजबूत करने और महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए, सरकार ने 46,422 मौजूदा डेयरी सहकारी समितियों के सशक्तीकरण के अलावा, 75,000 नई डेयरी सहकारी समितियों की स्थापना को सक्रिय रूप से

सफलता की कहानियां अब शोध और अध्ययन का हिस्सा बनने जा रही हैं. इस सन्दर्भ में डॉ. मीनेश शाह ने भी पुरजोर कोशिश करके सहकारिता स्त्री-शक्ति को बढ़ावा दिया है. पुनः ऐनालेना बेयरबॉक का अभिभाषण स्मरण आ रहा है जिसमें उन्होंने इस महिला दिवस पर ज़ोर देकर कहा कि उपलब्ध तथ्य स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि जब महिलाओं और लड़कियों को सशक्त बनाया जाता है, तो समाज को व्यापक लाभ मिलता है. भारतीय सहकारिता आन्दोलन को देखकर आज कुछ ऐसा ही स्पष्ट हो रहा है कि भारत सरकार कितना जागरूकता के साथ सहकारिता क्षेत्र से जुड़ी व्यवस्था, लोग और खासकर स्त्री-शक्ति-सशक्तीकरण पर कार्य कर रही है.

यह इसलिए कहा जा सकता है क्योंकि अगर बहुत संजीदगी से देखा जाए तो विभिन्न विश्लेषण बताते हैं कि सरकार डेयरी, कृषि, हस्तशिल्प और ग्रामीण प्रोत्साहित किया और डेयरी सहकारी समितियां महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण, रोजगार सृजन और ग्रामीण आजीविका बढ़ाने की दिशा में इससे बढ़ चुकी हैं. राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम-एनसीडीसी ने भी महिला केंद्रित योजनाएं शुरू की हैं जिसमें स्वयं शक्ति सहकार योजना, नंदिनी सहकार योजना एवं युवा सहकार योजनाओं ने तो आमूलचूल परिवर्तन करने का बीड़ा उठाया है.

स्वयं शक्ति सहकार योजना से एक तरफ आय सृजन कार्यकलापों, उद्यमिता विकास और महिला एसएचजी की क्षमता निर्माण होगा तो वहीं दूसरी तरफ वित्तीय सहायता प्रदान करके महिला सहकारी समितियों को बढ़ावा मिलेगा और स्त्रियाँ सशक्त होंगी। नंदिनी सहकार योजना से डेयरी, पशु पालन, खाद्य प्रसंस्करण और अन्य संबद्ध क्षेत्रों जैसे कार्यकलापों में लगी महिलाओं के नेतृत्व वाली सहकारी समितियों को वित्तीय सहायता मिलेगी तो इससे सहकारी उद्यमों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ने वाली है। युवा सहकार योजना में युवा महिला उद्यमियों को एनसीडीसी के माध्यम से वित्तीय सहायता और समर्थन मिलेगा. उभरते और अभिनव क्षेत्रों में सहकारी उद्यमों की स्थापना होने से प्रबंधन में प्रोत्साहित होंगी.

चीन की राजधानी बीजिंग में वर्ष 1995 में दुनिया के देशों ने एक साथ आकर एक घोषणापत्र बीजिंग प्लैटफ़ॉर्म को पारित किया था, जिसे महिला अधिकारों को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ माना जाता है. इस पड़ाव के 30 वर्ष पूरे हो चुके हैं. आर्थिक उन्नति, समावेशिता और उन्नत स्वास्थ्य के साथ पूर्णतया प्रतिभागिता को यह सम्मेलन संबोधित करता है. भारत में सहकारिता क्षेत्र में कार्य कर रही स्त्रियों को देखा जाए तो यह कहा जा सकता है कि यह सहकारिता आन्दोलन बीजिंग घोषणापत्र का भी सम्मान क्षेत्र है. भारत में सशक्तीकरण अब एक नारा नहीं है अपितु सशक्तीकरण की मिसाल है सहकारिता. भारतीय स्त्रियाँ जो सहकारिता क्षेत्र अब पढ़-लिखकर व शोध करके आने वाले समय में भारत के लिए कार्य करने वाली हैं, उसकी गाथा आने वाले वर्षों में शोध का विषय होंगी. यह एक ऐतिहासिक बदलाव है जिसे भारत सरकार पूरी प्रतिबद्धता के साथ अमित शाह के नेतृत्व में अर्जित कर रही है क्योंकि उनकी इच्छाशक्ति और कार्य को मूर्तरूप प्रदान करने की निराने शक्ति दोनों स्पष्ट है.

भारतीय सामाजिक ताने बाने के बीच अपनी ज़िन्दगी संवारतीं महिलाओं के सशक्तिकरण की यह सहकारिता यात्रा भारत के बदलाव के रूप में देखा जा रहा है. राष्ट्रीय स्तर पर व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की महिलाओं के बहुत से ऐतिहासिक उपलब्धियों की कहानियां प्रचलित हैं लेकिन विगत कुछेक वर्षों में सहकारिता से सशक्त स्त्री का इतिहास आने वाले समय में प्रेरणा का विषय बनने जा रहा है. भारत आज नेतृत्व, आर्थिक भागीदारी, सरकारी सहयोग, क्षेत्रीय सक्रियता, सामाजिक प्रभाव के अध्ययन व सशक्तीकरण की निति व नीतिगत बदलाव के लिए कार्य कर रहा है. इसमें अभिरुचि एवं अवसर दोनों बहुत मायने रखते हैं. यदि इनका सही समन्वय हो सका तो निःसंदेह आने वाला सहकारिता इतिहास स्त्रियों के नेतृत्व से परिपूर्ण दिखेगा और भारत तेजी से बदलता हुआ दिखेगा भी. आवश्यकता इस बात की है कि समय की हम पहचान करके सही दिशा में अपनी ऊर्जा को लगाएं.

सिनेमा देखने का बदलता अनुभव

दृष्टिकोण

मनीष जैसल

लेखक मीडिया शिक्षक हैं।

सिनेमा का इतिहास केवल तकनीक के हुए बदलावों का इतिहास नहीं है, बल्कि यह दर्शक, बाज़ार और रचनात्मकता के बदलते संबंधों का भी इतिहास है। कभी सिनेमा केवल सिनेमाघरों की अंधेरी दुनिया में जीवित था, जहाँ दर्शक सामूहिक अनुभव के रूप में फिल्म देखते थे। फिर टेलीविजन आया, उसके बाद वीडियो कैसेट, डीवीडी और फिर केबल नेटवर्क ने सिनेमा को घर तक पहुँचा दिया। इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक में स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म के आगमन ने फिल्म देखने की संस्कृति को एक बार फिर बदल दिया। आज दर्शक मोबाइल, टैबलेट या लैपटॉप पर जब चाहें तब फिल्में देख सकते हैं। लेकिन तकनीकी परिवर्तन की यह यात्रा यहीं नहीं रुकती। अब ब्लॉकचेन, एनएफटी (Non-Fungible Token) और एल्गोरिदम आधारित स्ट्रीमिंग सिस्टम मिलकर सिनेमा के भविष्य को एक नए मोड़ पर ले जा रहे हैं। यह बदलाव केवल फिल्म बनाने या बेचने के तरीके तक सीमित नहीं है, बल्कि यह इस बात को भी बदल रहा है कि हम फिल्में कैसे खोजते हैं, कैसे देखते हैं और उनसे हमारा रिश्ता कैसा बनता है।

पहले दर्शक सिनेमाघर में जाकर वही फिल्म देखते थे जो उस समय चल रही होती थी। अब स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म दर्शकों की पसंद और व्यवहार का विश्लेषण करके उन्हें कंटेंट सुझाते हैं। सभी ओटीटी प्लेटफॉर्म एल्गोरिदम का उपयोग करके यह तय करते हैं कि दर्शक की स्क्रीन पर कौन-सी फिल्म या सीरीज़ दिखाई जाएगी। एल्गोरिदम दर्शक के देखने के इतिहास, पसंदीदा शैली, देखने की अवधि और समय का विश्लेषण करता है। इसके बाद उसी आधार पर नई फिल्मों और सीरीज़ की सूची तैयार होती है। इस प्रक्रिया को कई मीडिया शोधकर्ता 'एल्गोरिदमिक सिनेमा अनुभव' कहते हैं।

एल्गोरिदम आधारित सजेशन ने फिल्म निर्माण को भी प्रभावित करना शुरू कर दिया है। स्ट्रीमिंग कंपनियाँ दर्शकों के डेटा का विश्लेषण करके यह समझने की कोशिश करती हैं कि किस तरह का कंटेंट अधिक लोकप्रिय हो सकता है। उदाहरण के तौर पर नेटफ्लिक्स की प्रसिद्ध श्रृंखला हाउस ऑफ कार्ड्स 2013 को विकसित करते समय दर्शकों के देखने के पैटर्न और रुचियों का अध्ययन किया गया था। इसी तरह ब्लैक मिरर जैसी इंटरैक्टिव फिल्में डिजिटल प्लेटफॉर्म की नई संभावनाओं को ध्यान में रखकर बनाई गईं।

स्ट्रीमिंग उद्योग के आर्थिक आँकड़े भी इस परिवर्तन को स्पष्ट करते हैं। विभिन्न उद्योग रिपोर्टों के अनुसार वैश्विक वीडियो स्ट्रीमिंग बाजार का आकार 2025 के आसपास लगभग 150 से 160 अरब डॉलर के बीच आँका गया है और अनुमान है कि 2030 तक यह 400 अरब डॉलर से अधिक तक पहुँच सकता है। दुनिया भर में स्ट्रीमिंग सेवाओं के लगभग 1.8 अरब से अधिक सब्सक्राइबर हैं। इसका अर्थ यह है कि सिनेमा का बड़ा हिस्सा अब डिजिटल प्लेटफॉर्म पर देखा जा रहा है। इससे फिल्म वितरण की पारंपरिक व्यवस्था, जो सिनेमाघरों और टीवी प्रसारण पर आधारित थी, तेजी से बदल रही है।

यहीं से ब्लॉकचेन और एनएफटीज की चर्चा शुरू होती है। जहाँ एल्गोरिदम यह तय करने में भूमिका निभाते हैं कि दर्शक क्या देखेंगे, वहीं ब्लॉकचेन यह बदल सकता है कि फिल्म का मालिक कौन होगा और उससे कमाई कैसे होगी। पारंपरिक फिल्म उद्योग में अधिकारों और कमाई की प्रक्रिया जटिल होती है। निर्माता, वितरक, सिनेमाघर मालिक, संगीत कंपनियाँ और डिजिटल प्लेटफॉर्म मिलकर इस व्यवस्था को संचालित करते हैं। कई बार कलाकारों और तकनीशियनों को भुगतान में देरी होती है या राजस्व का सही हिसाब स्पष्ट नहीं होता। ब्लॉकचेन तकनीक इस प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी बनाने का दावा करती है क्योंकि इसमें हर लेन-देन का रिकॉर्ड सुरक्षित और स्थायी रूप से दर्ज किया जा सकता है।

ब्लॉकचेन का एक महत्वपूर्ण उपयोग फिल्म अधिकारों के प्रबंधन में देखा जा रहा है। किसी फिल्म की स्क्रिप्ट, संगीत, दृश्य या वितरण अधिकार को डिजिटल रूप से दर्ज करके यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि उसका स्वामित्व किसके पास है। एक बार जब यह रिकॉर्ड ब्लॉकचेन पर दर्ज हो जाता है, तो उसे बदलना या मिटाना लगभग असंभव हो जाता है। इससे कॉपीराइट विवाद और पायरेसी से लड़ने में मदद मिल सकती है।

एनएफटीज इस व्यवस्था को और रोचक बनाते हैं क्योंकि वे फिल्मों और उनसे जुड़े कंटेंट को डिजिटल संपत्ति में बदल सकते हैं। उदाहरण के लिए किसी फिल्म का पोस्टर, डिजिटल कला, दृश्य या संगीत एनएफटीएस के रूप में जारी किया जा सकता है। जो व्यक्ति इसे खरीदता है वह उस डिजिटल सामग्री का प्रमाणित स्वामी बन जाता है। इससे सिनेमा देखने का अनुभव भी बदल सकता है। भविष्य में संभव है कि कोई दर्शक केवल फिल्म देखने के लिए टिकट न खरीदे, बल्कि फिल्म के किसी हिस्से का डिजिटल स्वामी भी बने। इसे 'फैन निवेश मॉडल' के रूप में देखा जा सकता है, जिसमें दर्शक फिल्म के निर्माण और सफलता में आर्थिक रूप से भागीदार बन सकते हैं।

दुनिया के कई देशों में इस दिशा में प्रयोग शुरू हो चुके हैं। उदाहरण के लिए हॉलीवुड की फिल्म ज़ीरो कांटैक्ट को ब्लॉकचेन आधारित प्लेटफॉर्म के माध्यम से वितरित करने का प्रयोग किया गया था। इसी तरह नो पोस्टेज नेसेसरी को ब्लॉकचेन तकनीक के साथ रिलीज़ किया गया था, जिसमें दर्शकों ने डिजिटल माध्यम से फिल्म तक पहुँच खरीदी।

भारत में भी इस दिशा में शुरुआती प्रयोग देखने को मिले हैं। उदाहरण के तौर पर RRR और 83 से जुड़े डिजिटल कलेक्टिबल्स को हस्नञ्ज के रूप में जारी करने की कोशिश की गई थी। हालाँकि यह अभी प्रारंभिक स्तर पर है, लेकिन इससे यह संकेत मिलता है कि भारतीय फिल्म उद्योग भी डिजिटल स्वामित्व और ब्लॉकचेन तकनीक की संभावनाओं को समझने लगा है।

ब्लॉकचेन तकनीक का एक और महत्वपूर्ण पहलू स्मार्ट कॉन्ट्रैक्ट है। स्मार्ट कॉन्ट्रैक्ट ऐसे डिजिटल अनुबंध होते हैं जो तय शर्तों के अनुसार अपने आप काम करते हैं। उदाहरण के लिए यदि किसी फिल्म को ऑनलाइन देखा जाता है, तो स्मार्ट कॉन्ट्रैक्ट के माध्यम से निर्देशक, अभिनेता, संगीतकार और अन्य सहयोगियों को स्वचालित रूप से उनकी रॉयल्टी मिल सकती है। इससे भुगतान की प्रक्रिया अधिक पारदर्शी और तेज़ हो सकती है।

इन तकनीकों का सबसे बड़ा प्रभाव स्वतंत्र फिल्मकारों पर पड़ सकता है। पारंपरिक व्यवस्था में फिल्म बनाने के लिए बड़े स्टूडियो या निवेशकों पर निर्भर रहना पड़ता है। लेकिन यदि ब्लॉकचेन आधारित फंडिंग मॉडल विकसित होता है तो फिल्मकार सीधे दर्शकों से पैसा जुटा सकते हैं। इससे छोटे और प्रयोगात्मक सिनेमा को भी अवसर मिल सकते हैं।

कुछ रिपोर्टों के अनुसार 2024 में वैश्विक ब्लॉकचेन बाजार का आकार लगभग 24 अरब डॉलर के आसपास था और अनुमान है कि यह 2030 तक बढ़कर 300 अरब डॉलर से अधिक तक पहुँच सकता है। मीडिया और मनोरंजन उद्योग में ब्लॉकचेन के उपयोग का क्षेत्र भी तेजी से विस्तार कर रहा है, क्योंकि यह फिल्म अधिकार प्रबंधन, डिजिटल वितरण और पारदर्शी भुगतान व्यवस्था को संभव बनाता है। ये आँकड़े संकेत देते हैं कि आने वाले वर्षों में सिनेमा केवल रचनात्मक उद्योग ही नहीं रहेगा, बल्कि एक बड़े डिजिटल और डेटा-आधारित आर्थिक तंत्र का हिस्सा बन जाएगा।

हालाँकि इस तकनीकी बदलाव के साथ कई चिंताएँ भी जुड़ी हुई हैं। सबसे पहली चिंता यह है कि एल्गोरिदम आधारित प्लेटफॉर्म पहले ही सिनेमा के स्वाद को प्रभावित कर रहे हैं। यदि निवेश और वितरण भी पूरी तरह डिजिटल एल्गोरिदम पर आधारित हो गया तो यह खतरा हो सकता है कि फिल्में केवल उन्हीं विषयों पर बनें जिन्हें अधिक लाभकारी माना जाए। इससे कला की स्वतंत्रता प्रभावित हो सकती है।

दूसरी समस्या एनएफटीज बाजार की अस्थिरता है। कई बार डिजिटल संपत्तियों की कीमतें अचानक बढ़ जाती हैं और फिर तेजी से गिर भी जाती हैं। इसलिए इसे अभी पूरी तरह स्थिर आर्थिक मॉडल नहीं माना जाता।

पर्यावरणीय चिंता भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। कुछ ब्लॉकचेन नेटवर्क बहुत अधिक ऊर्जा का उपयोग करते हैं, जिससे कार्बन उत्सर्जन बढ़ सकता है।

अब दर्शकों के स्तर पर भी बदलाव आएगा। एल्गोरिदम आधारित सजेशन के कारण दर्शक पहले से अधिक व्यक्तिगत अनुभव प्राप्त कर रहे हैं। लेकिन यह भी संभव है कि दर्शक धीरे-धीरे केवल उन्हीं फिल्मों तक सीमित हो जाएँ जिन्हें प्लेटफॉर्म दिखाना चाहता है। इससे विविधता और खोज की संभावना कम हो सकती है।

सिनेमा एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है जहाँ तकनीक उसकी पूरी संरचना को बदल रही है। एल्गोरिदम यह तय करने में भूमिका निभा रहे हैं कि दर्शक क्या देखेंगे, और ब्लॉकचेन यह तय करने की दिशा में बढ़ रहा है कि फिल्मों का स्वामित्व किसके पास होगा और उनसे कमाई कैसे होगी। आने वाले समय में संभव है कि सिनेमा केवल देखने का माध्यम न रह जाए, बल्कि एक डिजिटल संपत्ति भी बन जाए जिसमें दर्शक, निवेशक और रचनाकार सभी किसी न किसी रूप में भागीदार हों। लेकिन यदि तकनीक का उपयोग केवल आर्थिक लाभ के लिए हुआ तो यह कला की स्वतंत्रता और दर्शक अनुभव दोनों को प्रभावित कर सकता है। इसलिए भविष्य का सिनेमा केवल तकनीक पर निर्भर नहीं करेगा, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करेगा कि हम तकनीक का उपयोग किस दृष्टि और जिम्मेदारी के साथ करते हैं।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

जवाहर चौधरी
(लेखक व्यंग्यकार है)

अटका दिया ईमानदारी ने

वो क्या हे भिया, अपन्ने कबी राजनीति में जाने का सोचई-नी, नी-तो आज की डेट में अपन्को टिकिट हँस-के देते सारी पारटी वाले।''

'' नई यार !!''

'' अपने लिये कोई मुस्किल-नी था भिया। आज देखो क्या माहोल चल-रिया हे ! जो देखो जो भगा चला जा-रिया हे दिल्ली-भोपाल ! फिर-बी किसीकी दाल नी-गल-री हे। गल-री हे क्या किसी की? पन अपनी बात ठप्पे से होती। क्या .....''

'' वा-यार पेलवान ! झांकी थी क्या तुमारी !!''

'' केने-को तो सब केते रेते हें, पन उस्ताद एक टेम पे अपना वो जलवा था कि पूछोई मत। वो हे-ना पनवारीलाल, जो बाद में मंत्री-वंत्री बन गया था, अपने हात-पेर दबाता था, क्या... ।''

''एँ !! क्या केरे-हो ! सई में !''

'' हाँ हाँ, वोई तो केरा हूं, उस टेम पे जलवा था अपना। आपने देखा-नी उस्ताद, नि-तो आप-बी बिस्वास नी करते, क्या... ।''

'' एक बात हे यार, गलती कर दी तुमने। राजनीति में चले जाते तो आज की तारीक में फावड़े से माल खींच-रे होते। अब तो चोतरफा महोल सई हे। हे कि -नी ?''

'' वो क्या हे भिया, साली अपने खून मेई इमान्दारी हे। अपने को उसी टेम पे समज में आ गई थी कि आगे चलके कोई इमान्दारी से राजनीति नी कर सकता हे। ... ओर भिया फिर अपने को करना क्या हे ! दाल-रोटी उस टेम पे-बी भगवान देई रिया था, ओर आज-बी देई रिया हे मजे में। हे कि-नी ?''

''देखो पेलवान, दाल-रोटी तो मंगते भिकारियों को-बी मिली जाती हे। एसी इमान्दारी जाए तड़ी में। ...तिया समजते हें लोगबाग आजके जमाने में इमान्दार को। आज की डेट में तुमको कुछ मिल रि-या हे क्या इमान्दारी का ?!''

'' नी-मिले तो नी-मिले यार, अब क्या करो जब खून मे-ई इमान्दारी हे तो।''

''उस टेम पे कुछ कर लेते यार तो पनवारीलाल की तरे ऐस करते ठप्पे से।... पता हे-कि-नी ! कित्ता माल बना लिया हे पठ्ठे ने !?...चार-चार तो बंगलें हें इसी-सेर में ! ...भोत सारी कालोनी होन में पलाट हे ढ़ेर सारे ! ओर केस !... माने नगद तो इत्ता हे कि बस पुछोई मत !.. उदर लंबे रूट पे बस होन चल-री हें उनका तो हिसाबी-नी हे ! ...ओर-बी भोत सारे उल्टे-सीदे धंदे हें वो अलग। चूक गए यार पेलवान।''

'' अब क्या करो भिया। अपने को तो येई संतोस हे कि नेतागिरी में मूँ काला-नी करा अपन-ने। चायते तो कुच-बी कर सकते थे... भिया तुम बिस्वास नी करोगे एक बार तो पधान-मंत्री से यूं आमना-सामना हुआ, पांच-छेफुट की दूरी से।''

'' नईं यार !! क्या बात कर-रए हो !!''

''हाँ , सई में। इदर सरकारी कालेज के सामने से निकले थे। अपन तो बाप के कंदे पे बेठे थे तो अलग सेई दिखरे थे उन्को। ..अपन को देखते सेई उन्ने गाड़ी मद्दी कराई ओर गेंदे का हार फेंका मेरे उप्पर। ... पन साले दूसरे लोग होन ने झपट लिया।... तबी से अपन को समज में आ गई कि राजनीति में येई होएगा यार।... माल अपने नाम पे आएगा ओर लूट लेंगे दूसरे लोग !... बस अपना मन ऐसा खट्टा हो गया कि पूछो मत ...आज तक खट्ठई हे ...चइये जब दई में जावन लगा लो।''

''वा-यार पेलवान! एसी इमान्दारी अगर नेता होन में आ जाए तो देस सुदर जाए क्या।''

'' देस की किस्मत में जो लिखा होएगा वोई तो होएगा ना भिया, अपन क्या कर सकते हे !?''

''... फिर अबकी चुनाव में किसका काम करोगे?''

'' जो सई आदमी होता हे भिया अपन तो उसी का काम करते हें, क्या ...।''

'' बात कर्रे-हो यार तुम-बी ! आज के टेम में कोई सई आदमी मिलरिया हे क्या राजनीति में !?''

'' सई के-रे हो भिया, पन करो क्या ... जो हें उनी का काम करना पड़ेगा ... हे कि-नी ? ।''

'' तुम-बी यार, उस टेम पे लग लिये होते तो आज ये दिन नी देखना पड़ते। ... पारसद-वारसद तो बनी जाते। कम से कम अलफत्तुओं के झंडे-डंडे तो नी उठाना पड़ते।''

'' सई के-रे हो भिया। पर करो क्या यार ... ईमानदारी ने मरवा दिया।''

गौरैया दिवस

प्रमोद दीक्षित मलय

लेखक शिक्षक एवं शैक्षिक संवाद मंच के संस्थापक हैं।

कहां गई घर-आंगन की चिड़िया

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का यह शुभ दिन भारत की महान संस्कृति एवं गौरवशाली परंपरा का प्रतीक है। 'ब्रह्मपुराण' के अनुसार, ब्रह्माजी ने इसी दिन सृष्टि की रचना प्रारंभ की थी। ब्रह्माजी ने सुंदर सृष्टि का निर्माण किया और देवी-देवताओं, यक्ष-राक्षस, गंधर्व, ऋषि-मुनियों, नदियों, पर्वतों, पशु-पक्षियों, जीव-जंतुओं, वनस्पतियों इत्यादि से परिपूर्ण बनाया। सतयुग में इसी दिन ब्रह्मांड में विद्यमान ब्रह्मतत्व ने पृथ्वी पर साकार रूप लिया। इसी पवित्र दिन भगवान श्रीराम की अधर्म पर विजय का विजयोत्सव मनाने के लिए अयोध्यावासियों ने घर-घर में धर्मध्वज फहराकर एक नवीन राष्ट्रीय चेतना के साथ एक नए युग का प्रारंभ किया, जिसे 'रामराज्य' कहा जाता है।

मुझे नहीं मालूम कि मुझे गौरैया सहित तोते, तीतर, मैना, कबूतर, गिद्ध, बाज, बतख, टिटिहरी, गिलहरी आदि पक्षी और पीपल, बरगद, नीम, अशोक, कदम्ब, कैथा, जामुन, महुआ, आम के वृक्ष क्यों पसंद हैं। लेकिन जब भी मैं इनके साथ, इनके बीच होता हूं तो लगता है कि मैं आनंद की दुनिया में हूं। तमाम सुख-दुख से मुक्त परम आनन्द की अनुभूति करता हूं। इसीलिए जब 2012 में अतर्रा नामक कस्बे में अपना मकान बनवाया तो अगले हिस्से में पेड़-पौधों के लिए यथासम्भव जगह छोड़ी और अगली बरसात में ही आम, अमरूद, सीताफल, आंवला, शमी, मीठी नीम और कुछ लताओं तथा बोगनवेलिया के पौधे रोप दिए थे जो आज बड़े हो गये हैं। हालांकि आंवला और शमी नहीं बच पाए। आम, अमरूद और सीताफल अपने फलन के मौसम में फूल और फलों से लद जाते हैं। गौरैया, गिलहरी, तोते, कोयल सहित तरह-तरह के पक्षियों ने इन पेड़ों को अपना अड्डा बना लिया है। चिड़ियों ने घोंसले बना लिए, हर वर्ष एक बहुत छोटी काले रंग की चमकीली चिड़िया भी वसंत में आकर घोंसला बनाती, अंडे देती और अंडों से बच्चे निकलने के बाद उड़ जाती है। बसंता, कठफोड़वा, धनेश और सतभैया जैसे पक्षी भी कभी-कभार सैर कर जाते हैं। पेड़ों की डालियों पर गिलहरियों की दिनभर धमा-चौकड़ी, चिड़ियों का कलरव, कोयल की कूक परिवेश में मानो सुधारस की वर्षा करती है। पेड़ों पर लगे फल चिड़ियों के लिए और जमीन पर गिरे फल हमारे लिए होते हैं। गौरैया को चुपचाप देखना मुझे आनंद से भर देता है। प्रत्येक वर्ष 20 मार्च को विश्व गौरैया दिवस मनाकर हम घर-आंगन के प्यार पक्षी गौरैया के संरक्षण का संकल्प लेते हैं। आयोजन थीम आधारित होते हैं। गतवर्ष 'प्रकृति के नन्हे दूतों को सम्मान' थीम थी। मेरा अंतर्मन प्रकृति और मानव के पारस्परिक सम्बंधों की सुखद स्मृतियों की अनुभूति से रोमांचित हुआ जा रहा है।

प्रकृति एवं मानव जीवन परस्पर अन्योन्याश्रित है। मानवीय अस्तित्व के लिए यह परमावश्यक है कि प्रकृति में जीवन की जो प्राचीन जैव श्रंखला एवं विविधता विद्यमान है उसे न केवल बचाए रखा जाए बल्कि उसको संरक्षित कर समृद्ध भी किया जाए। लेकिन मानव प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व की भावना से रहने-जीने की बजाय अपने बुद्धि-बल से प्रकृति से अधिकाधिक लूट-छीन लेने के भाव से लगातार घाव करता जा रहा है। संकट केवल गौरैया के जीवन पर नहीं है, वास्तव में यह संकट प्रकारांतर से मानव सभ्यता पर ही है। क्योंकि गौरैया उस जैव श्रृंखला की एक कड़ी है जिसके हम भी एक घटक हैं। यदि एक कड़ी कमजोर होती या टूटती है तो पूरी श्रृंखला का अस्तित्व संकटग्रस्त हो जाता है। इसी संकट से मुक्ति की युक्ति का नाम है विश्व गौरैया दिवस। बिहार और दिल्ली प्रदेश का राज्य पक्षी गौरैया आज अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है। गौरैया के बिना घर का आंगन सूना-सूना है।

मैं गांव-देहात से जुड़ा व्यक्ति हूं। मैंने ग्रामीण और शहरी दोनों जीवन को बहुत करीब से भोगा, देखा और देख रहा हूं। इस आधार पर मैं कह सकता हूं कि यह संकट केवल शहरों तक ही सीमित नहीं है बल्कि सुदूर गांव, मजरों और प्राकृतिक अंचलों तक पहुंच गया है। मैं जब भी गांव जाता हूं तो पिछले 20-30 सालों के दृश्य अनायास मानस पटल पर अंकित होने लगते हैं। जब मैं बचपन में बुंदेलखण्ड के अपने गांव 'बल्लान' में हम उम्र साथियों के साथ खेत-खलिहान, बगीचों और तालाबों में आनंदमय जीवन जी रहा था तो यह गौरैया भी हमारी संगी-साथिन थी। जब पूरा गांव सो रहा होता, तब भोर में ही गौरैया का झुंड चीं-चीं, चीं-चीं करता पूरे गांव में चक्कर लगा रहा होता जैसे कि आज किसी राजनीतिक सभा में आने वाले नेता का हेलीकॉप्टर पूरे क्षेत्र का चक्कर लगा देता है। चिड़ियों की चहचहाहट हमारे गांव की जैसे सामूहिक अलार्म घड़ी थी। तब मैं चारपाई पर लेटे या कभी-कभी बाबा की चारपाई में बैठ कर सीताराम का भजन करते देखता कि अम्मा दरवाजा बुहार गाय के गोबर से ओरिया डाल (घर के मुख्य द्वार पर गाय के गोबर से लीपना) मुट्ठी भर चावल के दाने रख देतीं। तुरन्त कुछ चिड़ियां खपरैल से उतर आतीं और दाना चुगने लगतीं। धुलने के लिए शाम के जूठे बर्तन निकाल आंगन के एक ओर बने नरदा (नाली, जूठे बर्तन धोने की जगह) के पास रख खजूर की पत्तियों से बने कूंचा (झाड़ू) से बखरी (आंगन) बटोरने लगतीं। मैं देखता कि चिड़ियों का एक समूह बर्तनों की सफाई में जुट जाता जैसे अम्मा के कामों में हाथ बंटा रही हों। जब तक अम्मा बर्तन धोने के लिए आतीं तब तक चिड़ियों की यह पलटन बर्तनों में चिपके भात, दाल, सब्जी और आटा को साफ कर चुकी होती। तब दादी कुठली (अनाज रखने हेतु मिट्टी की बनी परम्परागत बखारी) से बांस की टोकरी में तीन-चार मुट्ठी चावल या धान लेकर आंगन के आधे हिस्से में बिखेर देतीं। तब चिड़ियों का बहुत बड़ा झुंड, जोकि बहुत देर से खपरैल और आंगन के जामुन के पेड़ पर बैठा प्रतीक्षारत होता, एक साथ झप्प से दानों पर टूट पड़ता। पूरा आंगन मनोहारी संगीत के प्रभाती राग से सराबोर हो जाता। ऐसे ही किसी आंगन में घुटनों के बल रेंगने वाला शिशु उन्हीं चिड़ियों के बीच किलकारी मार दौड़ता रहता। तभी कहीं कोई चिड़िया शिशु के कंधे पर पल भर के लिए बैठ मानो गाल चूम आशीष दे दादी का आभार व्यक्त कर फिर आने का वादा कर उड़ जाती। तब गांव में बड़े-बड़े आंगन होते और आंगन में होते थे अमरूद, अनार, जामुन, नीम, कैथा के पेड और किसी-किसी आंगन में तो आम और महुआ भी। तब इन पेड़ों पर गौरैया के घोसले लहराते रहते, खासकर कैथा के पेड़ में। खपरैल के नीचे वाले हिस्से में किसी पटिया-बल्ली और बांस के बीच बनी छोटी सी जगह में गौरैया अपने हुनर का कमाल दिखा अपना आशियाना बना लेती जो सालों-साल बना रहता। पहली बारिश बाद खपरैल फिर से छवाया जाता था ताकि बरसात में पानी न चूए। मजाल कि कोई छवैया मजदूर घोसलों को हटा सके। शायद यह गौरैया या समस्त प्राणियों के प्रति विश्वास एवं अपनेपन का एक सहज रिश्ता था। अपने घर में ऐसे दर्जनों घोंसले बिल्कुल हमारी पहुंच में होते। लेकिन मुझे अच्छी तरह याद है कि कभी किसी घोंसले का नुकसान या छेड़छाड़ किसी बच्चे द्वारा नहीं की गई, बड़ों द्वारा करने का तो सवाल ही नहीं था। यह एक प्रकार से गौरैया की मनुष्य के साथ पारिवारिक सदस्य होने की स्वीकृति थी। जब मैं खेतों में अपने भैंस, गाय और बैलों को चरते हुए देखता तो उनकी पीठ पर गौरैया शान से सवारी करती रहती। मुफ्त सवारी के बदले में गौरैया यात्रा करते हुए जानवरों के नाक, कान, पूंछ और पूरी देह से बहुत महीन कीड़े खोज-खोज कर चट कर चमड़ी की सफाई कर देतीं। मैंने इस सफाई अभियान में अक्सर मैना को भी शामिल हो अपना योगदान देते देखा है। गाय जब आराम कर रही होती तब चिड़िया उसके कान का मैल साफ करते हुए जैसे कह रही होतीं, 'तुम चिंता न करना सखी, सफाई के लिए हम हैं न।' प्रायः कौए भी इस नेक कार्य में भागीदार बनते। और जब गाय स्वीकृति में कान हिलाती तो सारी चिड़ियां खिलखिलाकर फुर्र हो जातीं। अगर थोड़ी सी बात मैं गौरैया से हटकर अन्य पक्षियों की भी कर लूं तो कोई हर्जा न होगा। उस समय तोते, कठफोड़वा, बाज, मैना भी खूब आवाजाही करते थे। मृत पशु की दावत उड़ाते सैकड़ों गिद्धों का झुंड देखकर बचपन में डरता भी था। पर अब ये दृश्य किसी फिल्म के फ्लैश बैक की तरह आकर रिश्तों की डोर के छूटे सिरे को अतीत से जोड़ ओझल हो जाते हैं, प्रत्यक्ष दिखाई नहीं देते। संकट के कारणों से आप परिचित हैं, फिर भी स्मरण के लिए पुनः कुछ बिन्दुओं को रखना उचित प्रतीत होता है। इन कारणों में फसलों से अत्यधिक उत्पादन के लिए कीटनाशकों एवं उर्वरकों के अधाधुंध प्रयोग से चिड़ियों के लिए सहज उपलब्ध भोजन का विषाक्त हो जाना, कृषि के विस्तार के लिए खेती योग्य भूमि निकालने के लिए जंगलों, बगीचों को उजाड़ना एवं मकान बनाने के लिए गांवों के अंदर के पेड़ों का काटा जाना, खपरैल वाले कच्चे घरों की जगह पक्के मकानों का निर्माण, मोबाइल टावरों के बिछे जाल आदि ने गौरैया के प्राकृतिक पर्यावास, बसावट, प्रजनन एवं भोजन-पोषण को खत्म किया, घोंसले बनाने के लिए उपयुक्त जगह न मिलने से असुरक्षित अंडों को सर्प, बाज, नेवला, सियार, लोमड़ी आदि द्वारा भक्षण कर जाना, रेडिएशन एवं तरंगों से प्रजनन एवं निषेचन प्रक्रिया के प्रभावित होने से गौरैया के अस्तित्व पर ही संकट खड़ा हो गया है। इसीलिए ब्रिटेन स्थित 'रॉयल सोसायटी ऑफ प्रोटेक्शन ऑफ बर्ड्स' ने गौरैया को संकटग्रस्त घोषित कर 'रेड लिस्ट' में डाल बचाने के गंभीर प्रयास शुरू किए हैं।

अब जबकि मैं लेख के अंत की ओर बढ़ रहा हूं तो समाधान के तौर पर कुछ बाते रखना आवश्यक है। अमुक उपाय करना चाहिए के उपदेशात्मक प्रवचनों की बजाय अनुरोध स्वरूप अनुभूत बाते साझा करना समीचीन एवं न्यायोचित होगा। अतः मकान, पार्क, स्कूल, ऑफिस, जहां कहीं भी खाली जगह उपलब्ध हो कुछ पौधे जरूर लगाएं। यह कोशिश रहे कि केवल छायादार, शोभाकारी ही नहीं बल्कि फलदार पौधे भी लगायें। सम्भव हो तो अपने घरों में लकड़ी के घोसले लगायें। घरों में कोई एक स्थान निश्चित कर साल भर सुबह एक मुट्ठी चावल के दाने और ताजे पानी का प्रबन्ध कर गौरैया का स्वागत करें। सुख एवं खुशी मिलेगी, मुझे तो मिली है। मित्रो! अभी संभलने का समय है। यदि हम चेत-संभल सके तो आगामी पीढ़ी के हाथों में गौरैया का सुखमय खिलखिलाता संसार सौंप सकेंगे। अन्यथा बहुत देर हो चुकी होगी और बच्चे पुस्तकों में गौरैया को विलुप्त पक्षियों के पाठ में पढ़ते हुए हमें उलाहना दे रहे होंगे।

अंतरराष्ट्रीय प्रसन्नता दिवस

अरुण कुमार डनायक

लेखक समाजसेवी हैं।

क्या भारत से ज्यादा अधिक खुश है अमेरिकी जनता?

विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट धर्म के आधार पर नहीं बनती । मुस्लिम बहुल समृद्ध खाड़ी देश आय और सामाजिक सहायता से बेहतर स्थान पाते हैं, जबकि पाकिस्तान जैसी कमजोर अर्थव्यवस्थाएँ नीचे रहती हैं। धार्मिक समुदायों से जुड़े लोग कभी-कभी अधिक संतुष्ट दिखते हैं, पर यह सार्वभौमिक नहीं। लोकतंत्र, पारदर्शी शासन , सुदृढ़ सामाजिक सुरक्षा, स्वास्थ्य, धर्मनिरपेक्षता, नागरिक स्वतंत्रता और उच्च सामाजिक विश्वास ही व्यापक संतोष एवं प्रसन्नता के स्थायी आधार हैं; धर्म सहायक है, अनिवार्य नहीं। अमेरिकी राजनीतिक दर्शन में 'पर्स्यूट ऑफ हैप्पीनेस- प्रसन्नता की खोज' का अर्थ केवल सुख भोगना नहीं, बल्कि ऐसा समाज बनाना है जहाँ हर व्यक्ति अपनी क्षमताओं के अनुसार जीवन चुन सके। जीवन, स्वतंत्रता और प्रसन्नता को अमेरिकी समाज में मूल अधिकार माना गया है। इसी कारण अमेरिका पूँजीवाद, उपभोक्तावाद, उदार लोकतंत्र और वैज्ञानिक नवाचार का एक विशिष्ट संगम बन गया है।

भूटान, जिसकी प्रेरणा से संयुक्त राष्ट्र ने 20 मार्च को 'अंतरराष्ट्रीय प्रसन्नता दिवस' घोषित किया, ने 1970 के दशक में विकास का मानक सकल घरेलू उत्पाद के बजाय 'सकल राष्ट्रीय प्रसन्नता' को माना। इस विचार ने दुनिया को यह सोचने पर विवश किया कि विकास का अंतिम लक्ष्य केवल आय नहीं, बल्कि जीवन की गुणवत्ता और मानवीय संतोष भी है। आँकड़ों के अभाव में भूटान हाल के वर्षों में विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट में नहीं रहा, पर उसका मॉडल आज भी प्रेरणा है। वर्ष 2026 के आंकड़े, जो अंतरराष्ट्रीय प्रसन्नता दिवस की पूर्व संध्या पर ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय के वेलबीइंग रिसर्च सेंटर और गैलप द्वारा जारी किए जाएंगे, इस वर्ष की थीम 'सोशल मीडिया और प्रसन्नता' है। यह सोशल मीडिया के प्रभाव और युवाओं में अकेलेपन को उजागर करेगी, जो पूर्व और पश्चिम दोनों के लिए प्रासंगिक है।

फिनलैंड लगातार आठ वर्षों से विश्व का सबसे खुशहाल देश है, साथ ही उसके पड़ोसी नॉर्डिक देश भी शीर्ष पर हैं । तानाशाही शासन प्रणाली वाले देश बहुत कम शीर्ष में आते हैं । वियतनाम एकमात्र कम्युनिस्ट देश है जिसे प्रथम 50 में स्थान मिला।

विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट धर्म के आधार पर नहीं बनती । मुस्लिम बहुल समृद्ध खाड़ी देश आय और सामाजिक सहायता से बेहतर स्थान पाते हैं, जबकि पाकिस्तान जैसी कमजोर अर्थव्यवस्थाएँ नीचे रहती हैं। धार्मिक समुदायों से जुड़े लोग कभी-कभी अधिक संतुष्ट दिखते हैं, पर यह सार्वभौमिक नहीं। लोकतंत्र, पारदर्शी शासन, सुदृढ़ सामाजिक सुरक्षा, स्वास्थ्य, धर्मनिरपेक्षता, नागरिक स्वतंत्रता और उच्च सामाजिक विश्वास ही व्यापक संतोष एवं प्रसन्नता के स्थायी आधार हैं; धर्म सहायक है, अनिवार्य नहीं। अमेरिकी राजनीतिक दर्शन में 'पर्स्यूट ऑफ हैप्पीनेस- प्रसन्नता की खोज' का अर्थ केवल सुख भोगना नहीं, बल्कि ऐसा समाज बनाना है जहाँ हर व्यक्ति अपनी क्षमताओं के अनुसार जीवन चुन सके। जीवन, स्वतंत्रता और प्रसन्नता को अमेरिकी समाज में मूल अधिकार माना गया है। इसी कारण अमेरिका पूँजीवाद, उपभोक्तावाद, उदार लोकतंत्र और वैज्ञानिक नवाचार का एक विशिष्ट संगम बन गया है। कुछ अमेरिकियों से बातचीत में मैंने पूछा-'क्या आप खुश हैं?' अधिकांश ने मुस्कुराकर उत्तर दिया-'हाँ।' यह उत्तर मेरे अध्ययन किए मनोवैज्ञानिक निष्कर्षों से मेल खाता है। इसके विपरीत, आम भारतीय अक्सर बातचीत की शुरुआत दुख-दर्द और जीवन की परेशानियों से करते हैं। यह दो सभ्यताओं-एक अत्यंत आधुनिक और दूसरी प्राचीन परंपराओं से गहराई से जुड़ी-के सामाजिक और भावनात्मक दृष्टिकोण का रोचक अंतर उजागर करता है। हाल के वर्षों में अमेरिका की प्रसन्नता रैंकिंग 2012 के 11वें स्थान से गिरकर 2025 में 24वें स्थान पर आ गई है। इसका प्रमुख कारण युवा पीढ़ी में आर्थिक असुरक्षा, काम के दबाव और बढ़ते अकेलेपन के कारण खुशी का तेजी से क्षरण है। आलोचकों का मानना है कि कई कंपनियाँ कार्यस्थल की 'खुशी' को व्यक्तिगत मानसिक परियोजना बनाकर कर्मचारियों से अधिक काम लेने का साधन भी बना लेती हैं। कई बार इन समस्याओं का समाधान केवल व्यक्तिगत मनोविज्ञान तक सीमित रखा जाता है, जबकि वास्तविक संतोष का आधार मजबूत सामाजिक संबंध होते हैं। फिर भी अमेरिकी समाज ने इन चुनौतियों को स्वीकार करते हुए शोध-आधारित समाधान खोजने की प्रक्रिया जारी रखी है। आज वहाँ खुशी एक सामाजिक-मनोवैज्ञानिक परियोजना बन गई है-जिसे मापा जाता है और बढ़ाने के प्रयास किए जाते हैं। 'हैप्पीनेस इंडस्ट्री '-माइंडफुलनेस, जीवन-कोचिंग और प्रेरक साहित्य-लाखों डॉलर का विशाल बाजार बन चुकी है। अकेलेपन की बढ़ती प्रवृत्ति के बावजूद, परिवार, समुदाय और चर्च अमेरिकी समाज में भावनात्मक सहारे के महत्वपूर्ण स्रोत बने हुए हैं। ईसाई आध्यात्मिक नेता ईसा मसीह के प्रेम, क्षमा और सहनशीलता के संदेश के माध्यम से सिखाते हैं कि सच्ची प्रसन्नता करुणा, सेवा और विनम्रता में निहित है। यही कारण है कि अमेरिकी सामाजिक जीवन में स्वयंसेवा, सामुदायिक सहयोग और दान की परंपरा भी काफी मजबूत दिखाई देती है। ऐसी ही शिक्षाएँ भारत की प्राचीन आध्यात्मिक परंपराओं में भी हैं, पर आधुनिक भारत के सार्वजनिक जीवन में धर्मगुरुओं की कथनी और करनी के बीच बढ़ती दूरी इन्हें व्यावहारिक जीवन से दूर करती जा रही है।

अमेरिका में प्रसन्नता की खोज व्यक्तिगत स्वतंत्रता और अवसरों से जुड़ी है, जबकि भारत की स्थिति अधिक जटिल, द्वंदात्मक और संक्रमणशील है।भारत एक ओर तीव्र आर्थिक आकांक्षाओं और आधुनिक जीवनशैली की ओर बढ़ रहा है, वहीं दूसरी ओर वह अपनी पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं, पारिवारिक मूल्यों और आध्यात्मिक दृष्टि से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। इसी कारण यहाँ भौतिक प्रगति और सांस्कृतिक संतुलन के बीच लगातार तनाव दिखाई देता है। सीमित संसाधनों के बावजूद परिवार और पारिवारिक व्यवसाय भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करते हैं। भारतीय दार्शनिक परंपरा-भगवद्गीता का कर्म, भक्ति, ज्ञान , ध्यान और बुद्धि योग का सिद्धांत, गौतम बुद्ध की तृष्णा-मुक्ति और महावीर का अपरिग्रह-बाहरी उपलब्धियों से अधिक आंतरिक संतुलन पर बल देते हैं। अमेरिकी सामाजिक व्यवहार में सकारात्मकता का सार्वजनिक प्रदर्शन भी दिखाई देता है-यहाँ काम की बात से पहले दिन, मौसम या सप्ताहांत पर हल्की बातचीत करना शिष्टाचार माना जाता है। अमेरिकी समाज में सकारात्मकता और प्रसन्नता की सार्वजनिक अभिव्यक्ति बहुत मुखर है-कभी-कभी यह भीतर की बेचैनी को भी छिपा लेती है; जबकि भारतीय समाज में धैर्य और सहनशीलता का अभ्यास अधिक गहरा दिखाई देता है। अमेरिका और भारत के बीच 'खुशी' की अवधारणाओं को समझने में प्रवासी भारतीय समुदाय एक अनोखा सेतु है। उनके जीवन में व्यक्तिगत उपलब्धि और पारिवारिक-सामुदायिक जुड़ाव का संतुलन दिखाई देता है-जहाँ आर्थिक प्रगति के साथ होली, दीपावली और गणेश चतुर्दशी जैसे धार्मिक उत्सव सामुदायिक आनंद का माध्यम बनते हैं।

विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट 2025 के अनुसार अमेरिका निर्धारित मानकों पर मजबूत है, जबकि भारत की रैंकिंग 126वें से सुधरकर 118वें स्थान पर पहुँची है। डिजिटल अर्थव्यवस्था, कल्याणकारी योजनाओं और ग्रामीण आय में वृद्धि इसके प्रमुख कारण हैं। फिर भी क्षेत्रीय तुलना में भारत पाकिस्तान (109वें) और नेपाल (92वें) से पीछे है।

आधुनिक मनोविज्ञान के अनुसार प्रसन्नता केवल सांख्यिकी, परिस्थितियों या व्यक्तिगत प्रयासों का परिणाम नहीं है। यह व्यक्तित्व, सामाजिक संबंधों और जीवन में अर्थ की अनुभूति का सूक्ष्म समन्वय है। यदि हम खुशी को क्षणिक सकारात्मक भाव मान लें तो तुलना एक दिशा में जाएगी, किंतु यदि इसे दीर्घकालिक संतोष और संबंधों की गहराई के रूप में देखें तो तस्वीर पूरी तरह बदल जाती है। शायद असली प्रश्न यह नहीं कि भारत या अमेरिका-कौन अधिक खुश है, बल्कि यह कि हम खुशी को किस रूप में परिभाषित करते हैं। संभव है खुशी न पूरी तरह भीतर हो, न बाहर-वह मनुष्यों के बीच के संबंधों में जन्म लेती है।

विश्व गौरैया दिवस पर विशेष

ऋतुपर्ण दवे

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

एक चिड़िया, अनेक चिड़िया, घर में क्यों नहीं आती चिड़िया

भला किसने गौरैया को अपने आंगन, घर, खिड़की पर चहचहाते नहीं देखा होगा? अभी इसका जवाब हाँ है, लेकिन जिस तरह के हालात बन रहे हैं उसमें आने वाली पीढ़ी के लिए इसका जवाब न भी हो सकता है। साथ ही हममें से लगभग पुराने दौर के सभी लोगों ने 1974 में निर्मित एक प्रसिद्ध एनिमेटेड लघु फिल्म जो 'एक अनेक और एकता' का हिस्सा है, जिसे विजया मुले और भीमसेन खुराना ने निर्देशित किया था देखी होगी। यह दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाली एकता का संदेश देने वाली एक लोकप्रिय क्लासिक फिल्म रही। बाद में कई वर्षों तक लोगों ने यह गीत भी सुना 'एक चिड़िया, अनेक चिड़िया, दाना चुगने आई चिड़िया' जिसे पंडित विनय चंद्र मौद्गल्य द्वारा लिखा गया। समझें कि गौरैया हमारे लिए कितनी खास थी और आज भी। लेकिन, आज उसके जीवन पर ही संकट आन पड़ा है।

याद कीजिए आज से 15-20 साल पहले हर घर की खिड़की के कांच पर चोंच मारती या दीवारों की दरारों के बीच शोर मचाती और कुछ नहीं तो रोशनदान में तिनके-तिनके जोड़कर घोंसले बनाती गौरैया जिसे आमभाषा में हम चिड़िया कहते हैं घासफूंस इकट्ठा कर घोसले बनाती दिख जाती थी। कुछ ही हफ्तों में उन घोसलों से मधुर सी चीं-चीं की आवाज कर अबोध बच्चे झांकते थे जैसे ही चिड़िया आती और अपने चोंच में इकट्ठा दाना बांट-बांट कर उन्हें खिलाती, कितना आनन्द की सुखद अनुभूति होती थी! आज यह सब लगभग न के बराबर हैं। गांव, शहर और घरों से गौरैया नदारत सी है। थोड़ी बहुत कहीं दिख जाती है तो दूर जंगलों में या सफर के दौरान बियावानो में। आखिर गौरैया ने हमसे क्यों मुंह मोड़ा? कभी जानने, समझने की हमने ईमानदार कोशिश की? शायद नहीं।

शुरू में तो इस पर ध्यान ही नहीं दिया कि इन्हें भी हिफाजत, स्वस्थ्य अनुकूल पारिस्थितिक तंत्र की जरूरत है। इन्हें भी रोजमर्रा की बदलती जैव विविधता प्रभावित करती है। इनके भी स्वास्थ्य की देखभाल और परेशानियों को समझने की जरूरत है। थोड़ा पहले जाना होगा जब भारत में नया-नया मोबाइल दस्तक दे रहा था। जैसे ही गाँव-गाँव, मोहल्ले-मोहल्ले टॉवर लगने लगे तो एक सच एकाएक सामने आने लगा कि टॉवरों के आसपास गौरैया सुबह-सुबह क्यों मरी मिलती हैं? शुरू में तो लोगों को कुछ समझ नहीं आया। लेकिन बाद में पता चला कि मोबाइल से निकलने वाला रेडिएशन इनके स्वास्थ्य और मस्तिष्क की तरंगों को बुरी तरह प्रभावित करता है जिससे मौत हो जाती है। आखिर नन्हीं सी जान जिसका कुल वजन 15 ग्राम से 32-35 ग्राम ही होता है कैसे इन तरंगों को झेल पाएंगी? बस धीरे-धीरे गौरैया घटने लगीं और और हम बेफिक्र रहे।

विलुप्ति की ओर पहुंचने वाली गौरैया के संरक्षण के उद्देश्य से हर साल 20 मार्च को विश्व गौरैया दिवस मनाने की शुरुआत 2010 में नेचर फॉरएवर सोसायटी संस्था यानी एनएफएस ने की। कृत्रिम घोंसलों छतों पर दाना-पानी रखने की शुरुआत को प्रोत्साहन दिया ताकि गौरैया वापस छतों पर आने लगें। लेकिन यह सच्चाई है कि 60 से 80 प्रतिशत आबादी घट ही गई। ऐसे में इस दिन को मनाकर

गौरैया की चहचहाट को वापस लाने की पुरजोर कोशिश की सार्थक पहल की जा रही है। नेचर यानी एनएफएस (भारत) और इको-सिस एक्शन फाउण्डेशन (फ्रांस) के सहयोग से 20 मार्च को विश्व गौरैया दिवस मनाया जाने लगा। इसकी शुरुआत नासिक के रहने वाले मोहम्मद दिलावर ने की। तभी से हर साल नए थीम के साथ इसे मनाने की परिपाटी शुरू हुई। मो. दिलावर के इस काम की हर कहीं प्रशंसा हुई। टाइम मैगजीन ने 2008 में ही इन्हें हीरोज ऑफ इन्वायरमेण्ट के तौर पर लिखा। 20 मार्च 2011 को पर्यावरण और गौरैया संरक्षण के कार्य में मदद करने वालों को सम्मानित करने के लिए एनएफएस द्वारा गुजरात के अहमदाबाद में गौरैया पुरुस्कार की शुरुआत भी हुई। उद्देश्य ऐसे लोगों को प्रोत्साहित करना था जो गौरैया और पर्यावरण में अपना सहयोग दे रहे हैं।

यकीनन गौरैया धरती पर एक वो छोटी सी जान है जो सब जगह पाई जाती है। इनकी संख्या में कमीं आना बताता है कि हमने पर्यावरण को किस तरह से बिगाड़ा जिससे असर इस छोटे से प्राणी तक पर आन पड़ा। वास्तव में रेडिएशन और प्रदूषण को लेकर चिंता के बजाए हम तकनीक अपग्रेड पर केन्द्रित हो गए। कभी झुंड में भोजन की तलाश में उडने वाली ये छोटा सा पंछी अब बहुत कम दिखता है। पेट भरने के लिए छोटे-छोटे दाने और कीड़े-मकोड़े पर निर्भर चिड़िया अपने जीवनकाल में अधिकमत 3 बार अण्डे देकर बड़ी हिफाजत देखरेख करती है।

इनको बचाने और संरक्षण के लिए छतों पर इनकी पसंद के दाने जैसे काकून, बाजरा, मक्का, गेहूं, चावल और पानी रखना चाहिए। कृत्रिम घोंसले टांगकर आकर्षित करना चाहिए। बड़ी संख्या में पेड़-पौधे लगें तो भी आएंगी। हरे-भरे पेड़-पौधों में रेडिएशन कहते हैं कम होता है। फिल्म रोबोट 2.0 हमारी आँखें खोलती है। इनकी संख्या घटने के अन्यान्य कारणों में तेजी से बढ़ता शहरीकरण, पुराने घरों का टूटना, हरे-भरे क्षेत्रों में कंक्रीट के जंगल, सड़कों और कांच के टावरों से गौरैया के घोंसले बनाने और भोजन प्राप्त करने के अवसर कम होते जा रहे हैं। इसके अलावा भोजन स्रोतों में कमीं सीसा रहित पेट्रोल से निकले जहरीले यौगिक उन कीटों की संख्या घटा रहे हैं जो गौरैया का भोजन हुआ करता था। आधुनिक खेती में रासायनिक कीटनाशकों के कारण कीड़ों की आबादी घट गई। अनेकों शोध ने साबित किया कि मोबाइल टावर और विकिरण, वाई-फाई और टावरों से निकलने वाले रेडिएशन गौरैया के प्रजनन, स्वास्थ्य प्रभावित करती है। विद्युत चुंबकीय तरंगें भी नेविगेशन और भोजन खोजने की क्षमता प्रभावित करती है। इससे भी इनकी आबादी घटी है।

एक बात और समझ आई कि जलवायु परिवर्तन, बढ़ते प्रदूषण और असंतुलित तापमान भी इनके जीवन को कठिन कर रही है। वायु प्रदूषण से सांस में बाधा तो कानफोड़ू ध्वनि प्रदूषण से साथी खोजने में जटिलता होती है। भारत में गौरैया महज पक्षी नहीं वो हमारे साझा इतिहास और संस्कृति का प्रतीक भी हैं। हिंदी में 'गोरैया' , तमिल में 'कुरुवी' और उर्दू में 'चिर्या' जैसे विभिन्न नामों से जाने जानी वाली गौरैया पीढ़ियों से दैनिक जीवन का हिस्सा रही। गांवों में अपने मधुर गीतों से वातावरण को ऊर्जा और खुशी भरने वाले कई पलों को इनकी चहचहाट ने यादगार बनाया है। इन चुनौतियों के बीच, गौरैयों के संरक्षण और उन्हें बढ़ाना, बचाना हमारे जीवन का हिस्सा होना चाहिए। कम से कम एक कृत्रिम घोसला, दाना-पानी का तो इंतजाम कर ही सकते हैं। इसमें सभी को तन्मयता से जुटना पड़ेगा वरना एक थी चिड़िया, अनेक थी चिड़िया, विकास के हत्थे चढ़ गई चिड़िया कहना पड़ेगा।

जहाँ माधुरी नाचीं, सारा रोईं, प्रियंका झुकीं अब बजट भी मेहरबान

डॉ. शेफाली चतुर्वेदी
लेखक पत्रकार हैं।

सोचिए एक पल के लिए, भारत का सबसे बड़ा पर्यटन उद्योग न ताजमहल है, न गोवा के समुद्र तट, न मनाली की बर्फ। वो है आस्था। वो है वो करोड़ों पैर जो हर साल धूल भरी सड़कों पर, पहाड़ी रास्तों पर, और भीड़ भरे रेलवे स्टेशनों पर चलते हैं – बस एक दर्शन के लिए। और अब, पहली बार, बजट 2026 ने इस आस्था को एक आर्थिक नीति की भाषा दी है।
यह कोई छोटी बात नहीं है।

प्रशाद योजना हो, स्वदेश दर्शन 2.0 हो या सिटी इकॉनोमिक रिजन्स के लिए 5,000 करोड़ प्रति क्षेत्र का आवंटन हो रहा है। सरकार कह रही है कि तीर्थ नगरियां अब केवल श्रद्धा का पता नहीं, विकास का नक्शा भी बनेंगी। 15 हेरिटेज डेस्टिनेशन, 10,000 टूरिस्ट गाइड, डिजिटल नॉलेज ग्रिड – ये आँकड़े नहीं, एक नई सोच के संकेत हैं।

अब ज़रा राजस्थान के चूरू जिले में चलिए। सालासर बालाजी – जिसे कुछ दशक पहले शायद राष्ट्रीय नक्शे पर ढूँढना पड़ता था,आज लाखों श्रद्धालुओं की पहली पुकार है। हनुमानजी के इस दरबार में अब सिर्फ माथा टेकने वाले नहीं आते, सेलिब्रिटी भी आते हैं, रातभर चलने वाले जागराते होते हैं जिनकी आवाज़ सोशल मीडिया पर गूँजती है, और इस गूँज के साथ-साथ वहाँ नई कॉलोनियाँ उठ रही हैं, धर्मशालाएँ भर रही हैं, और ज़मीन की कीमतें चुपचाप ऊपर चढ़ रही हैं।

यहीं पर रुककर सुनिए रियल एस्टेट और पर्यटन क्षेत्र के जानकार पुनीत आनंद को, जो इस पूरी तस्वीर को बड़ी सफाई से समझाते हैं, 'जैसे ही कोई सेलिब्रिटी या राजनीतिक नेता किसी धार्मिक स्थल पर जाता है, तो यह दो बातें साफ कहता है – एक, कि उस जगह का बुनियादी ढाँचा अब उच्च स्तर पर पहुँच चुका है। और दूसरा, कि उनके करोड़ों फॉलोअर्स के लिए उस जगह की जियोटैगिंग हो जाती है – एक ऐसी जगह जहाँ उनका चहेता आशीर्वाद लेने आता है। यह किसी भी एंडोर्समेंट से ज़्यादा असरदार है। देखिए न ,माधुरी दीक्षित का सालासर बालाजी जाना, प्रियंका चोपड़ा का अयोध्या दर्शन, या सारा अली खान की केदारनाथ यात्राएँ इन्होंने जितना फुटफॉल बढ़ाया, उतना शायद कोई सरकारी विज्ञापन नहीं बढ़ा सकता था। '

यह बात गहरी है। एक सेलिब्रिटी की एक तस्वीर – मंदिर की सीढ़ियों पर, हाथ जोड़े – लाखों लोगों के मन में एक सवाल जगाती है: 'अगर वो जा सकते हैं, तो मैं क्यों नहीं?' और यही सवाल भीड़ बनता है, भीड़ अर्थव्यवस्था बनती है।

उत्तराखंड में केदारनाथ की कहानी तो और भी गहरी है। 2013 में जो धाम तबाही का गवाह बना था, वो आज पुनर्जन्म की मिसाल है। रोपवे, हेलीपैड, चौड़ी सड़कें, सुव्यवस्थित आवास – और हर साल टूटते रिकॉर्ड तीर्थयात्रियों के। गौरीकुंड से सोनप्रयाग तक जो ज़मीन कभी बेकार लगती थी, वो आज निवेशकों की नज़र में है।

और उज्जैन? महाकाल महालोक कॉरिडोर ने 856 करोड़ में सिर्फ एक मंदिर नहीं बनाया एक पूरा शहर बदल दिया। भस्म आरती का डिजिटल प्रसारण, लाइव सांस्कृतिक कार्यक्रम, सेलिब्रिटी दर्शन उज्जैन अब एक स्पिरिचुअल ब्रांड है। पर्यटकों की संख्या तीन गुना बढ़ी, और उसके साथ बढ़ी ज़मीन की माँग, होटलों की बुकिंग, और एक पूरे क्षेत्र की आर्थिक धड़कन।

यही वो धागा है जो इन तीनों जगहों को जोड़ता है – और बजट 2026 उस धागे को और मज़बूत करने आया है। जब सरकार कनेक्टिविटी देती है, जब कलाकार और सेलिब्रिटी अपनी उपस्थिति से लाखों दिलों को प्रेरित करते हैं, जब एक रात का जागराता हज़ारों लोगों को किसी कस्बे तक खींच लाता है – तो वो कस्बा सिर्फ तीर्थ नहीं रहता, वो एक जीती-जागती अर्थव्यवस्था बन जाता है। और जो ज़मीन आज वहाँ सस्ती दिखती है, वो कल की सबसे समझदार खरीदारी साबित होगी। भगवान के दरवाज़े हमेशा से खुले थे। अब उन दरवाज़ों तक पहुँचने के रास्ते भी बन रहे हैं।

किले की प्राचीर से महाराजा भोज फाउंडेशन द्वारा आयोजित सूर्य अर्घ्य कार्यक्रम भव्य रूप से सम्पन्न हुआ

यह कार्यक्रम विगत 16 वर्षों से निरंतर आयोजित किया जा रहा है

धार। हिन्दू नववर्ष के पावन अवसर पर महाराजा भोज फाउंडेशन द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला सूर्य अर्घ्य पूजन कार्यक्रम इस वर्ष भी धार किले की प्राचीर पर भव्य रूप से सम्पन्न हुआ। यह कार्यक्रम विगत 16 वर्षों से निरंतर आयोजित किया जा रहा है।

संस्कृति संरक्षण के संकल्प के साथ आयोजित यह सामूहिक सूर्य अर्घ्य कार्यक्रम सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने एवं अपनी समृद्ध परंपराओं के प्रति दृढ़ निष्ठा का भाव जागृत करता है। विशेष रूप से नई पीढ़ी (Gen Z एवं मिलेनियल्स) को अपनी संस्कृति के मूल से परिचित कराने का यह प्रयास अब एक सशक्त परंपरा बन चुका है। कार्यक्रम में धार नगर के विभिन्न वर्गों एवं सभी आयु वर्ग के प्रबुद्धजन उत्साहपूर्वक सम्मिलित हुए।

कार्यक्रम में अतिथि के रूप में विशेष अतिथि सुधीर वर्मा, राकेश राजपुरोहित एवं डॉ. संदीप खटोड़ उपस्थित रहे। सभी अतिथियों ने हिन्दू नववर्ष की शुभकामनाएं प्रेषित कीं।

कार्यक्रम के मुख्य मार्गदर्शक ज्ञानेंद्र त्रिपाठी रहे। अतिथियों का स्वागत कार्यक्रम संयोजक अंजलि देवेन्द्र रावल, सहसंयोजक रेणुका पियुष गायकवाड़, सविता विष्णु पाटीदार, स्वप्नजा गिरीश बिड़कर एवं व्यवस्थापक शैलेन्द्र चौरसिया द्वारा किया गया। संस्था के अध्यक्ष दीपक बिड़कर ने कार्यक्रम की भूमिका प्रस्तुत की। आयोजन को सफल बनाने में राजेश गुप्ता, सुरेन्द्र ठाकुर, रिंकु मेरवानी, दिक्षांत तराणेकर, विकास गुणे, योगेश शर्मा दीपक सिगारे,विकास गुने, हार्दिक दांडक, सहित अनेक कार्यकर्ताओं का विशेष योगदान रहा।

इस अवसर पर तुलसी के पौधों का वितरण भी किया गया। पूजन कार्यक्रम पं. निलेश व्यास के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ तथा संचालन अंशुल शर्मा ने किया। अंत में आभार प्रदर्शन शैलेन्द्र चौरसिया द्वारा किया गया।

कार्यक्रम की जानकारी महाराजा भोज फाउंडेशन के अध्यक्ष दीपक बिड़कर द्वारा दी गई।

कोटि सूर्योपासना एवं जल गंगा संवर्धन अभियान का शुभारंभ

विरासत भी और विकास भी के संकल्प के साथ प्रदेश प्रगति पथ पर अग्रसर : केंद्रीय मंत्री

बैतूल। विक्रम संवत 2083 के नव वर्ष प्रतिपदा के अवसर पर विक्रमोत्सव के अंतर्गत जेएच कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम में केंद्रीय राज्यमंत्री जनजातीय कार्य दुर्गादास उईके मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। उन्होंने मां सरस्वती की विधिवत पूजा-अर्चना कर तथा अन्य अतिथियों द्वारा ब्रह्मध्वज स्थापना एवं वंदना के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। इसी अवसर पर जल गंगा संवर्धन अभियान का भी औपचारिक शुभारंभ भी किया गया। कार्यक्रम में संस्कृति विभाग अंतर्गत मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय, भोपाल के अक्षत वरवड़े एवं उनकी टीम द्वारा महाराजा विक्रमादित्य की न्यायप्रियता और वीरता पर आधारित आकर्षक नाट्य प्रस्तुति दी गई। केंद्रीय मंत्री श्री उईके एवं अन्य अतिथियों ने नाट्य दल का सम्मान कर सभी को भारत का नववर्ष विक्रम संवत पुस्तिका का वितरण भी किया। इस अवसर पर सीईओ जिला पंचायत अक्षत जैन, अपर कलेक्टर वंदना जाट, एसडीएम डॉ. अभिजीत सिंह, जिला शिक्षा अधिकारी व डीपीसी भूपेंद्र वरकड़े सहित बड़ी संख्या में नागरिक व विद्यार्थी उपस्थित रहे। केंद्रीय मंत्री ने सभी नागरिकों को विक्रम संवत नव वर्ष की शुभकामनाएं देते कहा कि भगवान सूर्य का ओज और तेज सभी के जीवन को आलोकित करे तथा सभी राष्ट्र और जनकल्याण में सहभागी बनें। उन्होंने कहा कि कालांतर में विदेशी आक्रांताओं द्वारा भारत की परंपरा और प्रतिष्ठा को क्षति पहुंचाने के प्रयास किए गए तथा हमारे मंदिरों, विश्वविद्यालयों और चिकित्सा पद्धति, काल गणना, वैदिक गणना एवं खगोल विज्ञान जैसी समृद्ध ज्ञान परंपराओं को कमजोर करने का काम किया गया। उन्होंने कहा कि आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में विरासत भी और विकास भी के संकल्प के साथ देश और प्रदेश भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों क्षेत्रों में प्रगति के पथ पर अग्रसर हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने समाज को गौरवशाली इतिहास से जोड़ते हुए उससे प्रेरणा लेकर आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त किया है। उन्होंने कहा कि यह भारतीय समृद्ध संस्कृति के नवजागरण का समय है तथा विक्रम संवत हिंदू नव वर्ष वैज्ञानिक आधार पर आधारित है। भावी पीढ़ी को अंग्रेजी नव वर्ष और हिंदू नव वर्ष के महत्व के प्रति जागरूक करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि सूर्योपासना आदिकाल से की जाती रही है और सभी जीवों में रक्त संचार, ऊर्जा एवं जीवन की गतिविधियां भगवान सूर्य की कृपा से संचालित होती हैं। सूर्य से ओज, तेज और वर्चस्व प्राप्त कर मनुष्य प्रगति की ओर अग्रसर होता है।

जल संरक्षण की दिशा में उल्लेखनीय कार्य– केंद्रीय मंत्री श्री उइके ने कहा कि जल संकट आज वैश्विक समस्या बन चुका है और भविष्य में जल के लिए संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। मुख्यमंत्री के नेतृत्व में प्रदेशभर में जल संरक्षण एवं संवर्धन के कार्य युद्ध स्तर पर किए जा रहे हैं। जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत बैतूल जिले में उल्लेखनीय कार्य हुए हैं, जिसके लिए जिले को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित भी किया गया है। उन्होंने बताया कि यह अभियान 19 मार्च से 30 जून तक संचालित किया जाएगा, जिसके तहत ग्राम पंचायतों एवं नगरीय निकायों में जल संरक्षण से संबंधित विभिन्न गतिविधियां आयोजित की जाएंगी।

यूथ कांग्रेस ने चाय बनाने के नुख्से को व्यंग्यात्मक रुप दिया

सोहागपुर। आज यूथ कांग्रेस के तत्वावधान में मुख्य बाजार में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बताए नुख्से को व्यंग्यात्मक रुप में प्रर्दशन किया। इस नुख्से को व्यंग्यात्मक प्रयोग करके असफल

बताकर कांग्रेस जनों ने नारेबाजी की। व्यंग्यात्मक चाय बनाने का प्रयोग करते रहने के उपरांत सोहागपुर कांग्रेस ने इनाम की घोषणा की । अगर कोई भक्त इस टेक्नीक से चाय बनाकर पिलाएगा लागा। उसे 21 हजार रुपए का तथा इस टेक्नीक की विधि को सार्वजनिक करेगा उसे 51 हजार रुपए दिए जाएंगे। इस अवसर पर पुष्पराज पटेल,यूथ कांग्रेस जिला अध्यक्ष हर्ष कटकवार, अजय ठाकुर, प्रशांत जयसवाल,रिषभ दीक्षित, गुड्डू चौधरी इरफान खान,भास्कर मांझी गणेश अहिरवार सागर साहू ,प्रतीक तिवारी वकील कार्तिक शर्मा मोहन कहार आशीष ठाकुर,नीरज चौधरी आदि उपस्थित थे।

झांसा देकर पूर्व पार्षद के यहां चोरी

सोहागपुर। माखन नगर में पूर्व पार्षद द्वारका प्रसाद चौधरी की एकता बूट हाउस पर एक अनजान व्यक्ति ने चप्पल दिखाने का कहा इसी बीच जब पूर्व पार्षद चप्पल दिखाने को मुड़े इतनी देरी में उक्त व्यक्ति ने पैसों की दराज से चुपके से बीस हजार रुपए उठा लिए। जब पूर्व पार्षद ने चप्पल दिखाई तो वह यह कहता चला गया कि मुझे लघुशंका आ रही है। मैं वापिस आता हूं।बाद में पूर्व पार्षद ने पैसों का दराज देखा तो पैसे नदारद मिले। बाद अपनी दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरे खंगाले तो पता चला कि ग्राहक ने चप्पल के बहाने पैसों पर हाथ साफ कर गया है। बाद में पूर्व पार्षद द्वारका प्रसाद अहिरवार ने माखन नगर पुलिस थाने में वीडियो की रिकार्डिंग देकर रिपोर्ट दर्ज कराई। ऐसे शातिरों से सावधान रहें।

ग्राम दानवाखेड़ा में स्वास्थ्य विभाग की टीम सक्रिय , स्थिति नियंत्रण में

बैतूल। गत दिनों बैतूल के दानवाखेड़ा गांव में दूषित पानी पीने से ग्रामीणों के बीमार होने की खबर प्रकाशित होने के बाद स्वास्थ्य महकमा जागा और कलेक्टर के निर्देश पर बैतूल के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मनोज हुरमाड़े ने टीम भेज कर स्थिति संभाली। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मनोज हुरमाड़े ने बताया कि 15 मार्च को जनपद घोड़ाडोंगरी के ग्राम दानवाखेड़ा में ग्रामीणों में त्वचा संबंधी रोग की सूचना प्राप्त होते ही तत्काल बीएमओ के नेतृत्व में 6 सदस्यीय मेडिकल टीम गठित कर ग्राम भेजी गई। टीम द्वारा मौके पर पहुंचकर ग्रामीणों की जांच कर आवश्यक उपचार प्रदान किया गया। उन्होंने बताया कि 6 बच्चों को एहतियातन एम्बुलेंस के माध्यम से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र घोड़ाडोंगरी में भर्ती कर उपचार किया गया, जहां सभी बच्चों की स्थिति सामान्य है। 18 मार्च को डॉ. सुमित जाटव, चिकित्सा अधिकारी के नेतृत्व में पुनः ग्राम में स्वास्थ्य परीक्षण एवं उपचार किया गया। जांच के दौरान कुल 28 मरीज पाए गए, जिनमें खुजली (स्केबीज) के 19 मरीज तथा सर्दी-खांसी, बुखार एवं अन्य बीमारियों से पीड़ित 9 मरीज शामिल हैं। मेडिकल टीम ग्राम में ही रहकर प्रभावित ग्रामीणों का उपचार कर रही है तथा वर्तमान में कोई भी गंभीर मरीज नहीं है। सीएमएचओ डॉ. हुरमाड़े ने बताया कि एहतियात के तौर पर स्वास्थ्य विभाग की टीम ग्राम में सतत निगरानी रखते हुए जांच एवं उपचार कर रही है। टीम द्वारा पीने के पानी का क्लोरीनेशन भी कराया जा रहा है तथा ग्रामीणों को जलजनित बीमारियों से बचाव के संबंध में आवश्यक सलाह दी जा रही है। मेडिकल टीम का जांच रोस्टर भी निर्धारित किया गया है।

391 अखंड ज्योत प्रज्वलन के साथ प्रारंभ हुआ चैत्र नवरात्र महोत्सव

बैतूल। बैतूल गंज स्थित बीजासनी माता मंदिर में 19 मार्च 2026 से चैत्र नवरात्र महोत्सव धूमधाम से प्रारंभ हुआ। मंत्रोच्चार के साथ पृथ्वी पूजन, गौरी गणेश पूजन एवं शिव परिवार का पूजन किया गया, स्वस्तिवाचन किया गया, बीजासनी माता के चरणों की स्तुति तथा मंत्रोच्चार के साथ 391 अखंड ज्योत भक्तों द्वारा प्रज्वलित की गई जिसमें घी एवं तेल की ज्योत शामिल हैं। ज्योत प्रज्वलन के उपरांत विधिविधान से पूजन कर घट स्थापना की गई। इस दौरान देवी देवताओं, नवग्रह देवता, नवदुर्गा माता, ईष्ट देवता, ईष्ट देवी, कुलदेवता, कुलदेवी सप्तमातृका माता, सप्तघृत माता, षोडश मातृका माता, चौसठ योगिनी माता, पितृदेवता, ग्राम देवता, गुरु देवता, गौरी गणेश जी, शिव परिवार, लक्ष्मी नारायण भगवान, ब्रह्मा जी, सावित्री माता, गायत्री माता, सूर्यनारायण देवता, काल भैरव देवता सबका आव्हान करके उपस्थित श्रद्धालुओं के द्वारा मां के चरणों में प्रार्थना करवा कर नारियल की भेंट चढ़ाकर मनोकामना पूरी करने हेतु अर्जी लगाई गई जिसके पश्चात माता का आव्हान कर समस्त देवी देवताओं को भोग लगाया गया , आरती की गई।

गुड़ी पड़वा नई ऊर्जा, नई आशा और सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है : जिला अध्यक्ष महंत निलेश भारती

भाजपा जिला कार्यालय पर हिन्दू नववर्ष गुड़ी पड़वा महोत्सव मनाया,धाकड़ इन्दर सिंह चौधरी कबीर पंथी टीम सागौर द्वारा मनमोहक भजनों की प्रस्तुति दी

धार। हिन्दू नववर्ष गुड़ी पड़वा धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्परा स्वरूप चैत्र नवरात्रि प्रथम दिन गुरुवार को भाजपा जिला कार्यालय पर उत्सव मनाया गया जिसमें मुख्य अतिथि पूर्व केंद्रीय मंत्री विक्रम वर्मा, भाजपा जिला अध्यक्ष महंत निलेश भारती, विधायक नीना वर्मा, जिला पत्रकार संघ अध्यक्ष पंडित छोटू शास्त्री समेत विभिन्न समाज प्रमुख द्वारा भारत माता के चित्र पर माल्यार्पण दीप प्रज्वालित व गौ माता पूजन कर हिन्दू नववर्ष उत्सव आरंभ किया गया।

धाकड़ इन्दर सिंह चौधरी कबीर पंथी टीम सागौर द्वारा मनमोहक भजनों की प्रस्तुति दी। भाजपा जिला कार्यालय को प्राचीन सांस्कृतिक परम्पराओं के अनुरूप सजाया गया व पूर्व संध्या पर आकर्षक विद्युत सज्जा भी की गई।

भारत प्राचीन सभ्यता और समृद्ध परम्पराओं वाला देश है, जहाँ वर्ष की शुरुआत केवल एक कैलेण्डर परिवर्तन नहीं है, बल्कि यह पर्व एक सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक उत्सव के रूप में मनाया जाता है। हिन्दू धर्म में नया वर्ष चैत्र माह की शुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ होता है, जिसे हिन्दू नववर्ष कहा जाता है। इस दिन को देश में अलग-अलग क्षेत्रों में अलग नामों से मनाया जाता है। यह पर्व नई शुरुआत, आशा, समृद्धि और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक माना जाता है।

भाजपा जिला अध्यक्ष महंत निलेश भारती ने कहा कि यह पावन पर्व हमारी समृद्ध भारतीय संस्कृति के अनुसार नववर्ष की शुरुआत का प्रतीक है। यह दिन हमें नई ऊर्जा, नई आशा और सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। हिन्दू धर्म ग्रन्थों के अनुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का दिन अत्यन्त शुभ और पवित्र माना जाता है। मान्यता है कि इसी दिन सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना प्रारम्भ की थी। इसलिए यह दिवस सृष्टि के आरम्भ और नये जीवन के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। एक अन्य मान्यता के अनुसार महान राजा विक्रमादित्य ने इसी दिन से विक्रम संवत् की स्थापना की थी। विक्रम संवत् भारत का एक प्राचीन पंचाग है, जो आज भी धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यों में उपयोग किया जाता है। ऐतिहासिक रूप से भी यह दिन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त यह भी कहा जाता है कि भगवान राम के राज्याभिषेक के बाद अयोध्या में नये युग की शुरुआत का प्रतीक भी यही दिन माना गया।

भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि हिन्दू नववर्ष गुड़ी पड़वा पर्व उत्सव पर भाजपा प्रदेश मंत्री जयदीप सिंह पटेल जिला पंचायत अध्यक्ष सरदार सिंह मेड़ा भाजपा जिला महामंत्री देवेंद्र सोनोने व राकेश पटेल सिख समाज गुरुद्वारे से ज्ञानी मंजीत सिंह खालसा दरबार सिंह वरिष्ठ नागरिक प्रमोद टोंगिया प्रबुद्धजन वल्लभ अग्रवाल मोहित तांतेड़ सहित भाजपा वरिठ नेता जिला पदाधिकारी जिले के मंडल अध्यक्ष मोर्चा जिला अध्यक्ष प्रकोष्ठ जिला संयोजक पत्रकारगण उपस्थित रहें।

पिपरिया में सत्र न्यायालय के विद्वान न्यायाधीश ने विख्यात फोर्सिथ रिसोर्ट के मैनेजर निपुण महतो वर्ल्ड लाइफ नेचरलिस्ट फैजान अंसारी की जमानत अर्जी खारिज की

सोहागपुर। पिपरिया में माननीय सत्र न्यायालय के विद्वान न्यायाधीश ने विख्यात फोर्सिथ रिसोर्ट मढ़ई के मेनेजर निपुण महतो एवं वर्ल्ड लाइफ़ नेचुरलिस्ट फैजान अंसारी की जमानत अर्जी याचिका खारिज कर दी है। उल्लेखनीय है इसके पूर्व भी सोहागपुर की प्रथम श्रेणी जेएमएफसी न्यायालय के विद्वान न्यायाधीश तेजदीप सिंह ने जमानत अर्जी याचिका खारिज कर दी थी। उसके उपरांत पिपरिया न्यायालय में मध्यप्रदेश के विख्यात उच्च न्यायालय केवकील सरदार सुरेन्द्र सिंह एवं सोहागपुर के प्रतिष्ठित अधिवक्ता परिवार के वकील प्रतीक तिवारी ने जमानत अर्जी याचिका दायर की थी। इस संबंध में वकील प्रतीक तिवारी ने इस प्रतिनिधि को बताया कि पिपरिया में माननीय सत्र न्यायालय में भी दोनों की जमानत अर्जी याचिका दायर की थी। जिसमें सत्र न्यायालय के विद्वान न्यायाधीश राजेश कुमार अग्रवाल ने वकीलों को बहस सुनने के बाद जमानत की अर्जी याचिका यह कहकर खारिज कर दी कि मामला गंभीर है। एवं अभी मामले की विवेचना जारी है। इस कारण जमानत अर्जी याचिका खारिज की जाती है।अब विख्यात फोर्सिथ रिसोर्ट सतपुड़ा टाइगर रिजर्व मढई सोहागपुर में स्थित है कि मेनेजर निपुण महतो एवं वर्ल्ड लाइफ़ नेचुरलिस्ट फैजान अंसारी की जमानत अर्जी याचिका उच्च न्यायालय जबलपुर में लगाई जाने के संकेत मिले हैं।

ज्ञातव्य है कि विगत दिनों विश्व विख्यात सतपुड़ा टाइगर रिजर्व के 44 एकड़ में फैले फोर्सिथ रिसोर्ट में उत्कृष्टता से करीबन 12 रूम्स है। जिसका एक दिन का किराया 15 से लेकर 25 हजार तक है। लेकिन सीज़न के समय इसका किराया करीबन 40हजार के आस-पास हो जाता है।इसका संचालन मुम्बई से किया जाता है। जिसका (संचालन) प्रबंधक अदिति मोदी लूनिया करती है।

उल्लेखनीय है कि फोर्सिथ रिसोर्ट के मैनेजर निपुण महतो एवं लाइफ़ नेचुरलिस्ट फैजान अंसारी को सतपुड़ा टाइगर रिजर्व मढई के अधिकारियों ने वन्य प्राणी संरक्षण अधिनियम 1972 के तहत गिरफ्तार किया गया था । जिसमें फोर्सिथ रिसोर्ट में वन अमले को कई वन्यजीव अवयव मिले थे। उस रिसोर्ट परिसर में चीतल के 4 सींग, सेही के 4 कांटे और सर्प की 2 कांचलियां पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए डिस्प्ले में रखी गई थी। आखिर सतपुड़ा टाइगर रिजर्व मढई के अधिकारियों ने ऐसे गंभीर मामले आरोपियों के उक्त स्थान पर मौजूद होने के बाद भी दोनों आरोपियों को गिरफ्तार क्यों नहीं किया था।

यह सबसे बड़ा सवाल सोहागपुर में चर्चा का विषय बना हुआ है। आखिर क्यों अधिकारियों ने एक सप्ताह के बाद गिरफ्तार किया। जिस प्रकार फोर्सिथ रिसोर्ट सतपुड़ा टाइगर रिजर्व के कर्मचारी दोषी हैं। उतना सतपुड़ा टाइगर रिजर्व मढ़ई के अधिकारी में कटघरे में खड़े दिखाई दे रहें। इस मामले में राजधानी स्थित प्रदेश स्तरीय अधिकारियों को इस संगीन मामले में सतपुड़ा टाइगर रिजर्व मढई के अधिकारियों से संज्ञान लेना चाहिए। इस कारण मामले की उच्च स्तरीय जांच होनी चाहिए। ताकि दूध का दूध पानी का पानी हो जाए। क्या यह संभव नहीं है कि यदि फोर्सिथ रिसोर्ट में पहले से उक्त वन्य प्राणियों के अव्यय डिस्प्ले में रखे रहते हो और सतपुड़ा टाइगर रिजर्व मढई के भारी भरकम अधिकारियों को भनक भी न लगी हो? यह सतपुड़ा टाइगर रिजर्व मढई की अधिकारियों की कार्यवाही संदिग्धता दर्शाती है क्योंकि एक आम इंसान किसी छोटे वन्य प्राणी की हत्या कर देता है। ऐसी परिस्थिति क्या सतपुड़ा टाइगर रिजर्व के अधिकारी उसे छोड़ देते।

इस मामले में आरोपियों के अधिवक्ता प्रतीक तिवारी ने बताया कि हमने इस मामले में माननीय न्यायालय से आग्रह किया था कि ऐसे मामले में तत्काल गिरफ्तारी होती है।फिर सतपुड़ा टाइगर रिजर्व मढ़ई ने एक सप्ताह से अधिक का समय क्यों लगाया।

संक्षिप्त समाचार

कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने नागरिकों की समस्याओं का किया निराकरण

रायसेन, (निप्र)। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित जनसुनवाई में कलेक्टर श्री अरुण कुमार विश्वकर्मा द्वारा आमजन की समस्याओं की सुनवाई कर उनका निराकरण किया गया। कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने जनसुनवाई में आए आवेदकों से उनकी समस्याओं पर गंभीरतापूर्वक चर्चा करते हुए निराकरण किया। कुछ प्रकरणों में उन्होंने संबंधित अधिकारियों को शीघ्र आवश्यक कार्यवाही कर निराकरण हेतु निर्देशित किया। साथ ही अन्य तहसीलों से आए आवेदकों की समस्याओं के निराकरण हेतु वीसी के माध्यम से निर्देशित किया। जनसुनवाई में लगभग 146 आवेदन प्राप्त हुए। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में जिला पंचायत सीईओ श्री कमल सोलंकी अपर कलेक्टर श्री मनोज कुमार उपाध्याय, सहायक कलेक्टर श्री कुलदीप पटेल एवं जिला अधिकारी उपस्थित रहे। अनुभागों से एसडीएम, जनपद सीईओ, सीएमओ सहित अन्य अधिकारी वीडियो कॉफ्रेंस के माध्यम से जनसुनवाई में उपस्थित रहे।

कलेक्टर-एसपी ने नर्मदा आवंलीघाट की व्यवस्थाओं का लिया जायजा

सीहोर, (निप्र)। भूतड़ी अमावस्या पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु नर्मदा आंवलीघाट पहुंचते है। आंवलीघाट पर श्रद्धालुओं के लिए बेहतर व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के लिए कलेक्टर श्री बालागुरू के. तथा एसपी श्री दीपक कुमार शुक्ला ने आवंलीघाट पहुंचकर भूतड़ी अमावस्या के लिए की गई तैयारियों का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने निर्देश दिए कि घाट पर स्नान के लिए श्रद्धालु अधिक गहराई में न जाए, इसके लिए पर्याप्त व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जाएं और निगरानी रखी जाए। उन्होंने कहा कि आंवलीघाट पर जिन अधिकारियों, पुलिस और होमगार्ड के जवानों तथा गोताखोरों की ड्यूटी लगाई गई है वे समय पर अपनी ड्यूटी पर उपस्थित रहें और मुस्तैदी से अपनी ड्यूटी करें तथा घाट पर निगरानी बनाए रखें। उन्होंने कहा सभी अधिकारी एक-दूसरे से सतत संपर्क बनाएं रखें और कंट्रोल रूम को भी निरंतर सक्रिय रखा जाए। उन्होंने यह भी कहा कि घाट पर वॉटर बोट की भी उपलब्धता सुनिश्चित कर ली जाए और आंवलीघाट पर श्रद्धालुओं का आवागमन सुगम बनाए रखा जाए। उन्होंने निर्देश दिए कि घाट पर आने वाले वाहनों की पर्याप्त पर्किंग व्यवस्था सुनिश्चित की जाए ताकि यातायात बाधित न हो। निरीक्षण के दौरान एसडीएम श्री दिनेश सिंह तोमर, डिप्टी कलेक्टर श्री प्रेमसिंह गौड़ सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

अवैध शराब के विरूद्ध पुलिस द्वारा की गई कार्रवाई

सीहोर, (निप्र)। एसपी श्री दीपक कुमार शुक्ला द्वारा जिले के सभी थाना प्रभारियों को जिले में अवैध शराब के विक्रय एवं परिवहन रोक लगाने और संबंधित व्यक्तियों के विरुद्ध कार्यवाही करने के निर्देश दिये गये हैं। जिसके तहत पुलिस द्वारा निरंतर कार्यवाही की जा रही है। इसी क्रम में जिले की पुलिस द्वारा फरवरी माह में जिले के अनेक क्षेत्रों में अवैध मदिरा के निर्माण, परिवहन एवं विक्रय पर प्रभावी रोकथाम के लिए सघन चेकिंग की गई और कार्यवाहियां भी की गईं। पुलिस विभाग द्वारा जानकारी दी गई कि फरवरी माह में अवैध मदिरा के विरूद्ध 73 प्रकरण कायम किए गए, जिनमें 1,72,026 रूपये कीमत की 455 लीटर मदिरा जब्त की गई और आबकारी अधिनियम के तहत कार्रवाई की गई।

राष्ट्रीय एचपीवी टीकाकरण अभियान के तहत जिले की 500 बालिकाओं को लगाई गई एचपीवी की वैक्सीन

सीहोर, (निप्र)। शासन के निर्देशानुसार स्वास्थ्य विभाग द्वारा राष्ट्रीय ह्यूमन पैपिलोमा वायरस टीकाकरण कार्यक्रम के तहत 14 से 15 वर्ष की बालिकाओं का टीकाकरण किया जा रहा है। सीएमएचओ डॉ सुधीर कुमार डेहरिया ने बताया कि सीहोर जिले की सभी स्वास्थ्य संस्थाओं में भी एचपीवी टीकाकरण कार्यक्रम के तहत बालिकाओं को एचपीवी की वैक्सीन लगाई जा रही है। इसी क्रम में 17 मार्च को जिले की सभी स्वास्थ्य संस्थाओं में जिले की 500 बालिकाओं को एचपीवी की वैक्सीन लगाई गई। सीएमएचओ डॉ सुधीर डेहरिया ने बताया कि सर्वाइकल कैंसर भारत में महिलाओं में होने वाला दूसरा सबसे जानलेवा कैंसर है। इस गंभीर बीमारी की रोकथाम के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा यह राष्ट्रव्यापी एचपीवी (ह्यूमन पैपिलोमा वायरस) टीकाकरण अभियान प्रारंभ किया गया है। यह अभियान आगामी तीन माह तक पूरे देश में संचालित किया जाएगा।

नर्मदा संरक्षण को जनआंदोलन बनाने का आह्वान

जनप्रतिनिधि और सामाजिक संगठन एक दिवसीय प्रशिक्षण सह जागरूकता कार्यक्रम में हुआ नदी संरक्षण

नर्मदापुरम, (निप्र)। माँ नर्मदा के संरक्षण और नदी के प्रति समाज की जिम्मेदारी को लेकर नर्मदापुरम के कोरीघाट स्थित नर्मदा रिवर व्यू में रेवा सेवा समागम का आयोजन किया गया। मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद और नर्मदा समग्र के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस एक दिवसीय प्रशिक्षण सह जागरूकता कार्यक्रम में संत-महात्माओं, जनप्रतिनिधियों, पर्यावरणविदों, सामाजिक संगठनों और युवाओं नर्मदा समग्र से न्याससी नर्मदा सदस्य सच्चानंद वासवानी, बृजकिशोर भार्गव, कार्तिक सप्रे उपस्थित रहे। कार्यशाला का संचालन श्री मनोज जोशी द्वारा किया गया। कार्यशाला में नर्मदा संरक्षण को जन आंदोलन बनाने का संकल्प लिया। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उइके ने कहा कि नर्मदा केवल एक नदी नहीं बल्कि प्रदेश की जीवनरेखा है। उन्होंने कहा कि नर्मदा के संरक्षण के लिए सरकार के प्रयासों के साथ-साथ समाज की सक्रिय भागीदारी भी जरूरी है। यदि हर व्यक्ति अपने स्तर पर नदी और उसके तटों को स्वच्छ रखने का संकल्प ले, तो नर्मदा को प्रदूषण से मुक्त रखना संभव है। उन्होंने युवाओं और सामाजिक संगठनों से नर्मदा संरक्षण के लिए आगे आने की अपील की। कार्यक्रम की अध्यक्षता मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष (राज्यमंत्री दर्जा) मोहन नागर ने की। अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि नर्मदा संरक्षण केवल प्रशासन या सरकार की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह पूरे समाज का दायित्व है। उन्होंने कहा कि नर्मदा को बचाने के लिए जन जागरूकता और जनसहभागिता को बढ़ाना होगा। जब समाज स्वयं आगे आएगा, तभी नर्मदा संरक्षण का अभियान स्थायी रूप से सफल हो सकेगा। विशिष्ट अतिथि के रूप में राज्यसभा सांसद माया नारोलिया ने कहा कि नर्मदा नदी प्रदेश की आस्था, संस्कृति और अर्थव्यवस्था से जुड़ी हुई है। उन्होंने कहा कि नदी का संरक्षण आने वाली पीढ़ियों के भविष्य से जुड़ा विषय है। यदि आज हम नर्मदा के प्रति संवेदनशील नहीं होंगे तो आने वाली पीढ़ियों को इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा। सोहागपुर विधायक विजयपाल सिंह ने भी अपने विचार रखते हुए कहा कि नर्मदा संरक्षण में समाज की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए नदियों, जंगलों और जल स्रोतों का संरक्षण जरूरी है। यदि हम प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर नहीं चलेंगे तो जल संकट और पर्यावरणीय समस्याएं और गंभीर हो सकती हैं। कार्यक्रम में आध्यात्मिक मार्गदर्शन देते हुए महंत स्वामी अनंतवन महाराज ने कहा कि माँ नर्मदा भारतीय संस्कृति और आस्था का प्रतीक है। उन्होंने लोगों से अपील की कि नर्मदा को पवित्र और स्वच्छ बनाए रखने के लिए अपने दैनिक जीवन में भी जागरूकता लाएं। उन्होंने कहा कि नदी में कचरा या प्लास्टिक फेंकना केवल पर्यावरण को नुकसान पहुंचाना नहीं बल्कि हमारी आस्था का भी अपमान है। इसी क्रम में नरसिंह विजेंद्र सरस्वती दंडी स्वामी महाराज ने नर्मदा की आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि नर्मदा केवल जलधारा नहीं बल्कि भारतीय सभ्यता की धरोहर है। उन्होंने कहा कि नर्मदा के तटों पर सदियों से संत-महात्माओं की साधना होती रही है और यह नदी समाज को आध्यात्मिक ऊर्जा प्रदान करती है। कार्यक्रम की रूपरेखा मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के कार्यपालक निदेशक डॉ. बकुल लाड़ द्वारा प्रस्तुत की गई। उन्होंने नर्मदा संरक्षण के लिए परिषद द्वारा किए जा रहे प्रयासों की जानकारी देते हुए कहा कि समाज की सक्रिय भागीदारी के बिना नदी संरक्षण का लक्ष्य पूरा नहीं हो सकता। उन्होंने बताया कि परिषद द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में जागरूकता कार्यक्रम, प्रशिक्षण और जनअभियान चलाकर लोगों को नर्मदा संरक्षण के लिए प्रेरित किया जा रहा है। रेवा सेवा समागम के दौरान आयोजित तकनीकी सत्रों में विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन दिया गया। नर्मदा जलग्रहण क्षेत्र में जैविक और प्राकृतिक कृषि के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि रासायनिक खेती से न केवल मिट्टी की गुणवत्ता प्रभावित होती है बल्कि जल स्रोत भी प्रदूषित होते हैं। उन्होंने किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने की सलाह दी, जिससे मिट्टी की उर्वरता बनी रहे और नदियों में रासायनिक प्रदूषण कम हो। ब्रजकिशोर भार्गव ने सामाजिक सहभागिता के महत्व पर चर्चा करते हुए कहा कि नर्मदा संरक्षण का अभियान तभी सफल होगा जब समाज के हर वर्ग की इसमें भागीदारी होगी। उन्होंने कहा कि गांव-गांव में जागरूकता फैलाकर लोगों को नदी संरक्षण के लिए प्रेरित करना जरूरी है। मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष मोहन नागर ने भी एक सत्र में नर्मदा नदी और उसकी सहायक नदियों के संरक्षण पर विस्तार से विचार रखे। उन्होंने कहा कि यदि सहायक नदियों और जल स्रोतों का संरक्षण नहीं किया गया तो नर्मदा के अस्तित्व पर भी खतरा बढ़ सकता है। इसलिए जलग्रहण क्षेत्र में व्यापक स्तर पर संरक्षण कार्यों की आवश्यकता है। घाट संस्कृति और घाट संरक्षण के विषय पर मार्गदर्शन देते हुए कहा कि नर्मदा के घाट केवल धार्मिक स्थल नहीं बल्कि सांस्कृतिक विरासत भी हैं।

जिले में नरवाई में आग लगाने पर धारा 163 के तहत प्रतिबंध

रायसेन, (निप्र)। जिले में जनसामान्य के हित, सार्वजनिक सम्पत्ति, पर्यावरण एवं लोक व्यवस्था को बनाए रखने के उद्देश्य से कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा के निर्देशानुसार अतिरिक्त जिला दण्डाधिकारी श्री मनोज उपाध्याय द्वारा सम्पूर्ण जिले की भौगोलिक सीमा में खेत में खड़े गेहू के डंठलों (नरवाई) में आग लगाने पर तत्काल प्रभाव से भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 अंतर्गत धारा 163 के तहत तत्काल प्रभाव से प्रतिबंध लगाया गया है। यह प्रतिबंध आगामी दो माह तक जिले की सम्पूर्ण राजस्व सीमा में प्रभावशील रहेगा। इस आदेश का उल्लंघन भारतीय न्याय संहिता की धारा 223 के अंतर्गत दण्डनीय होगा। उल्लेखनीय है कि जिले की राजस्व सीमा में गेहॅू की फसल की कटाई के पश्चात अगली फसल के लिए खेत तैयार करने के लिए बहुसंख्यक किसानों द्वारा अपनी सुविधा के लिए खेत में आग लगाकर गेहॅू के डंठलों को नष्ट कर खेत साफ किया जाता है। आग लगाने से हानिकारक गैसों का उत्सर्जन होता है, जिससे पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। इसे नरवाई में आग लगाने की प्रथा के नाम से भी जाना जाता है। जिले में खलियानों से गुजर रही बिजली लाईनों पर कुछ कृषकों द्वारा अवैध वायर अथवा तार लगाकर बिजली का उपयोग किए जाने से तारों से स्पार्किंग होने से भी कई बार फसलों में आगजनी की घटनाएं घटित होने की संभावना बनी रहती है। नरवाई में आग लगाना खेती के लिए नुकसानदायक होने के साथ ही पर्यावरण की दृष्टि से भी हानिकारक है।

इसके कारण विगत वर्षो में गंभीर अग्नि दुर्घटनाएं घटित हुई हैं तथा व्यापक सम्पत्ति की हानि हुई है। साथ ही बढ़ते जल संकट में इससे बढ़ोत्री तो होती ही है, साथ ही कानून व्यवस्था के लिए भी विपरीत स्थितियां निर्मित होती है। खेत की आग के अनियंत्रित होने पर जनसम्पत्ति व प्राकृतिक वनस्पति, जीव-जन्तु आदि नष्ट हो जाते हैं। साथ ही खेत की मिट्टी में प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले लाभकारी सूक्ष्म जीवाणु इससे नष्ट होते हैं जिससे खेत की उर्वरा शक्ति भी धीरे-धीरे घट रही है और उत्पादन प्रभावित हो रहा है। नरवाई जलाने से हानिकारक गैसों का उत्सर्जन होता है जिससे पर्यावरण को नुकसान पहुंचता है।

किसान कल्याण वर्ष - 2026 - कृषि क्षेत्र में केंद्र सरकार की योजनाओं में उल्लेखनीय प्रगति

सीहोर, (निप्र)। मध्यप्रदेश में वर्ष 2026 को किसान कल्याण वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। इसका उद्देश्य किसानों की आय बढ़ाना, कृषि को अधिक लाभकारी बनाना तथा खेती से जुड़ी योजनाओं का लाभ अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचाना है। राज्य सरकार द्वारा कृषि, सिंचाई, फसल विविधीकरण और आधुनिक तकनीकों के उपयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसके साथ ही किसानों को विभिन्न योजनाओं के माध्यम से आर्थिक और तकनीकी सहायता भी प्रदान की जा रही है। प्रदेश सरकार द्वारा न केवल प्रदेश के कृषि बजट का लक्ष्य के अनुरूप समुचित उपयोग किया जा रहा है बल्कि केन्द्र सरकार द्वारा प्रवर्तित कृषि योजनाओं में भी लक्ष्यों को पूरा किया जा रहा है।

केंद्र प्रवर्तित योजनाओं के अंतर्गत सीहोर जिले में वर्ष 2025-26 में कृषि विभाग द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों में लक्ष्य के अनुरूप उल्लेखनीय प्रगति दर्ज की गई है। फिजिकल प्रोग्रेस रिपोर्ट के अनुसार दलहन एवं तिलहन फसलों के क्लस्टर प्रदर्शन, क्रॉपिंग सिस्टम आधारित प्रदर्शन तथा प्रशिक्षण गतिविधियों में बेहतर उपलब्धियां हासिल हुई हैं। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (दलहन) के तहत अरहर, चना, मूंग एवं मसूर फसलों के क्लस्टर प्रदर्शन निर्धारित लक्ष्य के अनुसार पूर्ण किए गए। चना का प्रदर्शन 1950 हेक्टेयर तथा अरहर 110 हेक्टेयर क्षेत्र में सफलतापूर्वक किया गया। वहीं क्रॉपिंग सिस्टम आधारित प्रदर्शन कार्यक्रमों में भी 160 से 215 हेक्टेयर तक लक्ष्य प्राप्त किए गए।

अंतरवर्ती फसल प्रदर्शन के अंतर्गत मूंग एवं मक्का का प्रदर्शन 10 हेक्टेयर क्षेत्र में किया गया। इसके अलावा तिलहन कार्यक्रम में ब्लॉक डिमॉन्स्ट्रेशन अंतर्गत सोयाबीन का प्रदर्शन 1500 हेक्टेयर क्षेत्र में पूर्ण किया गया तथा किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर 59 के लक्ष्य के विरुद्ध 54 प्रशिक्षण संपन्न किए गए। प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (पीडीएमसी) अंतर्गत स्प्रिंकलर एवं ड्रिप सिंचाई प्रणाली के 232 प्रकरण पूर्ण किए गए। वहीं सॉइल हेल्थ एंड फर्टिलिटी योजना के तहत 18,200 मृदा नमूने संग्रहित करने के लक्ष्य के विरुद्ध 14,539 सैंपल एकत्रित किए गए। राज्य एवं केन्द्र सरकार की योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन से किसानों को उन्नत तकनीक, सिंचाई सुविधाएं एवं फसल उत्पादकता बढ़ाने में सीधा लाभ मिल रहा है।

ग्राम वर्धा में 'जल महोत्सव' का भव्य आयोजन, जल संरक्षण का दिया संदेश

विदिशा, (निप्र)। कलेक्टर के मार्गदर्शन में मध्यप्रदेश जल निगम (पीआईयू भोपाल) द्वारा विकासखंड नटेरन के ग्राम वर्धा में 'जल महोत्सव' का भव्य एवं गरिमामय आयोजन किया गया। कार्यक्रम में स्थानीय विधायक श्री सूर्य प्रकाश मीणा मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। आयोजन का मुख्य उद्देश्य जल संरक्षण के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाना तथा समूह जल प्रदाय योजनाओं के सफल संचालन में स्थानीय सहभागिता को प्रोत्साहित करना रहा। विधायक श्री मीणा ने 'सगड़ हिनोतिया माली समूह जल प्रदाय योजना' में उत्कृष्ट कार्य करने वाले जल समिति सदस्यों एवं वाल्व ऑपरेटरों को सम्मानित किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि जल जीवन मिशन की सफलता के लिए जल समितियों की सक्रिय भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिससे हर घर तक स्वच्छ पेयजल की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित की जा सके। इस अवसर पर जल संरक्षण का संदेश देते हुए प्रतीकात्मक रूप से कलश के माध्यम से जल अर्पण कर प्रकृति के प्रति आभार व्यक्त किया गया। अधिकारियों द्वारा ग्रामीणों को जल संरक्षण एवं जल संचयन की विभिन्न तकनीकों के बारे में जानकारी दी गई।

कार्यक्रम के अंत में उपस्थित सभी नागरिकों एवं जनप्रतिनिधियों को जल बचाने और भविष्य के लिए जल संचय करने की सामूहिक शपथ दिलाई गई। कार्यक्रम में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री ओमप्रकाश सनोडिया, एसडीएम शमशाबाद श्री अजय प्रताप, ग्राम वर्धा के सरपंच श्री प्रहलाद सिंह कुशवाह, जल निगम के महाप्रबंधक श्री लवेश राठौर सहित अन्य अधिकारी, जनप्रतिनिधि एवं बड़ी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

आपदा प्रबंधन पर कार्यशाला आयोजित, अधिकारियों को इंसीडेंट रिस्पांस सिस्टम की दी गई विस्तृत जानकारी

नर्मदापुरम, (निप्र)। कलेक्टर कार्यालय के सभा कक्ष में जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के तत्वाधान में आपदा प्रबंधन के अंतर्गत इंसीडेंट रिस्पांस सिस्टम (आईआरएस) विषय पर आधारित कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में जिले के समस्त एसडीएम सहित अन्य संबंधित अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यशाला के दौरान अधिकारियों को आपदा प्रबंधन अधिनियम 2005 तथा इंसीडेंट रिस्पांस सिस्टम के अंतर्गत आने वाले विभिन्न पहलुओं की विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई। इसमें आपदा की स्थिति में प्रभावी प्रबंधन के लिए निर्धारित संरचना, कार्यक्षेत्र तथा इसके अंतर्गत गठित की जाने वाली समितियों और उनके प्रमुख अधिकारियों की भूमिकाओं के बारे में विस्तार से बताया गया। इसके अतिरिक्त तहसील स्तर पर गठित की जाने वाली इंसीडेंट रिस्पांस टीम के संबंध में भी उपस्थित अधिकारियों को विस्तार से अवगत कराया गया। कार्यशाला में आईआरएस के अंतर्गत किए जाने वाले प्रबंधन, समन्वय व्यवस्था तथा पूर्व निर्धारित उद्देश्यों के संबंध में भी चर्चा की गई।

सीहोर जिले में अचल संपत्तियों की बाजार दरों के पुनरीक्षण पर चर्चा

1008 लोकेशनों में वृद्धि के प्रस्ताव, कलेक्टर की अध्यक्षता में जिला मूल्यांकन समिति की बैठक आयोजित

सीहोर, (निप्र)। वर्ष 2026-27 के लिए अचल संपत्तियों के बाजार मूल्य (गाइडलाइन दर) निर्धारण के संबंध में कलेक्टर श्री बालागुरू के. की अध्यक्षता में जिला मूल्यांकन समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में मध्यप्रदेश बाजार मूल्य मार्गदर्शक सिद्धान्तों के अंतर्गत जिले में भूमि एवं संपत्तियों की वर्तमान बाजार स्थिति की समीक्षा करते हुए विभिन्न नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों की दरों में संशोधन के प्रस्तावों पर विचार किया गया। बैठक में बताया गया कि केन्द्रीय मूल्यांकन बोर्ड, मध्यप्रदेश भोपाल द्वारा निर्माण लागत दरों का निर्धारण किया जाता है, जो पूरे प्रदेश में प्रभावी रहती हैं। विगत वर्षों में कई स्थानों पर बाजार मूल्य दरों में अपेक्षित वृद्धि नहीं हुई थी, जबकि अनेक स्थानों पर अधिक मूल्य पर दस्तावेज पंजीयन, नई कॉलोनियों का विकास तथा आसपास की कॉलोनियों की तुलना में दरों में अंतर जैसे कारण सामने आए हैं। इन्हीं आधारों को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2026-27 की गाइडलाइन दरों में संशोधन के प्रस्ताव तैयार किए गए हैं। यह प्रस्ताव जिला पंजीयक एवं संबंधित उप पंजीयक कार्यालय में अवलोकन के लिए उपलब्ध है। इन प्रस्तावित दरों के संबंध में आमजन अपने सुझाव 03 दिवसों में कार्यालयीन समय में जिला पंजीयक एवं संयोजक जिला मूल्यांकन समिति जिला सीहोर के समक्ष प्रस्तुत कर सकते है। उप जिला मूल्यांकन समितियों से प्राप्त प्रस्तावों के अनुसार सीहोर, आष्टा, बुधनी, इछावर और दोराहा क्षेत्रों में विभिन्न नगरीय तथा ग्रामीण लोकेशनों की दरों में वृद्धि का सुझाव दिया गया है। सीहोर उप जिला समिति द्वारा चिन्हित 30 नगरीय लोकेशनों में लगभग 10 से 20 प्रतिशत तथा 428 ग्रामीण लोकेशनों में भी 10 से 20 प्रतिशत वृद्धि के प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। इसी प्रकार आष्टा क्षेत्र में नगरीय 88 लोकेशनों में 20 से 70 प्रतिशत तथा ग्रामीण 94 लोकेशनों में औसतन 40 प्रतिशत वृद्धि का प्रस्ताव है। बुधनी क्षेत्र में कई नगरीय लोकेशनों में लगभग 40 से 50 प्रतिशत तथा ग्रामीण क्षेत्रों में 10 से 35 प्रतिशत तक वृद्धि के सुझाव दिए गए हैं। इछावर उप जिला समिति द्वारा नगरीय 9 लोकेशनों में 30 से 40 प्रतिशत तथा 442 ग्रामीण लोकेशनों में 40 से 50 प्रतिशत तक वृद्धि के प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। वहीं दोराहा क्षेत्र में चिन्हित 30 लोकेशनों में लगभग 10 से 20 प्रतिशत वृद्धि का सुझाव दिया गया है। इसके अलावा कई स्थानों पर युक्तियुक्तकरण एवं विसंगतियों को दूर करने के लिए कुछ लोकेशनों को आपस में विलय (मर्ज) करने के प्रस्ताव भी प्रस्तुत किए गए हैं। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि जिले में प्रचलित कुल 4652 लोकेशनों में से 370 नगरीय तथा 4355 ग्रामीण लोकेशन हैं, जिनमें से कुल 1008 लोकेशनों की दरों में वृद्धि के प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। इन प्रस्तावों का परीक्षण कर अंतिम निर्णय शासन को भेजा जाएगा, जिसके आधार पर आगामी वित्तीय वर्ष के लिए संपत्तियों की नई गाइडलाइन दरें निर्धारित की जाएंगी।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इंदौर से गुड़ी पड़वा (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा) पर इस्कॉन मंदिर, में राज्य स्तरीय जल गंगा संवर्धन अभियान के तृतीय चरण का शुभारंभ किया।

पं. कुंजीलाल दुबे का विधानसभा अध्यक्ष के रूप में कार्यकाल भुलाया नहीं जा सकता : सीएम

मुख्यमंत्री ने तीन बार विधानसभा अध्यक्ष रहे स्व. पं. दुबे की 130वीं जन्म जयंती पर पुष्पांजलि अर्पित कर दी श्रद्धांजलि

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि स्व. पं. कुंजीलाल दुबे तीन बार मध्यप्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष रहे। विधानसभा अध्यक्ष के रूप में उन्होंने हिन्दी भाषा को प्रतिष्ठित स्थान दिलाने में बड़ा योगदान दिया। स्व. पं. दुबे के विधानसभा अध्यक्षीय कार्यकाल की सुदीर्घ सेवाओं और संसदीय परम्पराओं को और भी समृद्ध बनाने में उनके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गुरुवार को स्व. पं. में उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। मुख्यमंत्री ने कहा कि स्व. पं. दुबे की समाजोन्मुखी सेवाओं के लिए वर्ष 1964 में इन्हें पद्मभूषण की उपाधि विभूषित किया गया। विद्या और ज्ञान के क्षेत्र में की गई सेवाओं और उपलब्धियों के लिए स्व. पं. दुबे को 1965 में एलएलडी की उपाधि दी गई, वहीं 1967 में विक्रम विश्वविद्यालय ने इन्हें डी-लिट की उपाधि प्रदान की थी। वे सदैव हमारी स्मृतियों में बने रहेंगे।

कुंजीलाल दुबे की 130वीं जन्म जयंती के अवसर पर मध्यप्रदेश विधानसभा भवन परिसर

म.प्र. विधानसभा के भूतपूर्व अध्यक्ष स्व. पं. कुंजीलाल दुबे का जन्म 19 मार्च 1896 को वर्तमान नरसिंहपुर जिले के ग्राम आमगांव में हुआ था। वकालत के पेशे से एक सुघड़ राजनीतिज्ञ के रूप स्थापित होकर स्व. पं. दुबे प्रथम विधानसभा (1956-57), द्वितीय विधानसभा (1957-62) एवं तृतीय विधानसभा (1962-67) में कुल तीन बार मप्र विधानसभा अध्यक्ष के रूप में सेवारत रहे।

प्रदेश में बदला मौसम- बारिश, ओले से हुई नवरात्रि की शुरुआत

खरगोन में बिजली गिरने से महिला की मौत, 33 जिलों में बारिश-आंधी का अलर्ट

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में मौसम ने अचानक करवट ली है। मैहर में तेज बारिश हुई। बैतूल जिले के मुलताई में ओले गिरे, जबकि खरगोन में आकाशीय बिजली गिरने से एक महिला की मौत हो गई। मौसम विभाग ने कई जिलों में बारिश, ओले और बिजली गिरने का अलर्ट जारी किया है।

खरगोन जिले के झिरन्या क्षेत्र के करानिया गांव में गुरुवार सुबह करीब 10 बजे आकाशीय बिजली गिरने से 55 वर्षीय महिला की मौत हो गई। महिला खेत में गेहूं कटाई के लिए गई थी, तभी हादसा हुआ। मृतका की पहचान उंदरीबाई (पति विश्राम बारेला) के रूप में हुई है। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। खरगोन में गेहूं की कटाई करने गई महिला की आकाशीय बिजली गिरने से मौत हो गई।

मैहर में तेज हवाओं के साथ बारिश- उधर, मैहर जिले के अमरपाटन और आसपास के ग्रामीण इलाकों में गुरुवार दोपहर मौसम अचानक बदल गया। तेज हवाओं के साथ 10 से 15 मिनट तक झमाझम बारिश हुई, जिससे सड़कों पर पानी बहने लगा और बाजार में कुछ समय के लिए अफरातफरी का माहौल बन गया।

लोग बारिश से बचने के लिए दुकानों और छतों के नीचे शरण लेते नजर आए। बारिश के बाद मौसम में ठंडक घुल गई और लोगों को गर्मी से

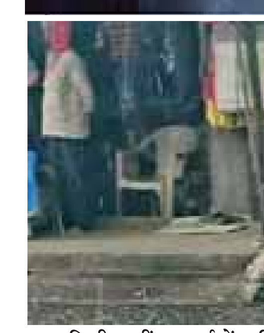

राहत मिली। वहीं मुलताई में बारिश के साथ ओले गिरे, जिससे फसलों को नुकसान की आशंका जताई जा रही है।

3 जिलों में ओले गिरने की चेतावनी- मौसम विभाग ने गुरुवार को भोपाल, इंदौर और ग्वालियर समेत 33 जिलों में आंधी-बारिश का अलर्ट जारी किया है। वहीं सिवनी, मंडला और बालाघाट में ओले गिरने की संभावना जताई गई है। प्रदेश के अन्य हिस्सों में हल्की से तेज बारिश के आसार हैं। मौसम विभाग के अनुसार, पिछले 24 घंटे के दौरान खंडवा और अनूपपुर जिलों में ओले गिरे, जबकि बुरहानपुर में हल्की बारिश दर्ज की गई।

मार्च में पहली बार ओले, किसानों की बढ़ी चिंता- इस सीजन में मार्च महीने में पहली बार ओले गिरने का अनुमान है। खासतौर पर सिवनी, मंडला और बालाघाट में दो दिन तक ओलावृष्टि के आसार हैं। इससे किसानों की चिंता बढ़ गई है, क्योंकि फसलों को नुकसान होने की आशंका है।

अप्रैल-मई में लू चलेगी- मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार, अबकी बार अप्रैल और मई में 15 से 20 दिन तक लू चल सकती है। मार्च के दूसरे सप्ताह में नर्मदापुरम में लगातार 3 दिन तक तीव्र लू वाला मौसम रहा। मौसम विभाग ने बताया कि मार्च के आखिरी सप्ताह से लू का असर दिखाई देने लगेगा।

30-50 किमी घंटा की रफ्तार से चलेंगी हवाएं

मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक, अगले तीन दिन तक 30 से 50 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से तेज हवाएं चल सकती हैं। यह सिस्टम धीरे-धीरे पूरे मध्य प्रदेश को कवर करेगा। 19 और 20 मार्च को इसका असर सबसे ज्यादा रहेगा, जबकि 22 मार्च से मौसम साफ होने लगेगा। बुधवार को मौसम में बदलाव के चलते तापमान में गिरावट आई और कई जिलों में हल्की ठंडक महसूस की गई।

मां बगलामुखी मंदिर नलखेड़ा में वीआईपी सिस्टम समाप्त, गर्भगृह के बाहर से होंगे दर्शन

आगर मालवा (नप्र)। नवरात्र के पहले दिन से मां बगलामुखी मंदिर में वीआईपी-वीवीआईपी सिस्टम खत्म हो गया है। यहां अब सभी को गर्भगृह के बाहर से दर्शन मिलेंगे। किसी भी आमो-खास को गर्भगृह में जाने की अनुमति नहीं होगी। बता दें कि मंदिर प्रबंधन समिति ने इस आशय का आदेश जारी किया था। मंदिर में माता बगलामुखी के दर्शनों के लिए विशेष व्यवस्थाएं की गई हैं। यहां नवरात्र में लाखों श्रद्धालु आते हैं। मंदिर के ठीक पीछे हवन वेदी स्थापित हैं, जहां सामूहिक रूप से हवन संपन्न होते हैं।

आगर-मालवा जिले के नलखेडा स्थित प्राचीन व मां बगलामुखी के सिद्धपीठ के गर्भगृह में नवरात्र के दौरान केवल सेवा करने वाले पुरोहितों को छोड़कर किसी अन्य को प्रवेश नहीं मिलेगा। इन दिनों में आम और खास सभी तरह के दर्शनार्थियों को गर्भगृह के बाहर से ही दर्शन हो रहे हैं। मंदिर प्रबंध समिति सचिव व तहसीलदार प्रियंक श्रीवास्तव द्वारा जारी आदेश में नवरात्रि के दौरान श्रद्धालुओं के गर्भगृह में प्रवेश पर रोक और बाहर से दर्शन का उल्लेख है। दरअसल मां बगलामुखी के दरबार में हर दिन हजारों श्रद्धालु आते हैं। नवरात्रि में यह संख्या कई गुना ज्यादा रहेगी। इसे देखते हुए गर्भगृह में प्रवेश पर रोक लगाई गई है। जिले के नलखेड़ा स्थित मां बगलामुखी मंदिर में गुरुवार से आस्था का सैलाब उमड़ने लगा। चैत्र नवरात्र नौ दिवसीय पर्व प्रारंभ हो गया है। मंदिर पर आकर्षक लाइटिंग और साज-सज्जा की गई है।

नवजात की सांसें चल रही थीं, दे दिया डेथ सर्टिफिकेट

आरोप लगाते हुए पिता ने बनाया वीडियो ; हमीदिया अस्पताल में परिजनों और स्टाफ में विवाद

भोपाल (नप्र)। भोपाल के हमीदिया अस्पताल में एक नवजात को मृत घोषित किए जाने के चार घंटे बाद उसकी सांसें चलने का दावा किया गया है। नवजात के पिता का कहना है कि उन्हें मृत्यु प्रमाण पत्र दे दिया गया था, लेकिन जब शव लेने एनआईसीयू पहुंचे तो बच्ची में हरकत दिखाई दी। उन्होंने इसका वीडियो भी बनाया है।

वहीं डॉक्टरों का कहना है कि वह समय से पहले जन्मा अत्यंत कम वजन का शिशु था, जिसमें प्रारंभिक जांच में हार्टबीट नहीं मिली। विशेषज्ञों के अनुसार ऐसे मामलों में कभी-कभी शरीर में हलचल देखी जा सकती है, लेकिन जीवित रहने की संभावना बेहद कम होती है।

दो सेंटर से रेफर होकर पहुंची थी गर्भवती- हमीदिया अस्पताल की महिला डॉक्टर ने बताया कि रायसेन जिले के बरेली निवासी परवेज अपनी गर्भवती पत्नी को प्रसव पीड़ा होने पर पहले नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र ले गए। वहां से उन्हें रायसेन जिला अस्पताल और बाद में हमीदिया अस्पताल के स्त्री रोग विभाग रेफर किया गया।

महिला की स्थिति गंभीर थी। ऐसे में उसे तत्काल लेबर रूम में भर्ती किया गया। गर्भावस्था करीब 5 से 6 माह की थी, यानी शिशु समय से पहले जन्म लेने वाला था। डिलीवरी के दौरान जन्मा शिशु का वजन सिर्फ 450 ग्राम था।

डॉक्टरों का कहना है कि जन्म के समय शिशु के शरीर में कोई प्रतिक्रिया नहीं थी। स्टेथोस्कोप से जांच करने पर हार्टबीट भी रिकॉर्ड नहीं हुई। ऐसी स्थिति में प्रोटोकॉल के तहत शिशु को एनआईसीयू भेजा गया।

मृत्यु प्रमाण पत्र हाथ में, लेकिन चल रही थीं सांसें

डिलीवरी के कुछ समय बाद परिजनों को बताया गया कि बच्चा मृत पैदा हुआ है। रात करीब 12 बजे परिजनों को मृत्यु प्रमाण पत्र भी दे दिया गया, जिसमें मृत्यु का समय शाम करीब 8.30 बजे दर्ज था। इस दौरान परिवार कागजी प्रक्रिया और महिला की देखभाल में व्यस्त रहा।

पिता परवेज के अनुसार, जब पिता परवेज रात में एनआईसीयू पहुंचे। बच्ची को देखा तो उसकी सांसें चल रही थीं। उन्होंने इसका वीडियो भी बनाया, जिसमें बच्ची का पेट हिलता हुआ नजर आ रहा है। इसके बाद उन्होंने मौके पर मौजूद डॉक्टरों से सवाल किए।

सीनियर डॉक्टरों ने ड्यूटी डॉक्टर से मांगा स्पष्टीकरण

परिजनों का आरोप है कि जब उन्होंने इस बारे में डॉक्टरों से जवाब मांगा तो स्पष्ट जानकारी नहीं दी गई। साथ ही वीडियो बनाने से रोकने की कोशिश और धक्का-मुक्की तक की गई। वहीं अस्पताल की ओर से इस तरह के व्यवहार को लेकर आधिकारिक बयान सामने नहीं आया है। हालांकि, विभाग के वरिष्ठ डॉक्टरों ने ड्यूटी डॉक्टरों से पूरे मामले में स्पष्टीकरण मांगा है।

सुप्रीम कोर्ट ने पलटा हाईकोर्ट का फैसला

विजयपुर विधानसभा सीट कांग्रेस के मुकेश मल्होत्रा बने रहेंगे विधायक

श्योपुर (नप्र)। एमपी हाईकोर्ट ने विजयपुर विधानसभा सीट से कांग्रेस विधायक मुकेश मल्होत्रा की विधायकी रद्द कर दी थी। विधायक पर आरोप था कि उन्होंने चुनावी हलफनामे में केस की जानकारी छुपाई है। हाईकोर्ट ने उनकी विधायकी रद्द करते हुए 15 दिनों का समय अपील करने के लिए दिया था। इसके बाद मल्होत्रा ने सुप्रीम कोर्ट का रूख किया था।

सुप्रीम कोर्ट ने कांग्रेस नेता मुकेश मल्होत्रा केस की सुनवाई के दौरान हाईकोर्ट का फैसला पलट दिया है। साथ ही विजयपुर विधानसभा सीट से मुकेश मल्होत्रा की विधायकी को बरकरार रखा है। हाईकोर्ट ने विधायकी रद्द कर रामनिवास रावत को विधायक घोषित कर दिया था। यह रावत के लिए बड़ा झटका है।

दरअसल, सुप्रीम कोर्ट में कांग्रेस विधायक के पक्ष में अधिवक्ता और कांग्रेस के राज्यसभा सांसद विवेक तन्खा ने दलीलें दी हैं। इसके बाद मुकेश मल्होत्रा को राहत मिली है। केस की सुनवाई जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस केवी विश्ननाथन ने की है।

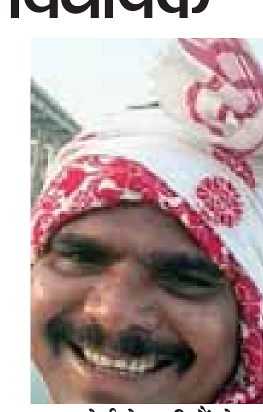

कोर्ट ने रखी हैं ये शर्तें- सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि मामले में फैसला आने तक वह विधायक बने रहेंगे। हालांकि राज्यसभा चुनाव की वोटिंग में वह हिस्सा नहीं ले सकेंगे। अंतिम निर्णय तक उन्हें विधायक के रूप में मिलने वाले वेतन और भत्ते नहीं दिए जाएंगे।

रामनिवास रावत ने मनाई थी खुशी- वहीं, हाईकोर्ट के फैसले के बाद विजयपुर के पूर्व विधायक रामनिवास रावत ने खुशी मनाई थी। उनके समर्थकों ने मिठाइयां बांटी थी। क्योंकि हाईकोर्ट ने उन्हें विधायक घोषित कर दिया था। मगर यह खुशियां ज्यादा दिन नहीं रही है। अब सभी को कोर्ट के अंतिम फैसले का इंतजार है।

प्रेम संबंध के लिए मां की ली जान, बेटे ने प्रेमिका को फोन कर कहा- मम्मी को मार दिया मैंने

शहडोल (नप्र)। एमपी के शहडोल में रिश्तों को झकझोर देने वाली घटना सामने आई है। एक बेटे ने अपनी मां की गला घोंटकर हत्या कर दी है। इसके पीछे की वजह प्रेम संबंधों का विरोध है। मां की हत्या कर बेटे ने अपनी प्रेमिका को पूरी कहानी सुनाई है। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। इसके बाद मामले की जांच जारी है।

सोते वक्त कर दी मां की हत्या

दरअसल, पूरी घटना शहडोल जिले के अमलाई थाना क्षेत्र के वार्ड नंबर 13, राजेंद्र सिंह कॉलोनी की है। संजय कोरी ने अपनी मां कुसुम कोरी की पिछले दिनों उस वक्त हत्या कर दी। जब वह गहरी नींद में थी। संजय कोरी की मां लगातार बेटे के अवैध संबंधों और अवैध कामों का विरोध करती थी। इसे लेकर आए दिन घर में विवाद होता था। घटना वाली रात भी इसी बात को लेकर कहासुनी हो गई। गुस्से में आकर बेटे ने अपनी मां का गला दबा दिया।

प्रेमिका को फोन कर दी जानकारी

मामले का सबसे खौफनाक पहलू तब सामने आया, जब संजय ने हत्या के बाद अपनी प्रेमिका को फोन किया। बातचीत का यह ऑडियो अब सोशल मीडिया में वायरल है। वायरल ऑडियो में आरोपी संजय ने अपनी प्रेमिका को फोन कर बताया कि उसने पहले करीब 20 मिनट तक मां का गला दबाया, जिससे वह बेहोश हो गई। उसे लगा कि मां मर चुकी है, लेकिन जब उसने पानी के छींटे मारे तो मां होश में आ गई और चिल्लाने लगी। इसके बाद आरोपी ने दोबारा गला दबाकर उसे मौत के घाट उतार दिया।

प्रेमिका दे रही थी सलाह

फोन पर हुई बातचीत में प्रेमिका आरोपी को शव को रेलवे ट्रैक पर रखकर इसे हादसा दिखाने की सलाह देती रही। हालांकि आरोपी ने यह कहते हुए मना कर दिया कि वह यह काम अकेले नहीं कर सकता, बातचीत में प्रेमिका बार-बार खुद को बचाने और अपना नाम न लेने की हिदायत देती रही, यहां तक कि इस वारदात को शराब के नशे में किया गया कृत्य बताने की बात भी सामने आई।

पुलिस ने आरोपी को किया गिरफ्तार

पुलिस ने संजय कोरी को तब गिरफ्तार किया जब वह एक ढाबे में बैठकर लाश को ठिकाने की बात कर रहा था। वहां मौजूद लोगों ने पुलिस को सूचना दी पुलिस ने मौके पर पहुंचकर संजय कोरी को अभिरक्षा में लिया और उससे पूछताछ की तो उसने अपनी मां की हत्या करना स्वीकार किया।

घर पहुंचकर जांच की

अमलाई पुलिस ने संजय कोरी के घर पहुच कर जांच शुरू की। पुलिस ने वायरल ऑडियो को भी जांच में शामिल कर लिया है। इस पूरे मामले में पुलिस अधिकारी राजेंद्र मोहन दुबे ने कहा कि मां की हत्या करने वाले युवक को गिरफ्तार कर लिया गया है। संजय को टोकती थी वह, इसलिए हत्या कर दी।

मंडला में खुद लिया चैलेंज, रेड-डिफेंस में दिखाया दम ; विरोधी खिलाड़ियों ने घेरा

साड़ी में कबड्डी खेलने उतरीं मंत्री उईके

मंडला (नप्र)। मध्यप्रदेश के मंडला में गुरुवार को आयोजित महिला कबड्डी प्रतियोगिता में उस वक्त अलग ही माहौल बन गया, जब कैबिनेट मंत्री संपतिया उइके खुद मैदान में उतर आईं। उद्घाटन के बाद जैसे ही मैच शुरू हुआ, मंत्री खिलाड़ियों के बीच पहुंचकर सीधे खेल में शामिल हो गईं।

केसरिया साड़ी पहने मंत्री उइके कबड्डी-कबड्डी कहते हुए विरोधी पाले में रेड लेने गईं। हालांकि ज्यादा देर टिक नहीं सकीं और सुरक्षित अपने पाले में लौट आईं। इसके बाद विरोधी टीम की खिलाड़ी ने उनकी तरफ रेड की, जिस पर मंत्री ने घेरा बनाकर पकड़ने की कोशिश की, लेकिन खिलाड़ी फुर्ती से बच निकली।

मंत्री ने दो बार रेड की, डिफेंस में हाथ आजमाया- प्रदर्शन मैच के दौरान मंत्री ने दो बार रेड की और डिफेंस में भी हाथ आजमाया। एक मौके पर वे आउट होते-होते बचीं, जिससे मैदान में मौजूद खिलाड़ियों और दर्शकों के बीच उत्साह बढ़ गया।

दोषी अधिकारी को बचाने के लिए हुआ 'खेल'

एमपी हाईकोर्ट ने कहा- पीएस को कानून का ज्ञान नहीं

ग्वालियर (नप्र)। एमपी हाईकोर्ट की ग्वालियर बेंच ने सामान्य प्रशासन विभाग के प्रमुख सचिव पर कड़क टिप्पणी की है। कोर्ट ने कहा कि पीएस जैसे पद पर बैठे अफसर संविधान का ज्ञान नहीं है। हाईकोर्ट ने यह टिप्पणी चार्जशीट को नोटिस में बदलने को लेकर की है। साथ ही नाराजगी भी व्यक्त की है।

सामान्य प्रशासन विभाग के प्रमुख सचिव पर नाराजगी- दरअसल, हाईकोर्ट की ग्वालियर बेंच सामान्य प्रशासन विभाग के प्रमुख सचिव एम. सेलवेंद्रम की कार्यशैली से नाराज है। हाईकोर्ट ने कहा है कि दोषी अधिकारी अशोक चौहान के खिलाफ पूर्ण विभागयी जांच की चार्जशीट को आरोप पत्र में बदल दिया है। साथ ही एक वेतन वृद्धि रोकने का मामूली दंड दिया और मामले को ही खत्म कर दिया है।

अधिकारी को सजा से बचा लिया- सामान्य प्रशासन विभाग के प्रमुख सचिव के कदम से दोषी अधिकारी बड़ी सजा से बच गए। कोर्ट ने कहा कि बिना पूर्ण जांच के कठोर दंड संभव नहीं होता। वहीं, सुनवाई के दौरान कोर्ट ने कहा कि यह सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों की अवहेलना है। कोर्ट के कड़े रुख के बाद पीएस ने गलती स्वीकार की है। साथ ही कहा कि सुप्रीम कोर्ट के फैसलों और अनुच्छेद 141 का अध्ययन नहीं किया था। इसके साथ ही कोर्ट एक सप्ताह के अंदर शपथ पत्र देने को कहा है। इसमें सरकारी संपत्ति संरक्षण के उपाय बताने के निर्देश दिए हैं। साथ ही कोर्ट ने अपनी टिप्पणी में यह भी कहा कि प्रमुख सचिव या तो कानून से पूरी तरह से अनभिज्ञ हैं या बेईमान इरादे से अदालत के साथ धोखाधड़ी करने की कोशिश कर रहे हैं।